# प्रभात

अंदर के पन्नों में ........

★ केन्द्र-राज्य सरकारों के हमले पर प्रेस विज्ञप्ति.... 3
★ ऐतिहासिक लालगढ़ संघर्ष को ऊंचा उठाओ! .... 5
★ चुनाव बहिष्कार के अवसर पर प्रतिरोध .... 12
★ भाकपा( माओवादी ) व आरपीएफ की घोषणा ...17
★ एकल विद्यालय-साम्प्रदायीकरण की साजिश.... 18
★ केसेकोड़ी का झूठ .... 21
★ मानपुर हमले - ऑपरेशन विकास .... 22
★ शहीदों को श्रद्धांजली .... 29

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ( माओवादी ) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र
वर्ष-22 अंक-2/3 अप्रैल-सितंबर 2009 सहयोग राशि-10 रुपए

## 10 फरवरी 2010 को महान भूमकाल की 100वीं वर्षगांठ क्रांतिकारी जोशोखरोश के साथ मनाओ!

## दण्डकारण्य में जन राजसत्ता को मजबूत करो! फैला दो!!

बस्तर का इतिहास पूरा जुझारू, लड़ाकू व वीरतापूर्ण इतिहास रहा है। पराये शासकों के आक्रमणों, अन्याय व अत्याचार के विरोध में यहां कई बार लड़ाइयां हुईं। पारंपरागत हथियारों से हुई इन लड़ाइयों में दुश्मनों को कई बार मुंह की खानी पड़ी। पूरे बस्तर संभाग की इस धरती पर सन् 1774 से लेकर 1910 तक यानी 136 सालों में 10 बड़े विद्रोह हुए थे। इन विद्रोहों में सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण विद्रोह था 1910 का महान भूमकाल विद्रोह। बस्तर की क्रांतिकारी आदिवासी जनता द्वारा अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ संगठित होकर लड़ा गया यह सबसे शानदार संग्राम था। यह बस्तर की आदिवासी जनता के दिलों में आज भी बसा हुआ संग्राम है। लेकिन शोषक-शासक वर्गों और उनके पालतू इतिहासकारों ने सदा ही आदिवासी जनता के इतिहास की उपेक्षा की है। उसे उभर कर नहीं आने दिया गया। बहुत मुश्किलों से कुछ अंश पाठ्य पुस्तकों में आया भी तो भाजपा के हिंदू फासीवादी संघ गिरोह के बुद्धिजीवियों ने या तो उसे तोड़-मरोड़ कर पेश किया या फिर पूरी तरह से दबा दिया।

आइए, बस्तर के लड़ाकू इतिहास को देश की समूची जनता तक पहुंचाएं। यह हमारा फर्ज़ है। 1910 के महान भूमकाल विद्रोह के 2010 में सौ साल पूरे हो रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा यहां की जनता पर लादे गए नये वन कानूनों, आबकारी नीति, जबरन शिक्षा और कमरतोड़ करों (टैक्सों) के खिलाफ समस्त लोगों ने पूरे बस्तर में विद्रोह का आगाज किया था, वहीं भूमकाल विद्रोह था।

इस विद्रोह की तैयारियां 1910 के जनवरी महीने में गांव ताडोकी में हुई थीं। शहीद गुण्डादुर, आयतु महरा आदि मांझी-मुखियाओं ने उसमें भाग लिया था। इस गोपनीय सभा में राजा परिवार में अतंरकलह के चलते लाल कालेंद्र सिंह, रानी सुबरन कुंवर शामिल हुए और विद्रोहियों का साथ दिया। इस सभा में हर परगना के लिए पदाधिकारियों की भी नियुक्ति की गई थी। संभाग में मौजूद 84 परगनों में से 48 परगनों ने सक्रिय रूप से इस विद्रोह में हिस्सा लिया था। युवाओं को संगठित करने के लिए गोटुलों को सभा-केंद्र के रूप में अच्छी तरह उपयोग किया गया था।

1 फरवरी को लोहंडीगुड़ा के गढ़िया गांव में दुरवा नेता गुंडादूर और कुछ प्रमुख नेताओं ने एक बैठक की और जगदलपुर इलाके से भूमकाल विद्रोहियों ने हमला शुरू किया। इसके बाद यह विद्रोह नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, भूपालपटनम, कोंटा आदि क्षेत्रों में तेजी से फैल गया।

- छोटे डोंगर में पठान साहुकार की हत्या।
- 2 फरवरी को पूसपाल बाजार पर हमला।
- 4 फरवरी को कुकनार बाजार पर हमला।
- 5 फरवरी को करंजी, मारेंगा, तोकापाल पर हमला।
- 7 फरवरी को गीदम मुख्यालय के रूप में माड़िया राज्य का ऐलान किया गया। इस सभा के बारे में दुश्मनों को पता

**पीएलजीए की 9वीं वर्षगांठ के अवसर पर 2-8 दिसम्बर को 'स्थापना सत्पाह' मनाओ!**

**जन संघर्षों व जनयुद्ध को तेज कर सरकारी हमले को हराने का संकल्प लो!!**

चलने के कारण मुख्य नेता ही सभा में शामिल हुए थे। गुंडादूर, डींडा, इडमा पेद्दा, रोड्डा पेद्दा, कोरिया मांझी, धनीराम, सख्वा, बोडिया, महादेव, हुन्नम, कुराती सोमा आदि नेता शामिल हुए थे।

– 8 फरवरी को कुटरू में हमला।

– 9 फरवरी को दंतेवाड़ा में हमला।

– कुआकोंडा में 3 पुलिस वालों की हत्या की गई।

– माड़ में कमांडर डूरी के 18 सैनिकों के दल पर हमला कर एक हवलदार की हत्या की गई।

शोषक शासक वर्गों की नीतियों को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ाई के केंद्र के रूप में छोटे डोंगुर और कुतुल परगना की भूमिका भी रही है। कुतुल में अग्रेज पुलिस का थाना हुआ करता था। उस चौकी को 1910 के दौरान विद्रोहियों ने जला दिया था, जिसमें कई पुलिस वाले मारे गए थे।

– मद्देड़, भोपालपट्नम, जेगुरगोंडा व उसूर पर हमले किये गए थे।

– 22 फरवरी को 15 विद्रोही नेताओं को गिरफ्तार किया गया था।

– 26 फरवरी को 54 लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

– इस तरह जगदलपुर को छोड़कर पूरा बस्तर भूमकाल विद्रोहियों के कब्जे में आ गया था।

इस विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजी साम्राज्यवादियों ने सेंट्रल प्राविन्स से, मद्रास, पंजाब आदि जगहों से 520 सशस्त्र सिपाहियों को भेजा था। केसकाल घाटी में मुकुंद माचामारा के नेतृत्व में इन सिपाहियों के साथ भूमकालियों ने जबर्दस्त लड़ाई लड़ी।

छोटे डोंगर, माड़ क्षेत्र में कुतुल, जगदलपुर के आसपास खडकघाट, नेतानार, आलनार, जगदलपुर में इन सिपाहियों के साथ पारंपरिक हथियारों से जबरदस्त युद्ध हुए। परंतु आधुनिक हथियारों के आगे पारंपरिक हथियारों से लैस विद्रोही टिक नहीं पाए और सैकड़ों जनता वहां पर शहीद हुई।

29 मार्च को अंग्रेजों ने गद्दार सोनू माझी की सूचना पर आलनार में हमला किया, जहां पर भूमकाल विद्रोहियों की सेना आराम कर रही थी। अचानक हुए इस हमले में कई लोग मारे गए और घायल हुए। इस घटना के बाद गुंडादूर बच निकले और फिर कभी भी अंग्रेजों के हाथ नहीं आए। और उनके बारे में कोई जानकारी इस घटना के बाद नहीं मिलती। इस तरह शहीद गुंडादुर इतिहास में वीर पडियोर (योद्धा) के रूप में दर्ज हो चिरस्मरणीय हो गए।

इतिहास में गवाह के तौर पर केसकाल घाटी, ताडोकी किला, छोटे डोंगर, नेलनार का बरगद पेड़, कुतुल में कोसमरका (आम का पेड़, जहां पुलिस थाना को जलाया गया था।) जगदलपुर के गोलबाजार में इमली का पेड़ (जहां डेबरीदूर, माडिया मांझी की हत्या कर लाशों को लटकाया गया था।) – ये सब निशानियां आने वाली पीढ़ियों की नस-नस में उबाल लाती रहेंगी।

इस भूमकाल लड़ाई से पहले 1774 में हल्बा विद्रोह हुआ था, उसका नेतृत्व अजमेर सिंह करते हुए शहीद हुए थे। और 1825 में परालकोट विद्रोह हुआ था जिसमें गेंदसिंह और रमोतिन बाई शहीद हुए थे।

इस भूमकाल व्रिदोह के समय 78 लोगों को गिरफ्तार कर रायपुर जेल भेजा गया था। इनमें से पांच लोगों को आजीवन कारावास की, 45 लोगों को एक-एक साल की सजा दी गई। जेल में ही 27 लोग शहीद हो गये। और राजा लाल कालेंद्र सिंह, रानी सुबरन कुंवर भी जेल में शहीद हुए। इस तरह अन्य तमाम विद्रोहों की तरह भूमकाल संघर्ष भी अंततः पराजित हुआ। इस विद्रोह की खास बात यह थी कि जनता ने अंग्रेजी शासन को समाप्त कर खुद की शासन व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की। 'माड़िया राज' के नाम से स्थापित जनता की भ्रूणरूपी राजसत्ता बहुत कम दिनों तक ही, यानी 40 करीब दिनों तक ही टिक पाई। अंग्रेजों की आधुनिक सेनाओं के सामने परम्परागत हथियारों से लैस आदिवासियों की फौज टिक नहीं सकी। अंग्रेजी लुटेरों की राजसत्ता के खिलाफ लड़ने का वैज्ञानिक सिद्धांत का अभाव और दक्ष नेतृत्व की कमी आदि तमाम कारणों से भूमकाल की पराजय हुई।

देश में 1947 में सत्ता का हस्तांतरण हुआ। अंग्रेजी शोषक शासकों की जगह कांग्रेस की अगुवाई में काले शोषक शासकों ने ली। कांग्रेस शासन ने भी अंग्रेजों की नीतियां ही लागू कीं। 1966 में राजा प्रवीरचंद्र भंजदेव के समर्थन में जमा हुई जनता पर गोलियां चलाईं। 1966 में राजमहल गोलीकांड में राजा प्रवीण चंद्र भंजदेव और अन्य लोगों को मार डाला गया। 1970 में किरंदूल में गोलीकांड हुआ।

यानी आज साम्राज्यवादियों के शोषण व अत्याचारों ने और भी भयानक रूप ले लिया। भूमकाल के संघर्षकारियों ने जिस मकसद से मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया था वह मकसद आज भी अधूरा ही है। आज सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यवादी ही नहीं, कई साम्राज्यवादी देश हमारे देश को लूट रहे हैं। खासकर भूमकाल की भूमि बस्तर आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपतियों के शोषण और लूट के लिए चारागाह बनाया जा रहा है। इसके लिए हजारों की संख्या में आदिवासियों को विस्थापित किया जा रहा है। इसका विरोध करने पर लोगों का दमन किया जा रहा है। सलवा जुडूम चलाकर आदिवासियों की निर्मम हत्याएं की जा रही हैं। महिलाओं के साथ बलात्कार किया जा रहा है। और इसके खिलाफ बस्तरिया जनता का विद्रोह भी इसी स्तर पर जारी है। सलवा जुडूम के खिलाफ जीवन-मरण का संघर्ष कर उसे पीछे धकेलने वाली बस्तरिया जनता के खिलाफ अब केन्द्र सरकार की अगुवाई में एक बड़ा हमला शुरू हुआ है। ऐसे में भूमकाल की 100वीं वर्षगांठ मनाना और उस विद्रोह की विरासत को ऊंचा उठाए रखने का संकल्प लेना ज्यादा प्रासंगिक होगा। ✶

## प्रेस विज्ञप्ति

25 अक्टूबर 2009

# बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े दलाल पूंजीपति घरानों के हित में केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा जारी आदिवासी हनन और तबाही को रोको!

# क्रांतिकारी आंदोलन पर सरकारी सैन्य हमला बंद करो!!

## क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ छेड़े गए बर्बरतम फासीवादी सरकारी हमले के खिलाफ

## 15-21 नवम्बर तक 'दमन विरोधी प्रचार सप्ताह' सफल बनाओ!!!

पिछले कुछ हफ्तों से माओवादियों के खिलाफ बहुत बड़े हमले की खबरें लगातार सुर्खियों में हैं। एक साथ 7 राज्यों छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखण्ड, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल और उत्तरप्रदेश में लागू इस सर्वाधिक खूनी हमले के लिए एक लाख से ज्यादा अर्द्ध सैनिक बलों को इकट्ठा करने की बात की जा रही है। केन्द्र सरकार की अगुवाई में एक संयुक्त कमान बनाई गई जिसका मुख्यालय रायपुर में खोला गया। इस हमले के निशाने पर मुख्य रूप से दण्डकारण्य का जन संघर्ष है जिसके दमन के लिए लुटेरे शासक वर्ग पूरा जोर लगा रहे हैं। इस क्षेत्र में पहले से मौजूद सीआरपीएफ, मिजो बल व एसएसबी की 18 अर्द्ध-सैनिक बटलियनों, हजारों राज्य पुलिस बलों जिसमें सीएएफ और एसटीएफ शामिल हैं, के अतिरिक्त अब बीएसएफ (सीमा सुरक्षा बल) और आईटीबीपी (इंडो-टिबेटन बॉर्डर पुलिस) की कई अन्य बटालियनें लाई जा रही हैं। नक्सल उन्मूलन के लिए विशेष रूप से तैयार कोबरा कमाण्डो बटालियनों को भी मोर्चे पर लगाया गया जिसे इस हमले में मुख्य शक्ति के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है। हालांकि अभी सेना की तैनाती से इनकार किया जा रहा है, लेकिन सेना के आला अधिकारी इस हमले में सक्रिय भूमिका निभाने जा रहे हैं। हवाई बमबारी व गोलीबारी के लिए सेना के हेलिकॉप्टरों के इस्तेमाल पर सहमति हो गई, भले ही इसे तोड़-मरेड़कर क्यों न पेश किया जा रहा हो।

अपने इस वहशी हमले को जायज ठहराने और जनता की स्वीकृति हासिल करने की मंशा से लुटेरे शासक वर्गों ने माओवादियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार मुहिम छेड़ दी है। देश की सार्वभौमिकता को अमेरिकी साम्राज्यवादियों के चरणों पर गिरवी रख देश के सारे संसाधनों की खुली लूट हिमायत करने वाली सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम की कुख्यात तिकड़ी देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए माओवादी आंदोलन को सबसे बड़े खतरे के रूप में प्रचारित कर रही है। दैनिक अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन देकर और इलेक्ट्रानिक मीडिया के जरिए फासीवादी गोबेल्स की इन भारतीय औलादों ने एक जहरीला प्रचार अभियान छेड़ रखा है। माओवादियों को आतंकवादी निरूपित करने की नाकाम कोशिश करते हुए ये लाइसेंस्ड हत्यारे सफेद झूठ गढ़ रहे हैं कि हमें विदेशों से हथियार मिलते हैं और हम आम लोगों की हत्याएं करते हैं। छत्तीसगढ़ का भाजपाई मुख्यमंत्री रमनसिंह और गृहमंत्री ननकीराम यहां की अनमोल प्राकृतिक सम्पदाओं को बहुराष्ट्रीय व बड़े पूंजीपतियों की कम्पनियों के हवाले करने के लिए माओवादी आंदोलन का जड़ से सफाया करने पर उतारू हैं।

पिछले कुछ महीनों से केन्द्र सरकार की शह पर रमन सरकार एक के बाद एक बड़े-बड़े आदिवासी नरसंहारों को अंजाम देते हुए बस्तर के हरे-भरे जंगलों में खून की नदियां बहा रही है। सिंगारम, कोकावाड़ा, सिंगनमडूगू, एटेपाड़, ईसुलनार आदि जगहों पर दर्जनों निर्दोष आदिवासियों की हत्या कर मुठभेड़ की कहानियां गढ़ दीं। 18 सितम्बर को 'आपरेशन रेड हंट' के नाम से दंतेवाड़ा जिले के सिंगनमडगू, पालाचेलमा और आसपास के गांवों में कम से कम 19 ग्रामीणों की हत्या कर दी और उन्हें नक्सली बताया। गौरतलब है कि हमारी पीएलजीए के हाथों कोबरा बलों को मिली करारी शिकस्त के बाद, जिसमें तीन अधिकारियों समेत कुल 6 कोबरा मारे गए और कई अन्य घायल हो गए थे, बौखलाहट में उसके आसपास के गांवों में मौत का नंगा नाच किया। उसके बाद 25 सितम्बर को बीजपुर जिले के गंगलूर क्षेत्र के ईसुलनार समेत आसपास के कई गांवों में सैकड़ों कोबरा, सीआरपीएफ, एसपीओ, कोया कमाण्डो और अन्य बलों ने आतंक का तांडव मचाते हुए दर्जन से ज्यादा आम आदिवासियों की लाशें बिछा दीं। ये कुछ नमूने हैं माओवादियों के खिलाफ जारी सबसे बड़ी कार्रवाई के। यानी देश के लुटेरे शासक आदिवासियों की अंधाधुंध हत्याओं का वहशी सिलसिला चलाकर आंदोलन को खत्म करने का सपना देख रहे हैं।

पिछले 29 सालों से जारी दण्डकारण्य का संघर्ष आज पूरे देश के सामने एक नमूना बनकर खड़ा है। यहां पर पनपकर मजबूत हो रही जनता की नई राजसत्ता ने जनता के असली विकास के कई कदम उठाए हैं। कृषि विकास, जन स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में जनता ने खुद ही पहलकदमी लेकर कई उपलब्धियां हासिल कीं। सालों से जारी लुटेरी सरकारों की लापरवाही से तंग आ चुकी जनता ने स्वैच्छिक श्रमदान और सहकारिता के जरिए विकास के एक असली और जनोन्मुखी नमूने की नींव डाली है। हालांकि यह अब भी शुरूआती अवस्था में है, लेकिन इससे साम्राज्यवाद-विश्व बैंक द्वारा

निर्देशित 'विकास' के भद्दे नमूने को जबर्दस्त चुनौती मिल रही है। इस संघर्ष को कुचलने के लिए 2005 में केन्द्र-राज्य सरकारों ने बस्तर क्षेत्र में 'सलवा जुडूम' के नाम से एक बर्बर फासीवादी दमन अभियान शुरू किया था। इसके तहत पिछले 4 सालों में एक हजार से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की; सैकड़ों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया; 600 से ज्यादा गांवों को जलाकर राख कर दिया; और हजारों आदिवासियों को तथाकथित राहत शिविरों में घसीटा दिया। लेकिन इस भारी तबाही और आतंक के तांडव के बीचोंबीच भी बस्तर की बहादुर जनता ने प्रतिरोध का झण्डा ऊंचा उठाए रखा। बस्तर की धरती को टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल जैसे बड़े पूंजीपति घरानों की लूट का चारागाह नहीं बनने देने के संकल्प को जिंदा रखा। बड़े पैमाने पर आदिवासियों का विस्थापन कर यहां की सम्पदाओं का दोहन करने के लुटेरे शासक वर्गों के नापाक इरादों पर पानी फेर दिया।

दूसरी तरफ, खासकर देश के अत्यधिक आदिवासी इलाकों में बढ़ रहे माओवादी आंदोलन से लुटेरे शासक वर्गों और उनके आका साम्राज्यवादियों की लूट की साजिशें लगातार विफल होती जा रही हैं। कलिंगनगर, नंदीग्राम, सिंगूर, जगतसिंगपुर और इन सबसे बढ़कर लालगढ़ में जनता ने विद्रोह का झण्डा गाड़कर लुटेरी सरकारों द्वारा थोपी जा रही झूठे विकास की योजनाओं और दमनकारी नीतियों को जबर्दस्त टक्कर दी। इस पूरे घटनाचक्र में माओवाद देश की शोषित और उत्पीड़ित जनता के सामने एक सही विकल्प के रूप में तेजी से उभरने लगा है। देश की अत्यधिक मेहनतकश जनता समझने लगी है कि यही एक ताकत है जो उनकी मुक्ति के संग्राम को अंजाम तक पहुंचा सकती है। इसीलिए मनमोहन-चिदम्बरम-रमनसिंह आदि दलाल नेता अमेरिकी साम्राज्यवादियों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में हमारी पार्टी का जड़ से उन्मूलन करने की नीयत से बड़े पैमाने पर आदिवासियों के कत्लेआम मचाकर, आदिवासी बस्तियों को कब्रगाह में तब्दील कर बची-खुची आबादी को सड़कों के किनारे 'राहत' शिविरों में घसीट लाने की योजना पर काम कर रहे हैं।

हमारी स्पेशल जोनल कमेटी देश के तमाम जनवाद बुद्धिजीवियों और इंसाफ पसंद मेहनतकशों से अपील करती है कि वे सरकार के इस बर्बर व आतंकी दमन अभियान को और आदिवासियों के नरसंहारों को फौरन रोकने की मांग करें। सरकार द्वारा फैलाए जा रहे झूठों - 'आतंकवादी', 'हत्यारे', 'देश की आंतरिक सुरक्षा को खतरा' - के भ्रम में न फंसें और यह समझें कि नक्सलवादी या माओवादी इस देश के ही निवासी हैं और इस देश की 90 प्रतिशत मेहनतकश लोगों की मुक्ति या वास्तविक आजादी के लिए लड़ रहे देशभक्त हैं। इस देश को माओवाद से नहीं, बल्कि यहां की सरकारों द्वारा थोपी जा रही साम्राज्यवाद-निर्देशित आर्थिक-राजनीतिक नीतियों से खतरा है। और उन लोगों से देश के भविष्य को बहुत बड़ा खतरा है जिन्होंने जनता की गाढ़ी कमाई को अवैध तरीकों से हड़पकर, काले धन में बदलकर स्विस बैंकों में छुपा लिया और देश की 77 प्रतिशत आबादी को 20 रुपए से भी कम आमदनी पर जीने को मजबूर किया। माओवादी आतंकवादी नहीं हैं... मजदूरों, किसानों, कर्मचारियों, छात्र-नौजवानों, दलितों-आदिवासियों और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं पर आए दिन लाठी-गोली का प्रयोग करने वाले और उनकी बहु-बेटियों का अपमान करने वाले सरकारी गुण्डे, नेता, पुलिस व सेना ही असली आतंकवादी है। वे ही लाइसेंस्ड हत्यारे हैं।

केन्द्र-राज्य सरकारों के इस भारी हमले के खिलाफ और हमारी पार्टी के विरुद्ध जारी सरकारी दुष्प्रचार अभियान का विरोध करते हुए हमारी स्पेशल जोनल कमेटी ने आगामी 15 से 21 नवम्बर तक 'दमन विरोधी प्रचार सप्ताह' चलाने का निर्णय लिया है। इसके तहत पार्टी और क्रांतिकारी जन संगठनों के कार्यकर्ता गांव-गांव में विभिन्न तरीकों में बड़े पैमाने पर प्रचार करेंगे और सरकारी हमले के असली उद्देश्यों का जनता के बीच खुलासा करेंगे। हम अन्य तमाम जनवादी संगठनों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का भी इस मौके पर आह्वान करते हैं कि वे सच्चाइयों को जनता के सामने रखें। और जनता के जायज संघर्षों के समर्थन में आगे आएं।

इस मौके पर हम समस्त जनता को विशेष रूप से सूचित करना चाहते हैं कि इस प्रचार सप्ताह में हम 'बंद' का आह्वान नहीं कर रहे हैं। इसलिए सभी लोग अपने-अपने व्यावसायिक कामकाज निर्बाध रूप से जारी रख सकेंगे। इस बाबत् उड़ाई जाने वाली अफवाहों पर विश्वास न करें।

**(कोसा)**
**सचिव**
**दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**
**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)**

## एस्सार पाइपलाइन पर हमला!

*22 मई 2009 को दंतेवाड़ा में दलाल पूंजीपति एस्सार की पाइपलाइन को विस्फोट कर पीएलजीए ने क्षतिग्रस्त कर दिया। दलाल पूंजीपति एस्सार ने यह पाइपलाइन लौह चूर्ण को सस्ते में बहा ले जाने के लिए बिछाई थी। यह कार्रवाई पालनार से 7 किलोमीटर दूर जंगल में की गई। इस पाइपलाइन से हर दिन एस्सार कम्पनी 23 टन लौहचूर्ण पानी में बहाकर ले जाती है। शबरी नदी से 60 लाख लीटर पानी को रोजाना एस्सार द्वारा लूटा जा रहा है। यह पाइपलाइन बस्तर की जनता के हितों के खिलाफ है जिसका विरोध जनता और हमारी पार्टी शुरू से ही करते आ रही हैं। खबरों के मुताबिक फिलहाल पाइपलाइन से पानी का (साथ में लौह चूर्ण का भी) बहाव बंद है क्योंकि एओबी में भी एक जगह पर इस पाइपलाइन को ध्वस्त किया गया। बताया जाता है कि पाइपलाइन के बंद हो जाने से एस्सार को रोजाना 4 करोड़ रुपए का नुकसान है।* ★

# ऐतिहासिक लालगढ़ आंदोलन को ऊंचा उठाए रखो!
# साम्राज्यवादी 'विकास' नमूने को खारिज कर
# जन राजसत्ता के एक मात्र लक्ष्य से कई और 'लालगढ़' पैदा करो!!

भारत की नई जनवादी क्रांति के इतिहास में एक और लाल पन्ना जुड़ गया है - 'लालगढ़'। जिस पश्चिम बंगाल राज्य ने भारतीय क्रांति को सही दिशा-निर्देशन देने वाले नक्सलबाड़ी को जन्म दिया, उसी ने अब लालगढ़ को जन्म दिया। नक्सलबाड़ी की विरासत को संजोए रखने वाली बंगाल की जनता ने अपने बहादुराना संघर्ष से हाल ही में सिंगूर से टाटा को भगा दिया। उसी प्रकार नंदीग्राम में इंडोनेशिया की एक लुटेरी कम्पनी द्वारा प्रस्तावित रासायनिक हब के निर्माण के खिलाफ वीरतापूर्वक लड़ाई जारी रखी जिससे वहां पर सेज का निर्माण रुक गया। इस परम्परा को जारी रखते हुए लालगढ़ का संघर्ष और भी उच्च स्तर पर उभरा जिससे नक्सलबाड़ी की यादें ताजा हुईं।

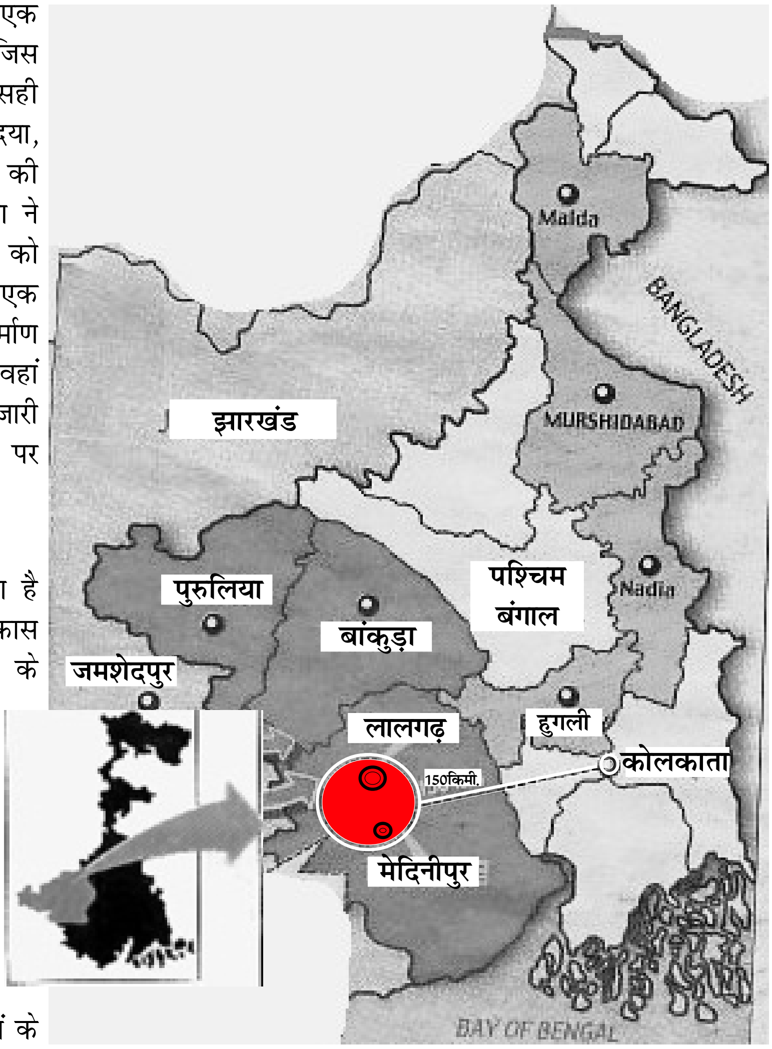

## लालगढ़ संघर्ष की पृष्ठभूमि

लालगढ़ पश्चिमी मेदिनीपुर जिले का इलाका है जहां मुख्यत: संथाली आदिवासी निवासरत हैं। विकास से वंचित यह इलाका सीपीएम के तीन दशकों के कुशासन की तस्वीर पेश करता है। भूमि सुधारों पर अमल करने का ढिंढ़ोरा पीटने वाली सीपीएम का दावा कितना खोखला है, यह भी लालगढ़ की स्थिति रेखांकित करती है। देश में सरकारों की घोर उपेक्षा का शिकार आदिवासी इलाकों में ही लालगढ़ की भी गिनती होती है। अभी तक इस इलाके के विकास के बारे में कभी नहीं सोचने वाली 'वामपंथी' सरकार ने अब 'विकास' का बीड़ा उठाया। लेकिन सरकार द्वारा प्रस्तावित इस 'विकास' का लक्ष्य यहां के बहुसंख्यक आदिवासियों का जीवन सुधारना नहीं है, बल्कि इनके जीवन की कीमत पर लुटेरे वर्गों के हितों को पूरा करना है। इसी दृष्टि से सरकार ने इसी जिले के सालबोनी क्षेत्र में, जो लालगढ़ से थोड़ी ही दूर पर है, इस्पात कारखाना बनाने हेतु जिंदल कम्पनी को मंजूरी दी। इसके लिए सरकार ने जिंदल को साढ़े चार हजार एकड़ जमीन भी दे दी। इस जमीन का कुछ हिस्सा वन विभाग का है। अत्यधिक हिस्सा उन जमीनों का है जिन्हें सरकार ने भूमि सुधार कार्यक्रम के नाम पर कथित रूप से आदिवासियों को देने के लिए संग्रहित किया था। ये जमीनें देने के अलावा सरकार ने और 500 एकड़ जमीनें जनता से जबरन अधिग्रहित कीं।

पहले तो इस्पात कारखाने के निर्माण के नाम से ये जमीनें ली गईं। बाद में राज्य सरकार की अनुमति से इसे सेज (विशेष आर्थिक क्षेत्र) का दर्जा मिल गया। सेज का दर्जा देते समय सरकार ने किसी नियम-कायदे का पालन नहीं किया। पर्यावरण का जरा भी ख्याल नहीं रखा। इसके लिए आदिवासियों को जमीनों से बेदखल किया। दरअसल आदिवासियों की जमीनों और जंगली जमीनों को खरीदना-बेचना गैर-कानूनी है। लेकिन सरकार ने ऐसे किसी भी मामले में कानूनों का पालन नहीं किया, बल्कि हर कदम पर उनका उल्लंघन ही किया।

जनता को इस तरह विस्थापित करने से जो विरोध प्रकट हो रहा था, उसे ठण्डा करने के लिए सरकार और जिंदल कम्पनी ने कई वादे किए। एक वादा यह है कि 2020 तक 37 हजार प्रत्यक्ष नौकरियां और इससे दुगुनी संख्या में परोक्ष नौकरियां दे देंगे। जमीन गंवाने वाले हर परिवार से एक व्यक्ति को प्रशिक्षण देकर रोजगार देने और उचित मुआवजा देने की घोषणा की। उससे यहां पर विकास की गंगा बहाने का सब्जबाग दिखाया।

पश्चिम बंगाल ही नहीं, देश भर में आज सरकारें विकास के जिस नमूने के बारे में ढिंढ़ोरा पीट रही हैं और जिसे जबरन थोपने की कोशिश कर रही हैं, वह काफी खतरनाक है। लोगों को उन्की जमीनों, जंगलों और संसाधनों से बेदखल कर उनके हाथों में थोड़े पैसे रखने या छोटी-मोटी नौकरियां देने से उनकी कोई भलाई नहीं होने वाली है, उलटे शोषक वर्गों को ही फायदा होगा- यह सच्चाई अब तक देश में विस्थापित हुए लाखों लोगों की जिंदगियों से साफ तौर पर उजागर हो रही है। जन आंदोलनों का स्पष्ट कहना है कि लोगों को उनकी जमीनों, जंगलों और सम्पदाओं पर मालिकाना हक देने पर ही वास्तविक विकास सम्भव हो सकेगा। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में खेती-किसानी पर आधारित औद्योगिक विकास से ही देश की प्रगति हो सकती है। कृषि क्षेत्र पर चोट करने वाला और कृषि भूमि को हड़पने वाला औद्योगिक विकास देश को विनाश की ओर ही ले जाएगा। इसलिए यह दावा एक सफेद झूठ है कि पांच हजार एकड़ जमीन को हड़पने वाली और हजारों लोगों को विस्थापित करने वाली जिंदल कम्पनी से इस क्षेत्र की जनता का विकास हो जाएगा।

अगर यह मान भी लें कि जिंदल कम्पनी जो नौकरियां देगी और मुआवजे की जो राशि देगी उससे सचमुच जनता का विकास हो जाएगा, तब भी विश्व भर में सभी क्षेत्रों को झकझोर रहे आर्थिक संकट के इस दौर में हजारों एकड़ जमीनें डकारने के बाद जिंदल कम्पनी क्या पूर्ण स्तर पर उत्पादन को शुरू कर सकेगी? बीच में अटक नहीं जाएगी? इस संकट में जहां दुनिया भर में रोजगार का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है, ऐसी खराब स्थिति में रोजगार के नए अवसरों पर उम्मीद रखकर हाथ में मौजूद रोजगार (जमीनों) को छोड़ देने में कितनी बुद्धिमानी है? आदि सवाल जरूर उठेंगे।

मुआवजे का मामला भी काफी छलपूर्ण है। जिंदल कम्पनी कह रही है कि वह प्रति एकड़ तीन लाख रुपए देगी। तीन लाख की राशि में सिर्फ डेढ़ लाख ही नगद में देगी और बाकी डेढ़ लाख रुपए का भुगतान शेयरों के रूप में करेगी। उन शेयरों को बेचने की सुविधा तभी होगी जब कम्पनी का वाणिज्य उत्पादन शुरू होगा। मौजूदा आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि में यह कम्पनी आखिर पूर्ण स्तर पर उत्पादन शुरू करेगी या सिर्फ कच्चे लोहे का प्रसंस्करण करने वाला प्लांट तक सीमित होकर रह जाएगी, कहना मुश्किल है। कम्पनी अगर उत्पादन को शुरू नहीं करती है तो उन शेयरों का कोई काम नहीं होगा। अगर उत्पादन शुरू करती भी है, फिर भी शेयरों से तभी फायदा होगा जब कम्पनी मुनाफा कमाए। लेकिन संकट के चलते जब इस्पात का बाजार चौपट हो चुका हो, यह कैसे कह सकते हैं कि जिंदल कम्पनी मुनाफा कमा लेगी?

यहां पर सेज के निर्माण से पर्यावरण पर बहुत ही बुरा असर पड़ने वाला है। बांकुरा, पुरुलिया और मेदिनीपुर जिलों से बहने वाली सुवर्णरेखा नदी प्रदूषित हो जाएगी जिससे उसके तटवर्ती जंगली इलाके भी प्रदूषण का शिकार बन जाएंगे। हर लिहाज से इससे जनता को नुकसान ही है। इसीलिए जनता यहां पर सेज का पुरजोर विरोध कर रही है। अपनी जमीनों के जबरिया अधिग्रहण का विरोध कर रही है।

जनता को इतना नुकसान पहुंचाने वाले और जनता का विरोध झेल रहे सेज से साम्राज्यवादी देशों को फायदा है। यहां पर उत्पादित इस्पात निर्यात के लिए ही तय किया गया है। कहीं भी सेजों में उत्पादित चीजें मुख्यतः निर्यात के लिए ही होती हैं।

जनता के रोजगार के अवसरों पर चोट करते हुए और उन्हें विस्थापित करते हुए सिर्फ साम्राज्यवादी देशों के मुनाफे के लिए सेज का निर्माण करने में यहीं नहीं, देश के हर हिस्से में शासक वर्गों की दलाल भूमिका साफ तौर पर उजागर होती है। सभी शासक पार्टियां इस मामले में एकमत हैं। तथाकथित वामपंथी पार्टियां उन जगहों पर जहां वे सत्ता में नहीं हैं, सेज की नीतियों और साम्राज्यवाद का विरोध करने का दिखावा कर रही हैं। लेकिन जहां वे सत्ता में हैं पूरी आक्रामकता के साथ इन नीतियों पर अमल करते हुए अपने असली चरित्र का प्रदर्शन कर रही हैं। सिंगूर और नंदीग्राम में बंगाल की 'वामपंथी' बुद्धदेब सरकार पाशविक हिंसा का प्रयोग करने के बावजूद भी साम्राज्यवादियों के हितों की रक्षा करने में विफल हो गई। इसीलिए उसने लालगढ़ में कैसे भी हो, अपने इस एजेण्डे को आगे बढ़ाने की ठान लेकर जनता के तीखे विरोध की कोई परवाह न करते हुए 2 नवम्बर 2008 को सेज का शिलान्यास किया। इस मौके पर आयोजित आमसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री बुद्धदेब और पश्चिम बंगाल के उद्योग मंत्री निरुपमसेन ने जिंदल की खूब तारीफ की कि वह अपने फायदे के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक हित के लिए ही यह सेज स्थापित कर रही है।

लूटखसोट को सामाजिक सेवा के रूप में चित्रित करने जैसे घोर पतन का शिकार 'वामपंथी' सरकार पर और उसके मुखिया बुद्धदेब पर जनता का गुस्सा उबल पड़ा। इस एक मामले में ही नहीं, पिछले तीन दशकों से जारी उसके शासन में विकास से दूर रखे जाने को लेकर जनता के मन में तीव्र असंतोष घर कर चुका था। इस इलाके में मजबूत उपस्थिति रखने वाली माओवादी पार्टी ने इस असंतोष को राजसत्ता छीनने के लक्ष्य की तरफ मोड़ दिया। जनता के दिलोदिमाग में सालों से उबल रहे गुस्से को भौतिक रूप देने के लिए पीएलजीए ने बुद्धदेब के काफिले पर सालबोनी-मेदिनीपुर सड़क पर कलायचंडी के पास बारूदी सुरंग से विस्फोट किया। उसमें बाल-बाल बचने वाले बुद्धदेब ने उसकी आड़ में सेज के खिलाफ आंदोलन कर रही लालगढ़ की जनता पर मनमाने हमलों का आदेश दिया।

## लालगढ़ पर टूटा सामाजिक फासीवादी सरकार का कहर

सरकार के आदेश पर पुलिस ने लालगढ़ इलाके के 35 गांवों पर मनमाने हमले कर आतंक का तांडव मचाया। 5 नवम्बर 2008 को लालगढ़ इलाके के छोटापेलिया गांव पर हमला कर जनता की बेदम पिटाई की। अपने पति को जबरन ले जा रही

पुलिस को रोकने की कोशिश करने पर चितामुनि मुरमू नामक महिला के चेहरे पर पुलिस ने बंदूक के कुंदे से पीटा। इससे उनकी बायीं आंख बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई और आंखों की रोशनी हमेशा के लिए चली गई। लक्ष्मी प्रोतिहार नामक गर्भवती महिला को भी जब वह अपने पति को जबरन ले जाने का विरोध कर रही थी, पुलिस ने जानवर की तरह घसीटते हुए ले जाकर सड़क पर बेइंतहा पीटा। स्कूली बच्चों की पिटाई की। ऐसे कई और अत्याचार किए। कई लोगों को जबरन ले जाकर थाने में रखा। कई लोगों पर बुद्धदेब पर पीएलजीए द्वारा की गई कार्रवाई में लिप्त होने का मामला दर्ज किया। लालगढ़ पुलिस थाना प्रभारी सुदीप सिन्हा राय और पश्चिमी मेदिनीपुर जिला एसपी के नेतृत्व में ये सारे हमले हुए थे। दरअसल बुद्धदेब के काफिले पर पीएलजीए ने जिस जगह पर हमला किया था, वह लालगढ़ इलाके से काफी दूर है। सरकार सोची-समझी साजिश के तहत ही इतनी दूर की जनता को उक्त हमले के लिए जिम्मेदार ठहरा रही है। लालगढ़ की जनता का सचेतन होना और सरकारी नीतियों के खिलाफ संघर्ष करना ही असली कारण है कि सरकार ने इस इलाके को निशाने पर ले लिया। इस क्षेत्र पर बड़े पैमाने पर हमला करने के लिए बुद्धदेब के काफिले पर की गई कार्रवाई को बहाना बनाया गया।

जनता पर अंधाधुंध तरीके से किए गए इन हमलों में राज्य पुलिस बलों के साथ-साथ सीपीएम द्वारा पाली-पोसी गई 'हरमद वाहिनी' ने भी भाग लिया। पश्चिम बंगाल में अमल राजनीतिक हिंसा में शुरू से ही हरमद वाहिनी की भागीदारी रही। जनता पर जोर-जबर्दस्ती, अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग करते हुए हत्याएं करना, महिलाओं के साथ बलात्कार आदि जुल्मों के लिए हरमद वाहिनी कुख्यात है। नंदीग्राम संघर्ष का दमन करने के लिए हरमद वाहिनी ने जिस प्रकार अनगिनत अत्याचार किए थे, उसी प्रकार लालगढ़ संघर्ष के दमन के लिए भी उसने जुल्म ढाए।

## उमड़ा जन संघर्ष का सैलाब

सरकार द्वारा किए गए हमले के खिलाफ लालगढ़ की जनता ने जबर्दस्त विद्रोह किया। 7 नवम्बर 2008 को हजारों की संख्या में निकल पड़े महिलाओं, पुरुषों, बच्चों और बूढ़ों ने खुद को परम्परागत हथियारों से लैस कर तमाम सड़कों को खोद डाला। सड़कों को पेड़ काटकर जाम कर दिया। टेलिफोन और बिजली के तारों को काट दिया। उस तरह उन्होंने मेदिनीपुर और बांकुरा से बाहरी दुनिया के संपर्क को काट दिया। यह प्रतिरोध नंदीग्राम की तर्ज पर ही शुरू हुआ। 6 नवम्बर को परम्परागत हथियारों से लैस 12 हजार लोगों ने लालगढ़ पुलिस थाने का घेराव किया। पुलिस थाने के परिसर में मौजूद कई वाहनों को ध्वस्त किया। जनता ने मेगाफोन से मांग की कि पुलिस यह बताए कि उन्होंने आदिवासियों का खून क्यों बहाया, वरना माहौल बेकाबू हो जाएगा। जनता का गुस्सा इस कदर था कि महिला-पुरुष व बच्चे-बूढ़े सभी ने जोर शोर से नारे लगाए कि आदिवासियों के खून का बदला पुलिस अधिकारियों के खून से ही लेना ही चाहिए। संथाल आदिवासियों के विभिन्न संगठनों और 'भारत जकत माझी मडोआ जुरान गावोंठा' ने इस संघर्ष का नेतृत्व किया।

## पुलिस अत्याचार विरोध कमेटी का उदय

लालगढ़ की जनता ने अपने आंदोलन को संगठनात्मक स्वरूप देने के लिए 8 नवम्बर को 'पीपुल्स कमेटी एगेंस्ट पोलिस एट्रॉसिटीस' (पीसीएपीए - पुलिस अत्याचार विरोध कमेटी) का गठन किया। जनता ने माना कि भारत जकत माझी मडोआ जैसे परम्परागत आदिवासी संगठन वर्तमान संघर्ष की जरूरतें पूरी नहीं कर सकते। इसीलिए एक नया संगठन बना लिया जाए ताकि संघर्ष को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया जा सके। ज्यों-ज्यों आंदोलन का विस्तार होता गया इस कमेटी में 200 गांव शामिल हो गए। यह एक बहुत बड़े आदिवासी विद्रोह के रूप में सामने आया। कई सीपीएम के समर्थक और निचले स्तर के कार्यकर्ता भी इस विद्रोह में शामिल हो गए। पीसीएपीए के गठन के तुरंत बाद 13 मांगें तैयार की गईं। जनता पर मनमाने हमलों के लिए पश्चिमी मेदिनीपुर का एसपी अपने कान पकड़कर सार्वजनिक माफी मांग ले; 5 नवम्बर को छोटापेलिया गांव पर हमला करने वाले पुलिस वाले जमीन पर नाक रगड़ते हुए दलीलपुर चौक से छोटापेलिया गांव तक सड़क पर रेंगें; पुलिस हमले बंद करे; पुलिस कैम्पों को वापस ले; रात के समय पुलिस की गश्त बंद करे; सरकारी कार्यालयों में पुलिस कैम्प न करे; हमलों का शिकार हुए लोगों को मुआवजा दे; नष्ट हुई सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति दे - यह है उन मांगों का सारांश। पुलिस व राजकीय हिंसा के खिलाफ रखी गई इन मांगों में 25 जनवरी को कुछ अन्य मांगें जोड़ी गईं। नई मांगें जनता की जीविका, स्वायत्तता, रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए नया नमूना लागू करना, सरकारी नमूने का विरोध, संथाली भाषा व संस्कृति का विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि आदि से सम्बन्धित हैं। नवम्बर 2008 से लेकर जून 2009 में अर्द्ध-सैनिक बलों के प्रवेश तक जारी इस आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व पीसीएपीए ने किया। लगभग 8 महीनों तक काफी प्रेरणादायक तरीके से चले इस संघर्ष को चार चरणों में विभाजित कर सकते हैं। नवम्बर

2008 से पहला चरण। चुनाव की घोषणा से दूसरा चरण। जून 2009 से तीसरा चरण और सरकार द्वारा अर्द्ध-सैनिक बलों की तैनाती चौथा चरण।

इन 8 महीनों के अंदर संघर्ष के कई स्वरूप सामने आए। उनमें से एक है पुलिस वालों का सामाजिक बहिष्कार। अपने किए जुल्मों के लिए माफी मांगने से इनकार करने पर जंगलखण्ड इलाके में पुलिस वालों का इस तरह सामाजिक बहिष्कार किया गया। पीसीएपीए के आह्वान पर दुकानदारों, चप्पल सीलने वालों और नाइयों सभी ने पुलिस वालों को सेवाएं देना बंद किया। आखिर में पानी की आपूर्ति भी बंद कर दी गई। पुलिस को सामान बेचने पर एक दुकानदार को जनता ने उठ-बैठ करवाया। इस तरह सामाजिक बहिष्कार का शिकार हुए पुलिस वाले थानों में लगभग बंदी बनकर रह गए। सड़कों पर तख़्तियां टांग दी गईं कि पुलिस या सीपीएम के गुण्डे (हरमद वाहिनी) गांवों में प्रवेश न करें। इस पूरी अवधि में पुलिस वाले या सीपीएम के गुण्डे गांवों में कदम तक नहीं रख सके।

चुनावों की घोषणा के साथ शुरू हुए संघर्ष के दूसरे चरण में पीसीएपीए ने फैसला लिया कि चुनावों के आयोजन के नाम से पुलिस या केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों को अपने इलाकों में प्रवेश नहीं करने दिया जाए। उसने घोषणा की कि चुनाव प्रचार के लिए कोई भी आ सकता है, उन्हें कुछ नहीं किया जाएगा, लेकिन वे अपने साथ पुलिस वालों को न लाएं। उसने यह भी कहा कि चुनावों के आयोजन के लिए जनता सहयोग देगी, सशस्त्र बलों की कोई जरूरत नहीं है। पीसीएपीए ने स्पष्ट किया कि वह चुनावों का बहिष्कार नहीं करेगी, सीपीएम को हराना उसका नारा रहेगा। फिर भी सरकार ने बलों को भेजने का ही निर्णय लिया। 21 मार्च 2009 को इस इलाके में आईआरबी बलों को रवाना किया ताकि यह परखा जा सके कि आंदोलन कितना मजबूत है। जनता और पीएलजीए ने मिलकर इन बलों को लालगढ़ के पेलिया चौक में घेर कर रोक दिया। उनके हथियार छीनकर उनकी नाकेबंदी कर दी। उन सशस्त्र बलों को महिलाओं ने बड़ी संख्या में घेरा। आईआरबी बलों को बचाने के लिए आए पुलिस बलों को भी रोक दिया। उन्हें तभी छोड़ दिया जब आईआरबी के सहायक कमाण्डेण्ट ने लिखित रूप से यह स्वीकार किया कि 5 नवम्बर को छोटापेलिया गांव पर हमला कर आदिवसियों, खासकर महिलाओं को यातनाएं देना गलत था और खासजंगल में 2 फरवरी को पीसीएपीए के दो कार्यकर्ताओं की गोली मारकर हत्या करना गलत था। पीसीएपीए ने यह चेतावनी दी कि अगर सरकार चुनावों के आयोजन के लिए पुलिस बल भेजती है तो पीसीएपीए चुनाव बहिष्कार का आह्वान देगी। इसके बावजूद भी सरकार ने अड़ियल तरीके से सशस्त्र बल भेजने का ही निश्चय किया। इन कोशिशों को रोकने के लिए पीसीएपीए ने लालगढ़-बड़ापेलिया और रामगढ़ के प्रवेश द्वारों में दो नाके (चेक पोस्ट) खोल दिए। इस तरह जनता द्वारा चेक पोस्ट खोला जाना जन आंदोलनों के इतिहास में नया अनुभव था। जनता में मौजूद राजसत्ता पाने की चेतना की अभिव्यक्ति थी यह। आखिरकार चुनाव आयोग ने मतदान केन्द्रों को इन इलाकों के दायरे से बाहर हटाने पर सहमति व्यक्त की।

तीसरा चरण जून में शुआ। 5 जून 2009 को महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर कमेटी (केवो - कमिटी ऑन वयोलेन्स एगेंस्ट विमेन) और पीसीएपीए के महिला विभाग ने मिलकर परम्परागत हथियारों से एक रैली की योजना बनाई। लेकिन सरकार ने इसकी अनुमति नहीं दी। इस रैली के बारे में प्रचार करने झारखण्ड गई कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया। कई महिलाओं को पुलिस ने प्रताड़ित किया। चकूलिया पुलिस थाने में एक महिला के साथ बलात्कार किया। उसी समय सीपीएम के गुण्डों ने अपने खोए हुए इलाकों पर दोबारा कब्जा जमाने के लिए जी-तोड़ कोशिश की। पीसीएपीए के कई सदस्यों पर गोलीबारी की। इन सभी के खिलाफ आंदोलन और ज्यादा तेज हुआ। कई और इलाकों में उसका विस्तार हुआ।

## "आदिवासियों की उपेक्षा का नतीजा है लालगढ़!"

**- महाश्वेता देवी**

*....पश्चिम मेदिनीपुर के लालगढ़ में आज हम जो कुछ देख सुन रहे हैं, वह अचानक एक दिन में नही हुआ है। लालगढ़ और इसी तरह के दूसरे कई अन्य अंचल अरसे से उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं। आदिवासियों व गरीबों की जरूरतों को समझा नहीं गया, सत्ता में बैठे नवाबों ने मान लिया कि उन्हें सुविधाएं न देने से कोई फर्क नहीं पड़ता। लालगढ़ में आज जो कुछ हो रहा है, वह बहुत पहले भी हो सकता था। यह तो आदिवासियों, गरीबों व दलितों का धैर्य है कि एक अरसे तक वे अपने रोष को दबाए रखे। पर अब उनका गुस्सा फूट पड़ा है। आखिर कोई कब तक शासन के सहानुभूतिशील होने का इंतजार करे।*

*लालगढ़ के मसले को गरीबी, पिछड़ेपन और सत्ता की उपेक्षा के नतीजे के रूप में देखा जाना चाहिए। इन इलाकों में रहने वाले लोगों के एक बड़े वर्ग के लिए न तो सडक है, न स्कूल है, न बिजली है, न आवासीय सुविधाएं हैं और न ही कामकाज के अवसर। यहां तक कि लोगों को पीने के लिए शुद्ध पेयजल भी नहीं मिलता। दूसरी ओर इन्हीं इलाकों में वे लोग, जो सत्ता की खुशामद कर रहे हैं, जिन्होंने शासनतंत्र में अपनी पैठ बना ली है, जो माकपा की जी-हुजूरी कर रहे हैं, वे मस्ती में हैं। तभी तो महज 1500 रुपये हर महीने पाने वाले किसी माकपा समर्थक के पास बंगला हो सकता है, गाड़ी-वाड़ी की कमी नहीं होती है। ये बातें क्या आदिवासियों व गरीबों को चुभेंगी नहीं? और फिर लालगढ़ में जो हो रहा है, उससे अलग किसी दूसरे नतीजे की हमें अपेक्षा क्यों करनी चाहिए?....*

लालगढ़ समेत 11 किलोमीटर के दायरे में मौजूद 49 गांव पीसीएपीए के तहत आ गए। सीपीएम का गढ़ समझे जाने वाले धरमपुर स्थित सीपीएम के दफ्तर पर भी पीसीएपीए का कब्जा हो गया। इस दौरान कुछ इलाकों में सीपीएम के गुण्डों और गुरिल्लों के बीच पांच दिनों तक गोलीबारी चली। इस गोलीबारी में सीपीएम के 14 गुण्डे मारे गए। धीरे-धीरे धरमपुर का इलाका पूरा पीसीएपीए के हाथ में आ गया। सीपीएम का जोनल सचिव अनुज पाण्डे जान हथेली पर लेकर गांव छोड़कर भाग गया। कई पुलिस कैम्पों, सीपीएम के दफ्तरों और नेताओं के घरों को या तो ढहा दिया गया या फिर जला दिया गया। जालिम अनुज पाण्डे के विलासितापूर्ण भवन को जलाने की कार्रवाई की तुलना आदिवासी महिलाओं ने दशहरा पर्व से की। इस मौके पर पाण्डे के हाथों मिले अपमानों की यादें उनके मन में ताजा हो गईं। यहां पर सीपीएम के दफ्तर ही सरकारी मशीनरी की तरह काम करते थे। किस पुलिस थाने के दायरे में किसकी गिरफ्तारी हो, किस अदालत को किसे जमानत देनी है और किसे नहीं देनी है आदि बातों का फैसला सीपीएम के दफ्तर में होता है। इसीलिए दमन की निशानी बने पार्टी दफ्तरों को जनता ने गुस्से के साथ ढहा दिया। जनता के विद्रोह की आंच से घबराकर सीपीएम के नेता और पुलिस वाले इस इलाके से भाग गए। कई पुलिस कैम्पों को सरकार ने यहां से हटा दिया। कुछ कैम्पों और थानों की नाकेबंदी कर दी गई।

## विकास का नया नमूना

इस तरह संघर्ष को लगातार आगे बढ़ाते हुए ही दूसरी ओर पीसीएपीए ने जनता की बुनियादी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कुछ विकास कार्यक्रम शुरू किए। विकास का यह नमूना ऐसा नमूना नहीं है जिसे पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा या यूं कहें कि 1947 के बाद से देश भर में सरकारों द्वारा लागू किया जा रहा है। यह उनके 'विकास' के नमूने के ठीक विपरीत है। 'विकास' के उनके नमूने से टक्कर लेने वाला नमूना है। आत्मनिर्भरता, सम्पदाओं का समान बंटवारा और दबे-कुचले लोगों की भलाई के प्रति प्रतिबद्धता इस नमूने के मूल मंत्र हैं। विभिन्न साम्राज्यवादियों और लुटेरे वर्गों के नियंत्रण को चुनौती देने वाला नमूना। विकास का यह क्रांतिकारी नमूना दण्डकारण्य और बिहार-झारखण्ड जैसे इलाकों में जहां क्रांतिकारी आंदोलन मजबूत है, पहले से शुरू होकर लुटेरे वर्गों के 'विकास' के नमूने के लिए जबर्दस्त चुनौती पेश कर रहा है। लालगढ़ इलाके में भी इसी प्रकार का विकास का क्रांतिकारी नमूना शुरू हो गया। पेयजल, सिंचाई, सड़क, स्वास्थ्य केन्द्र आदि सुविधाएं जनता खुद तैयार कर रही है। इन कार्यक्रमों के जरिए आज इस इलाके के करीब ढाई लाख लोग जो विकास अनुभव कर रहे हैं उसे उन्होंने 'वामपंथियों' के पिछले तीन दशकों के शासन में कभी नहीं देखा। इस तरह लालगढ़ इलाका जनता के अपने शासन के तहत एक आधार इलाका नजर आने लगा था।

## संघर्ष का आधा हिस्सा महिलाओं का

लालगढ़ संघर्ष में महिलाएं बेहद सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। उनके ऊपर जारी दोहरा शोषण उन्हें संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ने पर बाध्य कर रहा है। कहीं पर भी आंदोलनों का दमन करने के लिए सरकार सुनियोजित तरीके से महिलाओं पर हिंसा लागू करती है। इसी सिलसिले में सीपीएम पार्टी और पुलिस के हमलों में अक्सर महिलाओं को ही शिकार बनाया जा रहा है। महिलाओं ने और ज्यादा प्रतिरोध के जरिए ही इसका मुकाबला करने का निश्चय किया। उत्पीड़ित वर्ग से होने के नाते उन पर हो रहे शोषण-दमन के अलावा पितृसत्ता से भी वे पीड़ित हैं। इस इलाके के पुरुषों में शराबखोरी ज्यादा है। यह महिलाओं पर हिंसा को और बढ़ती है। इसलिए ये महिलाएं सामाजिक बदलाव के लिए संघर्ष करते हुए ही राजकीय हिंसा और घरेलू हिंसा आदि पितृसत्तात्मक हिंसा के खिलाफ भी लड़ रही हैं। 8 मार्च 2009 को पीसीएपीए की शाखा के रूप में महिला कमेटी का गठन किया गया। पीसीएपीए की हर ग्राम कमेटी में आधी संख्या महिलाओं की जरूर होती है। इसकी केन्द्रीय कमेटी में कुल 35 लोग हैं जिनमें महिलाओं की संख्या 12 है। इस तरह कमेटियों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए महिलाएं संघर्ष में भी सक्रिय भाग ले रही हैं। छाटराजेरा गांव में माओवादियों के होने की सूचना पर पुलिस ने वहां धावा बोला था। वहां पर एक बच्चे को पुलिस ने बुरी तरह पीटा था। इससे गांव के पूरे लोगों ने एकजुट होकर पुलिस बलों को घेर लिया। इसमें महिलाएं आगे रहीं। इस प्रतिरोध के आगे पुलिस को सिर झुकाना ही पड़ा। इस तरह की कई घटनाएं हैं जिसमें महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई हो।

## फासीवादी दमन

इस प्रकार सामाजिक फासीवादी सरकार और केन्द्र सरकार के अलावा साम्राज्यवादियों के लिए भी परेशानी का सबब बन रहे इस संघर्ष को कुचलने के लिए शासक वर्गों ने तीखे दमन का प्रयोग किया। राज्य सरकार की मांग पर तुरंत ही प्रतिक्रिया करते हुए केन्द्र सरकार ने 18

जून को बीएसएफ की 5 कम्पनियों और सीआरपीएफ की 8 कम्पनियों को रवाना किया। बाद में बलों को और भी बढ़ाया। कोबरा और ग्रेहाउण्ड्स बलों को भी उतारा। इन बलों के अलावा राज्य पुलिस और सीपीएम के गुण्डे तो हैं ही। सलवा जुडूम की तर्ज पर कुछ गिरोह तैयार कर उन्हें इस्तेमाल किया गया। बलों की इतनी व्यापक तैनाती को वैधता हासिल करने के लिए सरकार ने बड़े पैमाने पर प्रचार किया कि यहां माओवादी और जनता बड़े पैमाने पर सशस्त्र विद्रोह कर रहे हैं तथा माओवादी पार्टी ने इसे अपना आधार इलाका घोषित किया है। जनता ने विद्रोह जरूर किया पर उनके हाथों में परम्परागत हथियार ही थे। कई लोगों ने निहत्थे ही प्रतिरोध किया। इस तरह परम्परागत हथियारों से लड़ रही जनता के खिलाफ अत्याधुनिक हथियारों से लैस हजारों अर्द्ध-सैनिक बलों को भेजना सरकार की पाशविक दमन नीति का सबूत है। इतने बड़े पैमाने पर हुए सशस्त्र बलों के हमलों से न डरते हुए जनता ने बहादुरी से प्रतिरोध किया ताकि अपनी धरती पर सशस्त्र बलों को कदम रखने से रोका जा सके। लेकिन आंसू गैस के गोले बरसाकर और अंधाधुंध लाठीचार्ज कर, जनता को तितर-बितर कर और गिरफ्तार कर शिविरों में कैद करते हुए धीरे-धीरे सशस्त्र बल आगे बढ़े। 20 जून को हुई पुलिस की गोलीबारी में तीन लोग मारे गए। इस तरह एक-एक कर सभी इलाकों पर बलों ने कब्जा किया। जब तक ये बल लालगढ़ नहीं पहुंचे तब तक लालगढ़ थाने के पुलिस बलों ने खुद को अंदर कैद कर ताला लगा लिया था। अतिरिक्त बलों के आने के बाद ही वे ताले खोलकर बाहर आ गए, इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि जनता का विद्रोह किस स्तर का रहा। फासीवादी सशस्त्र बलों के प्रयोग के अलावा सरकार ने कुछ संस्थाओं का भी गठन किया ताकि संघर्ष को गुमराह किया जा सके।

एक तरफ पाशविक दमनचक्र चलाते हुए ही बुद्धदेब ने साजिश भरे अंदाज में घोषणा की कि उसकी सरकार वार्ता के लिए तैयार है। इसके जवाब में पार्टी ने भी घोषणा की कि अगर सरकार सशस्त्र बलों को वापस लेती है तो हम भी वार्ता के लिए तैयार हैं। लेकिन पार्टी की घोषणा के बाद बुद्धदेब सरकार की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई जिससे यह समझ सकते हैं कि वह अपनी पेशकश के प्रति कितनी ईमानदार है।

इस संघर्ष पर दमन की पराकाष्ठा के तौर पर केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम ने 22 जून 2009 को इस संघर्ष की अगुवाई कर रही माओवादी पार्टी पर देशव्यापी प्रतिबंध लगाया। एक न्यायसम्मत, तर्कसंगत और देश के हितों के अनुरूप चल रहे इस जन आंदोलन का नेतृत्व कर रही पार्टी पर प्रतिबंध लगाना सरकारों की निर्लज्ज व खुली जनवाद-विरोधिता के अलावा कुछ नहीं है। यह जनता के लिए एक खतरनाक चेतावनी भी है।

## इतिहास पर असर डालता लालगढ़

लुटेरे वर्गों की दलाल सरकारें देश भर में कई जगहों पर भारी परियोजनाओं और सेज के निर्माण के लिए कई कोशिशें कर रही हैं। यह आज देश भर में एक ज्वलंत समस्या बन गई है। एक तरफ ये सरकारें जनता को बड़े पैमाने पर विस्थापित कर आजीविका को खत्म कर उनके भविष्य पर अंधेरा लाद रही हैं। दूसरी तरफ वे देश की सम्पदाओं को साम्राज्यवादी देशों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और दलाल पूंजीपति घरानों द्वारा लुटवाने में साधन की तरह काम करते हुए देश के भविष्य पर ही सवालिया निशान लगा रही हैं। इनके निर्माण और गठन को आसान बनाने के लिए इसका विरोध कर रहे क्रांतिकारी आंदोलन और आंदोलनकारियों पर क्रूरतम दमन का प्रयोग कर रही हैं। सलवा जुडूम जैसे आतंकी अभियानों को अंजाम दे रही हैं। लोगों के कत्लेआम करवा रही हैं। ऐसे हालात में पश्चिम बंगाल में उभरकर आए सिंगूर व नंदीग्राम जैसे संघर्षों ने लुटेरी सरकारों के एजेण्डे को रोका। लालगढ़ संघर्ष भी उस दिशा में और भी उन्नत स्तर पर उभरा और उसने कम समय के लिए ही सही 'आधार इलाका' के स्तर पर ख्याति प्राप्त की। देश की जनता को संघर्ष की प्रेरणा देकर, खासकर विस्थापन की नीतियों के खिलाफ, साम्राज्यवाद के खिलाफ और आत्मनिर्भरता के पक्ष में संघर्षरत लोगों के सामने खुद को एक व्यावहारिक नमूने के तौर पर पेश किया। जनता के बड़े पैमाने के विद्रोह के बावजूद वहां पार्टी और जन सेना का समुचित विकास न हो पाने के कारण उस आंदोलन को कार्यनीतिगत रूप से वापस लेना पड़ा। इस मौके पर दण्डकाण्य के क्रांतिकारी आंदोलन को ध्यान में लेना लाजिमी है। दण्डकारण्य में मौजूद कीमती खनिज व वन सम्पदाओं को साम्राज्यवादियों के हवाले करने की मंशा से भारत के शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों के समर्थन से सलवा जुडूम के नाम से एक फासीवादी हत्याकाण्ड शुरू किया था। लेकिन यहां पर पच्चीस बरसों से संगठित हुए क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी और जन सेना ने सलवा जुडूम को धूल चटाकर सरकार के लूटखसोट के एजेण्डे को रोक दिया। इसलिए देश भर में मजबूत पार्टी और मजबूत जन सेना के निर्माण की ऐतिहासिक आवश्यकता को लालगढ़ संघर्ष फिर एक बार रेखांकित करता है। इसलिए, आइए, देश भर में पार्टी, जन सेना और संयुक्त मोर्चे को मजबूत कर आधार इलाकों की स्थापना करने की दिशा में दृढ़ता से कदम बढ़ाएं। ✶

---

**(...पेज 11 का शेष)**

और राज्य व सरकार के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध के बीच कुशलतापूर्वक संतुलन भी था।

**कॉमरेडो,**

इस वीरतापूर्ण अनुभव से हमारी समूची पार्टी शिक्षा ग्रहण करेगी। हम शपथ लेते हैं कि लालगढ़ किस्म के आंदोलनों को देश भर में फैलाएंगे, आपके आंदोलन के बारे में देश भर में प्रचार करेंगे और आपके आंदोलन को हर प्रकार की सहायता पहुंचाएंगे।

*15 जुलाई*

## लालगढ़ की जनता के नाम भाकपा (माओवादी) का संदेश

# आपके शानदार संघर्षों को लाल सलाम! आपका यह जन उभार लाखों लोगों को उत्साहित कर लालगढ़ के लाल शोलों को देश के कोने-कोने में फैला देगा!!

हाथों में हथियार उठाए आपका यह विद्रोह दशकों से जारी सामाजिक फासीवादियों की उपेक्षा, कुशासन और आतंक के खिलाफ एक तूफान की तरह उठ खड़ा हुआ है। आप लोगों ने पुलिस थानों, सीपीएम के दफ्तरों - राजकीय आतंक के अड्डों - पर धावा बोला और उन्हें इलाके से बाहर खदेड़ दिया। सात महीनों से भी ज्यादा समय तक आप और आपके आसपास के इलाकों के कॉमरेडों ने एक व्यापक क्षेत्र में समूचे प्रशासन को पूरी तरह ठप करके रख दिया। इतना ही नहीं, सामाजिक फासीवादियों के तीन दशकों पुराने तथाकथित विकास के ढोंग का पर्दाफाश करते हुए आप लोगों ने खुद ही श्रमदान के जरिए अनगिनत विकास कार्यों - जैसे कि स्वास्थ्य सुविधाओं, सिंचाई परियोजनाओं, सड़कों, स्कूलों आदि का निर्माण किया। वास्तव में यह हम सभी के लिए एक उत्साहवर्द्धक उदाहरण है जिससे हम शिक्षा ग्रहण करते हुए देश के हर कोने में हजारों लालगढ़ निर्मित करने का आह्वान दे रहे हैं।

आपके इस जबर्दस्त विद्रोह से आतंकित हुए केन्द्रीय व राज्य के बलों, सामाजिक फासीवादियों की हरमद वाहिनी के गुण्डा बलों ने आपके इलाके की समूची जनता पर व्यापक हमले छेड़ दिए। बड़े पैमाने पर चलाए गए दुष्प्रचार के जरिए सरकार ने आपके इलाके को एक युद्ध क्षेत्र में बदल दिया। राज्य बलों और सीपीएम की गुण्डावाहिनी के साथ-साथ केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों व कोबरा के विशेष बलों की 40 कम्पनियों और हेलिकॉप्टरों द्वारा किए गए हमले का परम्परागत हथियारों से लैस सशस्त्र जनता ने वीरतापूर्वक मुकाबला किया।

यह सभी को मालूम है कि 4 हजार एकड़ वन भूमि, जिस पर सिर्फ और सिर्फ आपका अधिकार है, जिंदल प्लांट के लिए आवंटित किए जाने को लेकर जनता के अंदर असंतोष था। इस जमीन पर आप, यानी इस इलाके के ग्रामीणों का ही अधिकार है, न कि सरकार का। इस प्लांट का उद्घाटन कर लौट रहे मुख्यमंत्री और अन्य लोगों के काफिले पर हमले के बाद, पुलिस द्वारा मचाए गए आतंक के तांडव के बाद आपके आंदोलन ने एक राजनीतिक आकार ग्रहण किया था जबकि पुलिस और प्रशासन के खिलाफ हजारों हजार लोग गोलबंद होते गए। पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों के हमलों के खिलाफ बहादुराना जन प्रतिरोध के साथ-साथ इस जन उभार ने समूचे देश पर जबर्दस्त राजनीतिक प्रभाव डाला। सभी किस्म के शोषण, दमन और अन्याय के खिलाफ संघर्षरत मेहनतकश जन समुदायों में उम्मीद जगा दी और प्रेरणा दी। एक अतिरिक्त राजनीतिक प्रभाव यह था कि इसने संशोधनवादी सीपीएम के सामाजिक फासीवादी चेहरे का जनता के सामने अच्छी तरह पर्दाफाश कर दिया और क्रांतिकारी ताकतों व प्रतिक्रियावादी ताकतों के बीच ध्रुवीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

भाकपा (माओवादी) की पोलितब्यूरो आपके इस शानदार जन उभार को ऊंचा उठाती है और आपके इलाके में केन्द्रीय व राज्य बलों द्वारा छेड़े गए क्रूर दमन की कड़ाई से निंदा करती है। समूची पार्टी, पीएलजीए, अपने जन संगठनों, क्रांतिकारी जन समुदायों के हरेक तबके का पोलितब्यूरो आह्वान करती है कि वे आपके आंदोलन के समर्थन में आगे आएं और लालगढ़ की लड़ाकू व संघर्षरत जनता पर हो रहे बर्बर हमले के खिलाफ उठ खड़े होवें। आपके आसपास के इलाकों की पार्टी व जनता का हम यह आह्वान करते हैं कि वे आपके इस महान विद्रोह के समर्थन में उचित कार्रवाइयों को अंजाम दें और अन्य आवश्यक कदम उठाएं। हम शपथ लेते हैं कि हर मुमकिन तरीके में हम आपकी मदद करेंगे, खासकर समूचे देश में उत्पीड़ित जन समुदायों का समर्थन जुटाकर।

इस संघर्ष के बेहद महत्वपूर्ण पहलू, जिन्हें कि हम सब सीख सकें और समूचे देश में लागू कर सकें, इस प्रकार हैं:

(1) आपका आंदोलन सचमुच ही एक सशस्त्र जन आंदोलन था जिसने उस इलाके के समूचे जन समुदायों को अपनी ओर खींचा और पूरे सात महीनों तक समूची प्रतिक्रियावादी राज्य मशीनरी को इलाके से बाहर खदेड़कर रख दिया।

(2) हरेक गांव में एक कमेटी जिसमें पांच पुरुष और पांच महिलाएं रहेंगी, का निर्माण करते हुए आपने जो जन संगठन खड़ा किया, वह सचमुच ही जनाधार-प्राप्त जनवादी संगठन का एक नया नमूना है, जो व्यापक जन समुदायों को गोलबंद व संगठित कर सकता है।

(3) आपका यह आंदोलन महज आर्थिक हितों के लिए चलाए जाने वाला आंदोलन नहीं था, बल्कि आदिवासी और गैर-आदिवासी मेहनतकश जन समुदायों के राजनीतिक अधिकारों व आत्मसम्मान के लिए उठ खड़ा हुआ एक राजनीतिक विद्रोह था।

(4) वास्तविक रूप से संयुक्त मोर्चे का निर्माण कैसा करना चाहिए, आपका आंदोलन एक उदाहरण है, जिसमें जनता के सभी तबकों को, शहरों में रहने वाले प्रगतिशील शख़्सों व बुद्धिजीवी ताकतों को भी आकर्षित किया गया। साथ ही, इसमें सुधार कार्य, राजनीतिक आंदोलन

(शेष पेज 10 में...)

**प्रेस विज्ञप्ति**

# व्यापक राजकीय हिंसा व दमन का मुकाबला करते हुए ढोंगी चुनाव का बहिष्कार करने वाली संघर्षशील जनता का लाल अभिनन्दन!

15वीं लोकसभा चुनावों का पहला चरण समाप्त हो गया। जहां तक छत्तीसगढ़ का सवाल है, यहां की सभी 11 सीटों के लिए वोट डाले गए। गौरतलब है कि देश के जिन 124 स्थानों के लिए पहले चरण के तहत 16 अप्रैल को वोट डाले गए थे, उनमें से ज्यादातर माओवादी जनयुद्ध के इलाके हैं। हमारे देश को 'दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र' और इन ढोंगी चुनावों को 'लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व' कहते नहीं थकने वाले मीडिया ने चुनावों के नाम पर खासकर संघर्ष के इलाकों की जनता पर चलाई गई सरकारी हिंसा पर गहरी चुप्पी साध रखी है। और अपने को माओवादी 'हिंसा' की खबरें छापने तक ही सीमित रखा है। दरअसल छत्तीसगढ़ में पहले से मौजूद हजारों पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों के अलावा चुनाव के मद्देनजर 250 अतिरिक्त कम्पनियां भेजी गईं। इनमें 80 प्रतिशत बलों को हमारे संघर्ष के इलाकों में ही तैनात किया गया। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में अर्द्ध सैनिक बलों की 25 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात कर दी गईं। जाहिर सी बात है बलों की इतनी भारी-भरकम तैनाती का एक मात्र लक्ष्य यही है कि कैसे भी करके 'चुनाव बहिष्कार' को विफल कर दिया जाए और अपने तथाकथित संसदीय लोकतंत्र की लगातार गिरती साख को टिकाए रखने का नाकाम प्रयास किया जाए। इसी मंशा से संघर्षशील जनता पर सरकारी सशस्त्र बलों ने अनगिनत अत्याचार किए हैं। कई लोगों को झूठी मुठभेड़ों में मार दिया। कई गांवों में हमले कर घर जला दिए। कई जगहों पर महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया। विडम्बना यह है कि यह सब 'निष्पक्ष' और 'शांतिपूर्ण' चुनाव सम्पन्न करवाने के नाम से ही हुआ है। इस झूठे लोकतंत्र के खूंखार और दमनकारी चरित्र को समझने के लिए इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है?

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में 'ऑपरेशन पराक्रम' के नाम से भारी पैमाने पर चलाए गए दमन अभियान के तहत स्थानीय पुलिस, सी-60 कमाण्डो और केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों ने जिले की जनता पर क्रूरतम हमला छेड़ दिया। ऑपरेशन 'पराक्रम' दरअसल महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार और निरीह आदिवासियों की मुठभेड़ के नाम से हत्या का ही अभियान रहा है। पूरे जिले से मिली खबरों के मुताबिक अब तक इस अभियान के दौरान 10 आदिवासी युवतियों के साथ सरकारी बलों ने सामूहिक बलात्कार किया। पावरवेल गांव की एक महिला के साथ पांच पुलिस वालों ने सामूहिक बलात्कार कर बाद में उसे 'नक्सली' बताकर जेल भेज दिया। उस महिला को मुंह न खोलने की धमकी दी। 23 मार्च के दिन छत्तीसगढ़ के मानपुर क्षेत्र में आने वाले गांव हल्लेपाल की एक महिला के साथ महाराष्ट्र के सी-60 कमाण्डो बल का खूंखार दरोगा मुन्ना ठाकुर के नेतृत्व में आए दरिंदों ने सामूहिक बलात्कार किया। मार्च महीने के पहले सप्ताह में धनोरा तहसील के गोड्डलवाई गांव के निवासी सुक्कू को ठण्डे दिमाग से गोली मार दी और घोषणा की कि नक्सलियों के साथ डेढ़ घण्टे तक हुई 'मुठभेड़' में एक नक्सली कमाण्डर की मौत हुई। दरअसल सुक्कू अपने गांव में जीने वाला एक साधारण आदिवासी युवक था। इसके अलावा कई गांवों से दर्जनों आदिवासियों को गिरफ्तार कर झूठे केस लगाकर जेल में डाल दिया गया।

फरवरी महीने में दिल्ली में सम्पन्न चार राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक में लिए गए निर्णय के मुताबिक महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ राज्यों में ज्वाइंट ऑपरेशन शुरू किया गया। इसके तहत छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव और कांकेर जिलों में हजारों अतिरिक्त सशस्त्र बलों को उतारा गया। राजनांदगांव जिले के मोहला-मानपुर क्षेत्र के पानाबरस, वासिडी, खड़गांव, कंदाड़ी और सीतागांव में तथा कांकेर जिले के कापसी और कोदापाखा में सैकड़ों सशस्त्र बलों को तैनात कर नए कैम्प खोल दिए। इन सरकारी बलों ने गश्त के नाम से गांव-गांव घूमते हुए जनता में दशहत फैला रखी है। महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार और घरों से मुरगा-दारू लूटना आम बात हो गई। लोकसभा चुनाव नजदीक आते ही पूरे दण्डकारण्य में दमन का सिलसिला और भी बढ़ा दिया गया। कांकेर जिले (उत्तर बस्तर) के बड़गांव क्षेत्र के ग्राम कुल्ली में 27 मार्च 2009 को पुलिस बलों ने हमला कर मानसिंह नामक किसान के घर और खलिहान में आग लगा दी। उसी दिन कोइलीबेड़ा क्षेत्र के ग्राम कटनार पर हमला कर कई लोगों की पिटाई कर 10 लोगों को गिरफ्तार किया। 5 अप्रैल को कोइलीबेड़ा इलाके के ग्राम लोहार में पुलिस बलों ने आतंक का तांडव मचाते हुए 9 लोगों की जमकर पिटाई की। पुलिस बलों को देख अपने घरों को छोड़कर कई लोग जंगल में भागे थे। पुलिस ने घरों के ताले तोड़कर लूटपाट भी मचाई। पुलिस की बेरहम पिटाई में 60 साल के एक बुजुर्ग आदिवासी किसान सम्मू दर्रो ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। पुलिस उनकी लाश को वहीं छोड़कर चली गई। 'स्वतंत्र' और 'निष्पक्ष' चुनाव के दावे करने वाले शासक वर्ग दरअसल संघर्ष के इलाकों में हिंसा, कत्लेआम, बलात्कार और आतंक ही मचवा रहे हैं।

इस प्रकार सरकारी बलों द्वारा चलाए गए व्यापक आतंक के बावजूद भी जनता ने, खासकर हमारे संघर्ष के इलाकों की जनता ने इस झूठे संसदीय लोकतंत्र को नकारते हुए 'चुनाव बहिष्कार' में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बस्तर संसदीय क्षेत्र में करीब 50 मतदान केन्द्रों में एक भी वोट नहीं पड़ा। सैकड़ों पुलिस बलों की तैनाती के बावजूद दक्षिण बस्तर के गोल्लापल्ली में लोगों ने एक भी वोट नहीं दिया, वहीं किष्टारम में मात्र 2 वोट पड़े हैं। कांकेर

और राजनांदगांव क्षेत्रों में भी हमारे संघर्ष क्षेत्र के दायरे में आने वाले गांवों की अत्यधिक जनता ने मतदान का बहिष्कार किया। दरअसल खुद सरकार ने ही दंतेवाड़ा, बीजापुर और नारायणपुर जिलों के 86 मतदान केन्द्रों को सड़क किनारे के गांवों में बदल दिया। 27 अप्रैल को 25 मतदान केन्द्रों में हुए पुनरमतदान में भी कई लोगों ने वोट नहीं दिए। दो केन्द्रों में तो जीरो मतदान हुआ है। जहां-जहां वोट पड़े भी हैं इसमें सरकारी बलों का ही 'रोल' ज्यादा है। वोट नहीं डालने वालों को नक्सली बताकर गोली मारने, गांवों में राशन की सप्लाई बंद कर देने और बाजार में नहीं आने देने की धमकियां दी गईं। ऐसी धमकियों की परवाह न करते हुए चुनाव बहिष्कार का जनता ने सफल किया। वहीं सरकारी बलों ने वोट नहीं डालने के जनता के लोकतांत्रिक अधिकार का हनन किया। उन्हें मारपीट कर वोट डालने पर मजबूर करने की असंख्य घटनाएं घटी हैं। इस सबके बावजूद भी जनता ने झूठे चुनाव का बहिष्कार कर क्रांतिकारी जनसत्ता के निर्माण के विकल्प को स्वीकार किया। हमारी स्पेशल जोनल कमेटी दण्डकारण्य की तमाम संघर्षशील जनता का लाल-लाल अभिनन्दन करती है।

चुनाव के मौके पर सरकारी दमन का मुकाबला करते हुए हमारी पीएलजीए ने आतंकी और अत्याचारी सशस्त्र बलों पर कई शानदार हमले किए। खासकर चिंतागुफा, मारूकी, मुंगनेर, बीजापुर जैसी कार्रवाइयों को अंजाम देकर तथा छन्नूराम कर्मा जैसे हत्यारों का सफाया कर पीएलजीए ने जनता को शत्रु बलों के कातिलाना हमलों से बचाने की भरसक कोशिश की। इस मौके पर पीएलजीए के बहादुर कमाण्डरों और लाल योद्धाओं का हम लाल अभिनन्दन करते हैं।

## कमकासूर के पास घटित पांच निर्दोष नागरिकों की मौत की दुखद घटना पर खेद

आतंकी पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों को दंडित करने की मंशा से हमारी पीएलजीए की एक टुकड़ी ने राजनांदगांव जिले के खड़गांव क्षेत्र के अंतर्गत कमकासुर के पास एक हमले की योजना बनाई। लेकिन हमारे कॉमरेडों ने धोखे से पुलिस बलों की बजाए मतदान कर्मचारियों की गाड़ी उड़ा दी। इस घटना में पांच निर्दोष लोगों की दुखद मौत हुई है जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इनमें मुख्य रूप से वन व शिक्षा विभाग के कर्मचारी शामिल हैं। इस घटना के सम्बन्ध में हमें सम्बन्धित कमेटी से मिली जानकारी के मुताबिक गाड़ी को और उसमें बैठे हुए लोगों को पहचानने में हमारे कॉमरेडों की तरफ से भारी भूल हुई थी। हम इस हमले में मारे गए लोगों के शोकसंतप्त परिजनों व दोस्तों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हैं। साथ ही, हम घायल कर्मचारियों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं। इस भारी चूक के लिए हम छत्तीसगढ़ प्रदेश की समूची जनता से तहेदिल से क्षमायाचना करते हैं। दोबारा ऐसी घटनाएं न हों, इसकी पूरी सावधानी बरतने का वादा करते हैं। इस दिशा में हमारे कार्यकर्ताओं को शिक्षित करते रहने का भी वादा करते हैं। साथ ही साथ, हम सरकार के इस दुष्प्रचार का भी विरोध करते हैं कि हमने जानबूझकर इन लोगों की हत्या की।

**(गुड्सा उसेण्डी)**
**प्रवक्ता**
**दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**
**भाकपा (माओवादी)**

**(...पेज 15 का शेष)**

बलिराम कश्यप एक घोर प्रतिक्रियावादी नेता है जिसकी सलवा जुडूम से लेकर तमाम जन विरोधी व दमनकारी योजनाओं और परियोजनाओं में भागीदारी है। उसका एक बेटा केदार कश्यप रमनसिंह मंत्रीमण्डल में सदस्य, टाटा के दलाल व बस्तर जनता के हितों का घोर विरोधी है। और तानसेन जनपद अध्यक्ष के साथ-साथ एक गुण्डा नेता था। यह आम जनता के साथ-साथ अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों पर भी कई जुल्म किए थे। ओड़िशा से गुण्डों को लाकर पिटवाना और हत्याएं करवाना इसका काम था। हालांकि ये तीनों भी पार्टी और जनता के निशाने पर हैं, पर सबसे पहले तानसेन का सफाया करने का निर्णय लेकर उस पर अमल किया गया। इस घटना में तानसेन का भाई दिनेश कश्यप भी घायल हो गया।

## टाटा का दलाल विमल मेश्राम

19 जून 2009 को पूर्व बस्तर के लोहंडीगुड़ा के साप्ताहिक बाजार में दिन-दहाड़े पीएलजीए की एक एक्शन टीम ने टाटा के मंजे हुए दलाल और जनपद उपाध्यक्ष विमल मेश्राम को मार डाला। टाटा इस क्षेत्र में 10 हजार करोड़ रुपए की लागत से एक बहुत बड़ा स्टील प्लांट बनाने की कोशिश में है। इसके लिए वह करीब 5,500 एकड़ उपजाऊ जमीन लोगों से छीनने की कोशिश कर रही है। और 10 से 20 हजार परिवारों को उजाड़ने की साजिश रच रही है। इसके तहत विमल मेश्राम टाटा का वफादार कुत्ते के रूप में काम कर रहा था। लोगों को डरा-धमकाकर जमीनों का जबरिया अधिग्रहण करवाने में इसकी मुख्य व सक्रिय भूमिका रही। इसके पीछे महेन्द्र कर्मा, बलिराम कश्यप जैसे दलाल नेता थे। और उनके समर्थन से यह लोगों पर नाना प्रकार का दबाव डाल रहा था। टाटा के लिए अपनी जमीनें देने से इनकार करने वाले लोगों को अभी तक कई बार पुलिस की प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ा। कई लोग जेल गए थे। और विमल मेश्राम गांव-गांव जाकर प्रत्येक व्यक्ति को टाटा को जमीन देने के लिए मजबूर किया था और जमीन न देने पर जान से मारने की धमकी देता था। विमल मेश्राम ने लोहंडीगुड़ा क्षेत्र के करीब 200 व्यक्तियों को झूठे केस में फंसाकर जेल भिजवा दिया था। आसपास के ग्रामीण उसकी गुण्डागर्दी से तंग आ गए थे व महिलाओं की छेड़खानी आम बात हो गई थी। टाटा को जमीन बेचकर पैसा कमाना उसका पेशा था, इसीलिए यह सजा उसे दे दी गई। ✶

# दण्डकारण्य में 15वीं लोकसभा चुनावों का ढकोसला! पीएलजीए के शानदार हमलों से सरकारी आतंक का मुकाबला!!

पिछले नवम्बर 08 में हुए छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों के दौरान दण्डकारण्य की जनता ने भारी पैमाने तैनात पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों की परवाह न करते हुए बहिष्कार का नारा बुलंद किया था। करीब 50 हजार पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों ने पूरे बस्तर क्षेत्र को सैन्य छावनी बना दिया था। दर्जनों लोगों को मुठभेड़ों के नाम से मार डाला गया था ताकि जनता में आतंक मचाकर वोट डलवाया लिया जा सके। इसके बावजूद भी संघर्षशील जनता ने चुनावों का पूरी तरह बहिष्कार किया। आने वाले लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए सरकारी सशस्त्र बलों ने दमन में और ज्यादा इजाफा किया। झूठी मुठभेड़ों का सिलसिला जारी ही रहा। केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम और छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री रमनसिंह की साझी सांठगांठ के तहत 8 जनवरी 2009 को दक्षिण बस्तर के सिंगारम में 18 निर्दोष आदिवासियों की निर्मम हत्या कर दी गई। संभवत: पूरे देश में यह अब तक की सबसे बड़ी झूठी मुठभेड़ होगी जिसमें इतनी संख्या में लोगों का कत्ल किया गया हो।

1 फरवरी 2009 को महाराष्ट्र के गड़चिरोली डिवीजन के मरकागांव के पास हमारी पीएलजीए ने 15 पुलिस वालों का सफाया कर सालों से पुलिस दमन से त्रस्त वहां की आदिवासी जनता को राहत पहुंचाई। इस घटना से बौखलाई हुई महाराष्ट्र सरकार ने 'ऑपरेशन पराक्रम' के नाम से गड़चिरोली जिले में भारी पैमाने पर दमन अभियान चलाया। इसके लिए केन्द्रीय गृहमंत्री ने 3 हजार अर्द्ध-सैनिक बल गड़चिरोली भेजा। स्थानीय पुलिस बल, सी-60 कमाण्डो बल और केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों ने जिले की जनता पर क्रूरतम हमला छेड़ दिया। ऑपरेशन 'पराक्रम' दरअसल महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार और निरीह आदिवासियों की मुठभेड़ के नाम से हत्या से ही चलाया गया, ऐसा कहना गलत नहीं होगा।

इसके खिलाफ जनता की फौज पीएलजीए ने प्रतिरोधी कार्रवाइयों का सिलसिला लगातार जारी रखा। अखबारों से मिली जानकारी के मुताबिक कार्रवाइयों का संक्षिप्त लेखा-जोखा इस प्रकार है।

✶ 24 मार्च 2009 को माड़ डिवीजन के सोनपुर में आयोजित होने वाले मेले में आतंक मचाने की मंशा से 80 जवानों की पुलिस पार्टी रात के अंधेरे में निकली थी। नारायणपुर एएसपी की अगुवाई में निकले इस दल पर पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने ग्राम बासिंग के पास आधी रात को धावा बोल दिया। इस हमले में एक पुलिस वाले की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि एक एसपीओ समेत दो पुलिस वाले बुरी तरह घायल हुए। इसके बाद पुलिस बल दुम दबाकर वहीं से वापस नारायणपुर चले गए। और मेला सही-सलामत सम्पन्न हुआ। कुछ अखबारों में मृत पुलिस वालों की संख्या दो बताई गई।

✶ 6 अप्रैल 2009 को महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले के धनोरा तहसील स्थित मुगिनेर गांव के पास हत्यारे सी-60 कमाण्डो बलों पर पीएलजीए ने जबर्दस्त हमला किया। करीब डेढ़ घण्टे तक चले इस हमले में सी-60 के 3 कमाण्डो कुत्ते की मौत मारे गए और 7 अन्य घायल हो गए। सी-60 कमेण्डो बल का दरिंदा दरोगा मुन्ना ठाकुर इस हमले में घायल होकर बच गया। एक 9 एमएम पिस्तौल जब्त कर ली गई। हमेशा की तरह इस बार भी अपने भाड़े के बलों के गिरते मनोबल को ऊंचा करने की नाकाम कोशिश के तहत एसपी राजेश प्रधान ने दावा किया कि इस कार्रवाई में उनके भाड़े के कमाण्डों ने 15 नक्सलवादियों को मार गिराया। हालांकि उसे यह स्वीकारने में जरा भी शर्म महसूस नहीं हुई कि एक भी नक्सलवादी का शव बरामद नहीं हुआ। हालांकि सच यह है कि इस हमले को सफल बनाने के दौरान कॉमरेड जूरू ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया।

✶ 7 अप्रैल 2009 को पश्चिम बस्तर डिवीजन के बीजापुर जिला मुख्यालय से मात्र 2 किलोमीटर दूर पीएलजीए ने बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। इस विस्फोट में पुलिस के एक बुलेटप्रूफ वाहन की धज्जियां उड़ गईं। बताया जा रहा है कि यह हमला बीजापुर एसपी अंकित गर्ग को निशाना बनाकर किया गया था। तीन वाहनों के काफिले के साथ एसपी अंकित गर्ग बीजापुर से भोपालपटणम की ओर निकला हुआ था। लेकिन उसकी गाड़ी से पीछे वाली गाड़ी विस्फोट के चपेट में आ गई। वरना आदिवासियों के खून के प्यासे एसपी अंकित गर्ग का निश्चित रूप से अंत होने ही वाला था। बहरहाल, इस हमले में 2 पुलिस वाले मारे गए जबकि 4 बुरी तरह घायल हुए।

✶ 12 अप्रैल 2009 को भोपालपटनम के पास पीएलजीए ने एक बारूदी सुरंग का विस्फोट किया जिसमें एक पुलिस व एक सीआरपीएफ के जवान मारे गए। सीआरपीएफ व एसपीओ गुंडों की 40-50 की संख्या में आतंकी पार्टी चेरलापल्ली से गश्त पर निकली हुई थी। यह विस्फोट गोरला नाला के पास किया गया। इसमें 2 सीआरपीएफ के जवान घायल भी हुए हैं।

✶ 13 अप्रैल 2009 को मतदान दल को दोरनापाल छोड़कर दंतेवाड़ा लौट रही पुलिस पार्टी को पीएलजीए बलों ने बारूदी सुरंग से उड़ा दिया। इस विस्फोट में जीप का चालक व दुश्मन बलों के 4 भाड़े के जवान घायल हो गए। यह हमला कुआकोंडा ब्लॉक के गांव भूसारास के पास किया गया था। ✶

# जनता के कट्टर दुश्मनों व जालिम नेताओं का सफाया

पिछले छह महीनों में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के क्रम में हमारी पीएलजीए की विभिन्न टुकड़ियों ने कुछ कट्टर जन दुश्मनों का सफाया किया। ये लोग कांग्रेस या भाजपा में रहकर लुटेरों की भाषा में 'जन प्रतिनिधि' के रूप में जनता पर लूटखसोट, उत्पीड़न व दमन ढाते रहे थे। इनमें से कुछ लोग तो बेहद लम्पट व जालिम तत्व भी थे जिन्हें मार डालने की मांग जनता कई सालों से कर रही थी। बहरहाल, हाल ही में सम्पन्न झूठे लोकसभा चुनावों की नौटंकी के पहले व बाद में ऐसे कुछ लोगों का सफाया कर जनता को काफी राहत पहुंचाई गई। इन तमाम जन दुश्मनों का बड़े ही साहस, पहलकदमी व सूझबूझ के साथ साफाया करने वाले पीएलजीए के विभिन्न बलों के लाल योद्धाओं और कमाण्डरों का 'प्रभात' अभिनंदन करती है। आइए, ऐसे ही कुछ दरिंदों के सफाए की कार्रवाइयों पर नजर डालें-

## महेंद्र कर्मा का दाहिना हाथ छन्नूराम

3 अप्रैल 2009 को जिला मुख्यालय दंतेवाड़ा से मात्र 3 किलोमीटर दूर कतियाररास रेलवे क्रासिंग के पास पीएलजीए की एक एक्शन टीम ने एक शानदार व बहादुराना कार्रवाई में जालिम कांग्रेसी नेता और महेन्द्र कर्मा का भतीजा छन्नूराम कर्मा को मार गिराया। छन्नूराम फरसपाल गांव का सरपंच था। यह महेन्द्र कर्मा का दाहिना हाथ माना जाता था। सलवा जुडूम से लेकर महेन्द्र कर्मा की हर गतिविधि में छन्नूराम का बड़ा योगदान रहा। पश्चिम बस्तर क्षेत्र की जनता पर किए गए अमानवीय अत्याचारों में इसकी बड़ी हिस्सेदारी थी। खुद अखबारों ने लिखा है कि छन्नू को बताए बगैर महेन्द्र कर्मा कोई भी काम नहीं करता था। इस दरिंदे के लिए सरकार ने पांच पुलिस जवानों की सुरक्षा दे रखी थी। लेकिन पीएलजीए की एक्शन टीम ने जनता की मदद से उसकी हरेक गतिविधि पर नजर रखी और अनुकूल मौका देखकर उसे रेलवे क्रासिंग के पास दबोच लिया। हालांकि अपनी जान बचाने के लिए इस हत्यारे ने उधर-उधर भागने की काफी कोशिश की, पर पीएलजीए के फौलादी इरादों के सामने उसकी एक नहीं चली।

## खूंखार जानवर नारायण हलदार

4 मई को पीएलजीए के एक दस्ते ने उत्तर बस्तर डिवीजन के कोइलीबेड़ा जनपद उपाध्यक्ष नारायण हलदार का सफाया किया। भाजपा नेता व मंत्री विक्रम उसेण्डी का खास आदमी माने जाने वाला नारायण हलदार दरअसल एक पशु था। इसने कितने मासूम लोगों की हत्याएं कीं इसकी गिनती करना भी मुश्किल है। कापसी-पखांजूर इलाके की बंगाली बस्तियों में इसका आतंक फैला हुआ था। भाजपा के बड़े नेताओं व मंत्रियों का वरदहस्त प्राप्त होने के कारण कोई इसके खिलाफ आवाज तक उठाने की हिम्मत नहीं कर पाता था। इसने कई महिलाओं के साथ बलात्कार व जोर-जबर्दस्ती की थी। इसके अलावा यह एक घोर भ्रष्टाचारी था। शिक्षकर्मी नियुक्त करवाने का सब्जबाग दिखलाकर कई बेरोजगार नौजवानों से लाखों रुपए की रिश्वत वसूली थी। पुलिस भी इसे कुछ नहीं करती थी, बल्कि उसकी तमाम आपराधिक गतिविधियों के प्रति आंख बंद कर कुत्ते की तरह पूंछ हिला-हिलाकर उसके पीछे-पीछे घूमती थी। इसका सफाया करने के बाद कापसी-पखांजूर के क्षेत्र में खुशी की लहर फैल गई। इस जालिम के मरने पर पुलिस-प्रशासन इतना निराश हुआ है कि निर्दोष जनता को गिरफ्तार कर अपनी 'सफलता' दिखाने की कोशिश कर रहा है।

## रमनसिंह का खासमखास दरबारसिंह

मानपुर डिवीजन में 5 मई 2009 को पीएलजीए के एक दस्ते ने भाजपा नेता दरबारसिंह मण्डावी का सफाया कर दिया। दरबारसिंह औंधी का सरपंच था और यह पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा की टिकट पर मोहला-मानपुर क्षेत्र से उम्मीदवार भी था। जब मानपुर क्षेत्र में हमारी पार्टी की गतिविधियां शुरूआती अवस्था में थीं, तब दरबार ने पार्टी के दो कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा पकड़वाने की नाकाम कोशिश की थी। बड़ी मुश्किल से वो कॉमरेड पुलिस के हाथों पड़ने से बच गए थे। हाल ही में भाजपा सरकार के मुखिया रमनसिंह ने दरबार को मोहला-मानपुर क्षेत्र में भाजपा की मुखियागिरी दी और हमारी पार्टी के खिलाफ षड्यंत्रकारी तरीके से माहौल बनाने का जिम्मा सौम्पा। चुनावों के दौरान इसे न सिर्फ मोहला-मानपुर क्षेत्र में, बल्कि छत्तीसगढ़ के अन्य इलाकों में भी चुनाव प्रचार में लगा दिया। रमनसिंह ने अपने हेलिकॉप्टर में बिठाकर दूसरे इलाकों में घुमाया भी। विधानसभा चुनावों में हारने के बाद भी लोकसभा चुनावों में इस क्षेत्र में भाजपा के प्रचार का जिम्मा इसी को दिया गया था। लोकसभा चुनावों के पहले सीतागांव और खड़गांव में पुलिस थाने खुलवाने और कंदाड़ी, पानाबरस, वासिडी आदि जगहों पर पुलिस कैंप खुलवाने के भाजपा सरकार के फैसलों में प्रमुख भागीदारी दरबारसिंह की थी। मोहला-मानपुर इलाके में संघ गिरोह की सारी गतिविधियों में इसकी भागीदारी थी। इस साम्प्रदायिकतावादी व प्रतिक्रियावादी को मारने का फैसला पार्टी ने लिया था जिस पर पीएलजीए के एक दस्ते ने अमल किया।

## मृत्यु संगीत का शौकीन तानसेन कश्यप

26 सितम्बर 2009 को पीएलजीए की एक एक्शन टीम ने सुनियोजित तरीके से हमला कर बस्तर का सांसद बलिराम कश्यप का बेटा तानसेन कश्यप को मार डाला। गौरतलब है कि इन लोगों का पूरा परिवार ही जनता का कट्टर दुश्मन है। बस्तर की सम्पदाओं व संसाधनों को साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपति घरानों द्वारा लुटवाने की साजिश में यह परिवार एक बहुत बड़े दलाल की भूमिका निभाता आ रहा है।

( शेष पेज 13 में... )

# दरभा डिवीजन में चुनाव बहिष्कार पर जबरदस्त रैली व आमसभा

दरभा डिवीजन में 7 अप्रैल को चुनाव बहिष्कार अभियान के तहत एक बड़ी रैली का आयोजन दरभा डिवीजनल कमेटी की तरफ से किया गया था। इसमें हजारों की तदाद में जनता ने भाग लिया व लोकतंत्र की झूठी मतदान प्रक्रिया के बहिष्कार की प्रतिबद्धता को दोहराया। चुनाव के दौरान दंतेवाड़ा जिले में पहले से मौजूद अर्द्ध-सैनिक बलों के अलावा बीएएसएफ को बड़ी संख्या में उतारकर जिले को पूरी तरह सैनिक छावनी में तब्दील कर दिया गया था, लेकिन जनता ने बिना भय के रैली व आमसभा में भाग लिया। वहीं पीएलजीए के लाल सैनिकों व जन मिलिशिया ने जनता की सुरक्षा को सुनिश्चत किया। सरकारी तंत्र को चुनौती देते हुए लगभग 6 घंटे तक रैली व आमसभा चलती रही, जिसकी भनक तक सरकारी तंत्र व भाड़े के सुरक्षा बलों के खुफिया तंत्र को नहीं लगी।

एक दैनिक अखबार में इस पूरे आयोजन पर एक रिपोर्ट छापी गई थी जिसके कुछ अंश हम हू-ब-हू यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

"...सभा को दरभा डिवीजनल कमेटी के सचिव कामरेड गणेश उइके ने संबोधित किया व बाद में पत्रकरों के साथ चर्चा भी की। चर्चा में उन्होंने कहा कि - वर्तमान 'लोकतांत्रिक' व्यवस्था में जनता की किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो रहा है। लोकसभा चुनाव झूठा है, इस चुनाव के सहारे राजनीतिक दल एक बार फिर जनता पर शोषण को वैध प्रमाण-पत्र ले लेंगे, इसलिए जनता को इस चुनाव का बहिष्कार करना चाहिए। गणेश उइके ने आगे कहा कि हत्या और हिंसा से बदलाव संभव नहीं है और यही केवल उनकी क्रांति का हिस्सा है, ऐसा मानना गलत है। सरकारी तंत्र जब हिंसा करती है, सलवा जुडूम जैसे कथित आंदोलनों के सहारे आम जनता पर जुल्म होता है, तब प्रतिहिंसा होती है। नक्सल आंदोलन के राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक-वैचारिक इस तरह के कई पहलू हैं, हिंसा ही नक्सल आंदोलन नहीं है। अगर ऐसा होता तो सरकार अपने दमनयंत्र के सहारे नक्सलवाद को कुचल डालती। इसके विपरीत सरकार खुद दावा करती है कि देश के 13 राज्यों और 170 जिलों में इस जनवादी आंदोलन का विस्तार हो चुका है। लोग इस जनवादी आंदोलन से जुड़ रहे हैं। यह शुभ संकेत है। जम्मू-कश्मीर के बाद दंतेवाड़ा में फोर्स की इतनी दखल बढ़ी है। नक्सलवाद को कुचलने के लिए 8 जिलों में पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। फोर्स मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रही है, लेकिन दक्षिण बस्तर की आवाज दब जाती है। फोर्स ही हिंसा को बढ़ावा दे रही है। जनताना सरकार ही वर्तमान झूठी लोकसभा का विकल्प है। गांव के संसाधनों पर ग्रामीणों का अधिकार हो, ग्रामीण अपने फैसले खुद लें, यही जनताना सरकार का स्वरूप है। नक्सलवाद इसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। नक्सल आंदोलन के सहारे देश में बदलाव आएगा। यह जनता पर निर्भर है कि वह कितनी जल्दी बदलाव चाहती है। आने वाला दशक निर्णायक होगा और जनांदोलन की गति तेज होगी। तथाकथित लोकतांत्रिक व्यवस्था में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने पत्रकारों से कहा कि क्रांतिकारी दल सरकार में शामिल होने के बाद सुधारवादी और संशोधनवादी हो जाते हैं और पूंजीपतियों के खिलाफ संघर्ष थम जाता है। इसलिए चुनावी व्यवस्था में शामिल होने का सवाल ही नहीं उठता। यह पूछे जाने पर कि नक्सलियों की छवि विकास विरोधी क्यों बन रही है? नक्सल नेता ने कहा कि हम विकास चाहते हैं, स्कूलों में पढ़ाई चाहते हैं, अस्पताल चाहते हैं, लेकिन स्कूलों का उपयोग जब फोर्स के लिए हुआ तो हमने स्कूलों को क्षतिग्रस्त किया। स्थानीय संसाधनों के दोहन के लिए और सरकारी सशस्त्र बलों की आवाजाही के लिए ही सड़कें और पुल-पुलिया बनती हैं। आम ग्रामीणों का इससे भला नहीं होता। हम तो गांवों में शैक्षणिक व्यवस्था सुधारने के लिए शिक्षकों को बुलाते हैं। लेकिन कोई आता नहीं। टाटा, एस्सार रावघाट, बोध घाट आदि परियोजनाओं से आदिवासियों का नहीं बल्कि पूंजीपतियों का भला होगा। इसलिए इनका विरोध हो रहा है। सेना और फोर्स की मौजूदगी के बावजूद जनताना सरकार के लिए जनता जागृत हो रही है। यह नक्सलवादी आंदोलन के लिए काफी अच्छा संकेत है।..." ✶

# भाकपा ( माओवादी ) और रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रण्ट की संयुक्त घोषणा - 22 अक्टूबर 2008

21-22 अक्टूबर 2008 को रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रण्ट के काउंसिल मुख्यालय पर सी.पी.आई. (माओवादी) और रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रण्ट के बीच एक दो दिवसीय बैठक सम्पन्न हुई थी। उस बैठक में दोनों पक्षों ने भारतीय राज्य व्यवस्था के प्रभुत्ववादी पूंजीवादी प्रारूप को एक स्वर से निरस्त किया। दोनों पक्ष पारस्परिक मित्रता व समझदारी को सुदृढ़ करने के लिये सहमत हुये और इससे भी बढ़कर अपने साझा शत्रु, वर्तमान भारतीय प्रतिक्रियावादी शासन को उखाड़ फेंकने और दोनों दलों के राजनैतिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिये एक-दूसरे के हाथों में हाथ देकर दृढ़तापूर्वक खड़े होने के लिये सहमत हुये।

गांधी, नेहरू और सरदार पटेल तथा प्रभुत्ववादी व औपनिवेशिक प्रारूप के नेतृत्व में प्रतिक्रियावादी भारतीय कांग्रेस के उकसावे के तहत भारतीय प्रभुसत्ता द्वारा मणिपुर को मिलाये जाने की सी.पी.आई (माओवादी) द्वारा कड़ी भर्त्सना की गयी। भारतीय प्रभुसत्ता के साथ मणिपुर के विलय का तथाकथित समझौता वस्तुत: गैरकानूनी व असंवैधानिक था। 22-29 अक्टूबर 1993 को जीएम हाल इम्फाल में मणिपुर विलय समझौते पर हुये दो दिवसीय समागम द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया था। अब यह मणिपुर की जनता की आवाज बन चुका है।

मणिपुर को ब्रिटिश भग्नाअवशेष भारतीय तरह के काले राज की दासता से मुक्त कराने के लिये कामरेड हिजम इराबोट के नेतृत्व में एक क्रान्तिकारी आन्दोलन का जन्म हुआ था। मुक्ति संग्राम और सम्पूर्ण क्रान्ति की निरन्तरता के तौर पर रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट आत्मनिर्णय के अपने राजनैतिक अधिकार के लिये संघर्षरत है। अत: सी.पी.आई. (माओवादी) मणिपुर में क्रन्तिकारी आन्दोलन की सत्य प्रकृति को बुलन्द करती है और मणिपुर की सार्वभौमिकता को स्वीकारते हुए मुक्ति संग्राम का समर्थन करती है।

इससे अधिक रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रन्ट भी सी.पी.आई. (माओवादी) के क्रन्तिकारी आन्दोलन के साथ खड़ा होता है और उसका समर्थन करता है। ब्रिटिश राज के भारत की मिट्टी से विदा होने के बाद से पूरे भारत में पददलित सर्वहारा भारतीय प्रतिक्रियावादी शासन के तहत उत्पीड़न व दासता को झेल रहे हैं। भारतीय जनता को राजनैतिक उत्थान का अधिकार प्रदान करने के लिये 1969 में कॉमरेड चारू मजुमदार और कॉमरेड कन्हाई चटर्जी के नवीन नेतृत्व में क्रान्तिकारी आन्दोलन की दो धाराएं स्थापित की गयीं। कॉमरेड चारू मजुमदार की उत्पीड़क भारतीय प्रशासन द्वारा पुलिस हिरासत में हत्या कर दी गयी और किडनी बेकार हो जाने से गंभीर बीमारी से पीड़ित होकर 1982 में कॉमरेड कन्हाई चटर्जी ने शहादत को अंगीकार किया। सन् 2004 में दो क्रान्तिकारी धाराओं सीपीआई (एम-एल) (पीपुल्स वार) और एमसीसी (माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर) का विलय हुआ और एक नये दल कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओवादी) का गठन हुआ। उपरोक्त दो संस्थापक नेताओं के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए सीपीआई (माओवादी) हाथों में हथियार लेकर भारतीय प्रतिक्रियावादी प्रभुसत्ता को उखाड़ फेंकने और भारतीय जनता की विजय प्राप्त करने के लिये अभी भी संघर्षरत है।

रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट का दृढ़विश्वास है कि आम भारतीय नागरिक हमारे शत्रु नहीं हैं। वस्तुत: वे वंचित और पददलित लोग हैं जो भारत की अर्ध सामन्ती-अर्ध औपनिवेशिक प्रभुसत्ता के तहत बुरी तरह उत्पीड़ित हैं।

## संयुक्त वक्तव्य:

दोनों संगठनों के सभी पहलुओं पर निरन्तर दो दिनों के सत्र में गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करने के बाद, आज 22 अक्टूबर, 2008 को कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया (माओवादी) और रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट सर्वसम्मति से निम्नलिखित समझौता घोषित करते हैं:

1. यह कि, दोनों पक्ष दोनों देशों की प्रभुसत्ता का सम्मान व समर्थन करेगें। (भारत की प्रभुसत्ता और मणिपुर की प्रभुसत्ता)
2. यह कि, दोनों पक्ष अपने साझा शत्रु भारतीय प्रतिक्रियावादी और उत्पीड़क शासन को उखाड़ फेंकने के मुक्ति संग्रामों में एक दूसरे को सम्पूर्ण नैतिक और राजनीतिक सर्मथन प्रदान करेंगे।
3. यह कि, दोनों पक्ष दोनों देशों की यानी मणिपुर और भारत की ऐतिहासिक तौर पर सुनिश्चित की गयी भूभागीय अखण्डता को स्वीकार करेंगे और उसका सम्मान करेंगे।

| | |
|---|---|
| **द्वारा हस्ताक्षरित,** | **द्वारा हस्ताक्षरित** |
| (आलोक) | (एस. गुनेन) |
| **पोलिटब्यूरो सदस्य** | **सेक्रेटरी जरनल** |
| **सीपीआई ( माओवादी )** | **आर.पी.एफ** |
| **की ओर से** | **की ओर से** |

# एकल विद्यालय : आदिवासी समाज के सम्प्रदायीकरण की गहरी साजिश का हिस्सा!

पिछले कुछ सालों से आदिवासी अंचल में अनौपचारिक शिक्षण-पद्धति के आधार पर 'एकल विद्यालय' के नाम से कई गांवों में स्कूलें चलाई जा रही हैं। यह संघ (आरएसएस - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) 'गिरोह' से सम्बद्ध 'वनबन्धु परिषद' नामक छद्म संगठन द्वारा चलाया जा रहा है। हाल ही में राजनांदगांव जिले की मोहला तहसील में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 'एकल विद्यालय' के संचालन में 'रायपुर एलायज एण्ड स्टील लिमिटेड' नामक एक दलाल पूंजीपति कम्पनी सहयोग कर रही है। गौरतलब है कि यह वही कम्पनी है जो पल्लामाड़ क्षेत्र में लोहा खदान खोलकर जल-जंगल-जमीन का विनाश कर रही है, जिसके खिलाफ उस क्षेत्र के मूल निवासी संघर्षरत हैं। वनांचल से हर दिन सैकड़ों करोड़ों रुपए की खनिज संपदा का दोहन करने वाली यह कम्पनी अपने मुनाफे में से थोड़ा पैसा खर्च कर 'जन कल्याण' के क्षेत्र में इस तरह 'योगदान' करने का नाम कमा रही है। साथ ही, वह इसके जरिए भविष्य में पूंजी की पूरी वफादारी से सेवा कर सकने वाली पीढ़ी को भी तैयार कर रही है।

यह बात सभी को मालूम है कि संघ का भगवा आतंकी गिरोह अपनी हिन्दू साम्प्रदायिकता के एजेण्डे के तहत कई संगठनों को खड़ा करता है। हरेक संगठन का अपना निश्चित कार्यक्रम होता है। विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी), बजरंग दल, स्वदेशी जागरण मंच, अभिनव भारत, वनवासी कल्याण आश्रम, शिवसेना, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे).... ऐसे देश भर में 170 से ज्यादा संगठन मौजूद हैं, जो संघ गिरोह द्वारा संचालित किए जाते हैं। भाजपा इसका संसदीय संगठन है। जहां पर भी इसकी सरकार बनती है, वह सरकारी पैसे व सत्ता का दुरुपयोग करते हुए हिन्दुत्व एजेण्डे को मजबूती से आगे बढ़ाने की कोशिश करती है। उदाहरण के लिए पूरे छत्तीसगढ़ के हर ग्राम पंचायत में संघ गिरोह का मुखपत्र 'पांचजन्य' जो धार्मिक विद्वेष और नफरत फैलाने के लिए बदनाम है, का मुफ्त वितरण किया जाता है। इसका पूरा पैसा रमन सरकार जनता की कमाई से चुकाती है। शिक्षा के जरिए साम्प्रदायिकता के बीज बोना संघ गिरोह का एक खास तरीका है। इसके लिए इतिहास के साथ छेड़छाड़ तथा पाठ्य पुस्तकों में धार्मिक कट्टरवाद के अंश जोड़ने के हथकण्डे अपनाए जाते हैं। इसी साजिश के तहत छत्तीसगढ़ में वनबंधु परिषद नामक संगठन को आगे लाया गया। एकल विद्यालय फाउण्डेशन ऑफ इंडिया, जोकि संघ गिरोह से ही जुड़ा एक और संगठन है, द्वारा प्रकाशित किताबों के जरिए एकल विद्यालयों में शिक्षण के काम को अंजाम दे रही है।

## एकल विद्यालय का संचालन

हरेक विद्यालय एक 'आचार्य' द्वारा संचालित किया जाता है। यह गांव से ही कोई पढ़ा-लिखा आदिवासी युवक या युवती होता/होती है, जिसे 500 रुपए प्रति महीना मानदेय दिया जाता है। आचार्य को सामान्य प्रशिक्षण दिया जाता है। वह गांव के ऐसे बच्चों को जिनकी उम्र 5 से 12 साल के बीच हो, जो किन्हीं कारणों से नियमित शाला जाने से वंचित हों, इकट्ठा करके विद्यालय चलाता है। एक बच्चा मिलने से भी उसे इस विद्यालय में पढ़ाना है, ऐसा आचार्यों को प्रेरित किया जाता है। यह विद्यालय आचार्य के घर पर या फिर सरकारी शाला भवन में कहीं भी चलाया जाता है। नियमित शाला जाने वाले बच्चों को भी इसमें शामिल कर लिया जाता है। ऐसी सूरत में हर दिन नियमित शाला लगने से पहले ही यह पढ़ाई पूरी कर ली जाती है। प्रति दिन 3 घण्टे की कक्षा चलती है जिसमें पहली से तीसरी तक की पढ़ाई होती है। इसका समय कोई भी हो सकता है। आचार्य अपनी सुविधा के अनुसार कभी भी कक्षा लगाता है।

10 विद्यालयों को मिलाकर एक उपसंच होता है। राजनांदगांव जिले के मोहला संच या संकुल में तीन उपसंच हैं - सोमाटोला, गोटाटोला और कंदाड़ी। कंदाड़ी उपसंच में 10 विद्यालय हैं। 1) मरकाटोला, 2) कांडे, 3) धोबेडंड, 4) रामगढ़, 5) जंगलटोला, 6) हिडकोटोला, 7) मरदेल, 8) हथरेल, 9) पारडी और 10) जबकस्सा। प्रत्येक उपसंच और संच के लिए एक-एक प्रमुख नियुक्त किया जाता है। हर माह में एक बार संच केन्द्र में सभी आचार्यों की बैठक ली जाती है। इस बैठक में पढ़ाई की पूरी रिपोर्ट ली जाती है और आचार्यों को पढ़ाने के तौर-तरीकों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। उनकी तकलीफों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। संघ की विचारधारा पर भाषण रखे जाते हैं। कुल मिलाकर बेरोजगार या अल्पशिक्षित आदिवासी युवकों को आचार्य बनाकर फिर उन्हें संघ गिरोह के मंजे हुए 'प्रचारक' बनाने की घिनौनी और भयानक प्रक्रिया जारी है। इस प्रकार आदिवासियों के अंदर अपना सामाजिक आधार तैयार करने की फिराक में है संघ गिरोह।

## बच्चों के शिक्षण में षड़यंत्रकारी पद्धति

कक्षा की शुरूआत में तीन बार 'ओम' का उच्चारण करवाते हैं। उसके बाद फिर वंदना एवं मंत्रों का दौर शुरू हो जाता है। इसमें गायत्री मंत्र, एकात्मता स्तोत्रम, सरस्वती वंदना, आरती जैसे कई हिंदू धार्मिक मंत्रों का समावेश है। एकल विद्यालय फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'खेलें कूदें नाचें गाएं' एक मात्र पुस्तक है जिससे तीनों कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाया जाता है। इसमें पाठ इतने छोटे-छोटे हैं कि एक ही पुस्तक के अंदर कई सारे पाठ समाहित हो चुके हैं।

'खेलें कूदें नाचें गाएं' का नाम सहज ही दिलचस्प व रोचक लगता है। इसे देखकर हम धोखा खा जाते हैं कि यह

शायद बच्चों के मानसिक विकास का बढ़िया खयाल रखते हुए लिखी गई किताब होगी। लेकिन इसके पन्ने पलटकर पढ़ने लगेंगे तो इसमें साम्प्रदायिकता की गहरी साजिश की बू आने लगती है। यह पूरी किताब हिंदू साम्प्रदायिकता के जहर से भरी हुई है। खेल कूद के पाठों की आड़ में भी बड़े ही सुनियोजित तरीके से साम्प्रदायिकता की सीख दी जाती है।

129 पृष्ठों वाली इस पुस्तक के करीब 90 पृष्ठों में वंदना, मंत्र, कविता और कहानियां छापी गई हैं। ये सारे साम्प्रदायिकता, असत्य व अवैज्ञानिकता पर आधारित हैं। आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों को पढ़ाने के उद्देश्य से छापी गई इस पुस्तक में संस्कृत भाषा के मंत्र व वंदना शामिल करना आदिवासियों की संस्कृति पर सीधा-सीधा हमला है। आदिवासियों को हिंदू बताने वाली संघ की साजिश का ही हिस्सा है यह। हिंदू देवी-देवताओं को आदिवासियों पर थोपने के षड्यंत्र के तहत कच्ची उम्र में ही आदिवासी बच्चों को ये सब सिखाए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए सोमवार से लेकर रविवार तक कौन-सा वार किस भगवान का वार है, इसे इस पुस्तक की एक कविता में बताया गया है। जाहिर सी बात है कि इनमें से कोई भी भगवान आदिवासियों का नहीं है, बल्कि सारे हिंदुओं के हैं।

दरअसल आदिवासी मूलतः प्रकृति-पूजक हैं। और हिन्दू धर्म, इस्लाम या ईसाई धर्म से उनका कोई वास्ता नहीं है। एक धर्म निरपेक्ष देश में किसी धर्म विशेष के देवी-देवताओं के बारे में पाठ्यांशों में जोड़ना ही अपराध है। आदिवासी संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और विशिष्ट पहचान को ही खारिज कर उन्हें मनुवादी हिंदू चातुर्वर्णीय व्यवस्था में एक जाति के बतौर सम्मिलित करने की साजिश है यह। अब तक गायत्री, बाबा बिहारी दास आदि हिंदू धार्मिक संस्थाएं आदिवासी गांवों में यही काम करते रहे हैं। जो इनके धर्म को स्वीकारता है उसे 'मालाधारी' के नाम से एक अलग समूह में जोड़कर बाकी लोगों को जो इसमें शामिल नहीं होते, 'कतवा' या 'अस्पृश्य' ठहराकर आदिवासी समाज में ऊंच-नीच की पद्धति लागू करने का घिनौना खेल इन धार्मिक संस्थाओं ने काफी पहले ही शुरू किया। इस पृष्ठभूमि में आदिवासी समाज में आपसी संघर्ष होते रहे हैं। इस काम को आसान बनाने के लिए नन्ही उम्र में ही आदिवासियों को इस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है ताकि उन्हें मानसिक तौर पर मनुवादी हिंदू या ब्राह्मणवादी विचारधारा के गुलाम बनाया जा सके और अपने साम्प्रदायिक फासीवाद के एजेण्डे को आगे बढ़ाने में उन्हें 'हिंदू राष्ट्र के सैनिक' बनाया जा सके।

कहानियों के नाम से इस पुस्तक के जरिए बच्चों के दिमाग में धार्मिक विद्वेष के बीज बोने के प्रयास किए गए हैं। इन कहानियों में मुसलमान, ईसाई आदि अन्य धर्मों के खिलाफ नफरत पैदा की जाती है। वहीं हिंदू धर्म और हिंदू धर्म का अनुसरण करने वालों की श्रेष्ठता का बखान किया जाता है। इसके लिए इतिहास के साथ मनमाने ढंग से छेड़छाड़ किया गया और झूठों का खुलकर सहारा लिया गया। यहां तक कि अंग्रेजी उपनिवेशी शासन के खिलाफ संघर्ष करने वाले आदिवासी नायक बिरसा मुण्डा को चर्च (ईसाई धर्म) के खिलाफ संघर्ष करने वाले हिंदू नायक के रूप में चित्रित करने का दुस्साहस भी किया गया है।

छूआछूत की प्रथा जोकि मानवजाति के इतिहास पर कलंक है, सिर्फ हिन्दू धर्म की 'विशेषता' है। लेकिन संघ गिरोह को यह साधारण विषय है क्योंकि वह हिंदू धर्म को सिर आंखों पर उठाता है। इसलिए इन कहानियों में जहां-जहां दलितों की महार जाति का जिक्र किया गया, वहां-वहां कोष्टक में 'अछूत' शब्द जोड़ दिया गया। इस पूरी पुस्तक में कहीं भी ऐसी कोई टिप्पणी नहीं है जोकि महारों को 'अछूत' ठहराने को गलत और अपराध बताती हो। इस प्रकार यह किताब छूआछूत की कुप्रथा पर आधारित जातिवाद का समर्थन करती है। उसे यूं ही टिकाए रखने की हिमायत करती है। आदिवासी समाज के अंदर अब तक जातिगत भेदभाव नहीं हैं या न के बराबर हैं। लेकिन जैसे-जैसे मैदानी हिंदू समाज का सम्पर्क घनिष्ठ होता जा रहा है, वैसे-वैसे आदिवासियों में भी ऊंच-नीच वाले भेदभाव पैदा हो रहे हैं। इस सांस्कृतिक व सामाजिक पतन की प्रक्रिया को और गति देने की घिनौनी कोशिश एकल विद्यालय के जरिए की जा रही है। आदिवासी समाज को आगे आकर इस पतन से खुद को बचाने की फौरी जरूरत है।

आदिवासी इलाकों में संघ गिरोह की घुसपैठ लगभग दो दशक पहले शुरू हुई जब 'वनवासी कल्याण आश्रम' ने इन इलाकों में अपनी गतिविधियां शुरू की थीं। धर्म परिवर्तन की आड़ में संघ गिरोह आदिवासी समाज को तोड़ने की घिनौनी कोशिश कर रहा है। आज जहां ईसाई मिशनरियों को 'धर्म परिवर्तन' के लिए दोषी ठहराया जाता रहा है, वहीं संघ गिरोह के संगठनों द्वारा कराए जा रहे 'धर्म परिवर्तन' को 'घर वापसी' का नाम दिया जा रहा है। संघ के संगठनों द्वारा यह प्रचार किया जाता है कि आदिवासी वे हिंदू हैं जो मुसलमान राजाओं द्वारा जबरदस्ती मुसलमान बनाए जाने के डर से जंगलों में भाग गए थे तथा कई सदियों तक जंगलों में रहने के कारण उनका हिंदू सामाजिक मुख्यधारा से संपर्क कट गया। इस प्रकार संघ गिरोह दो फायदे हासिल करना चाहता है। एक तो यह है कि इससे इस गलतफहमी को बढ़ावा मिलता है कि इस्लाम को तलवार की नोंक पर फैलाया गया था। दूसरा यह कि भारतदेश के हिंदू राष्ट्र होने की उनकी परिकल्पना को मजबूती मिल सकती है, क्योंकि उसके मूल रहवासी भी हिंदू हैं। यह सब इसलिए क्योंकि हिंदू साम्प्रदायिक ताकतें अच्छी तरह जानती हैं कि आदिवासियों का हिंदूकरण करना उनकी चुनावी राजनीति के लिए बेहद जरूरी है। आखिर देश की आबादी में आदिवासियों की 8 प्रतिशत हिस्सेदारी जो है। इस पूरी साजिश का हिस्सा ही है 'एकल विद्यालयों' के जरिए आदिवासी बच्चों को दी जा रही यह साम्प्रदायिक शिक्षा।

खेल-खेल में ही हिंदू साम्प्रदायिकता, दूसरे धर्मों के प्रति विद्वेष, जातिगत ऊंच-नीच की भावनाएं तथा राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के प्रति नफरत पैदा करना इस पुस्तक की खासियत है। इसका एक उदाहरण है 'कश्मीर किसका है' वाला खेल। इस खेल के तहत बच्चे 'कश्मीर मेरा है, मेरा है' चिल्लाते हुए एक दूसरे से लड़ते हैं। मतलब जो जीतता है कश्मीर उसका हो जाता है। "कश्मीर कश्मीरियों का है, कश्मीर के भविष्य का फैसला करने का अधिकार सिर्फ कश्मीरियों का है" - इस जनवादी सोच को इस पुस्तक में जगह मिल ही नहीं सकती क्योंकि संघ गिरोह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का सबसे बड़ा और कट्टर दुश्मन है। दरअसल वह हर किस्म के जनवादी मूल्यों व संघर्षों का दुश्मन है। हिटलर और मुस्सोलिनी का फासीवाद उसका आदर्श है। अपने 'आदर्श' को बच्चों के मन में रोपने की बड़ी साजिश के तहत ही खेल-खेल में ही फासीवाद के बीज बो रहा है। सहज ही खेल-खेल में इस तरह के फासीवादी विचारों से लैस होने वाली पीढ़ी में क्रांतिकारी, जनवादी व राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के प्रति नफरत की भावनाएं जम जाएंगी। 'खुद की उंगली से आंख फोड़वाने' की शासक वर्गों की साजिश इस रूप में एक प्रकार से साकार भी हो सकती है।

## इससे खतरा क्या है?

आदिवासियों का हिंदूकरण करने के बाद संघ गिरोह द्वारा उनका उपयोग अपने तथाकथित हिंदू राष्ट्र के दुश्मनों, यानी मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ किया जाता है। गुजरात और कंधमाल इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। गुजरात में हमने देखा है कि वहां पर इन साम्प्रदायिकतावादी ताकतों द्वारा किस तरह से वहां के आदिवासियों का उपयोग 'हिंदू राष्ट्र के सैनिकों' की तरह किया गया था। हाल ही में कंधमाल में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा में भी ईसाई धर्म को अपनाने वाले आदिवासियों का कत्लेआम करने और उनकी घर-सम्पत्ति को तबाह करने में संघ गिरोह द्वारा आदिवासियों का भी उपयोग किया गया। सलवा जुडूम के नाम से दक्षिण व पश्चिम बस्तर के इलाकों में केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा चलाए गए दमन अभियान में भी हिंदू साम्प्रदायिकतावादी संगठनों के प्रभाव में आ चुके कुछ आदिवासियों की भी भागीदारी थी। गायत्री, रुक्मिणी आश्रम, चप्का बाबा आदि संघ गिरोह द्वारा पाले-पोसे जाने वाले संगठनों के लोगों ने आदिवासियों में से एक तबके को अपने पक्ष में कर क्रांतिकारी आंदोलन में मजबूती से खड़े आदिवासियों के खिलाफ हमलों में शामिल किया। आज संघ गिरोह के निशाने पर धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ-साथ देश में जारी सभी जनवादी व क्रांतिकारी आंदोलन भी हैं। चूंकि आज देश में क्रांतिकारी संघर्षों के केन्द्र-बिंदु में आदिवासी अंचल ही हैं, इसलिए आदिवासियों का हिंदूकरण व फासीवादीकरण कर उनमें से एक तबके को इन संघर्षों के खिलाफ खड़ा करना और उनका दमन करना उसका मूल मकसद है। चूंकि ये इलाके खनिज व अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं के लिए भी सुविख्यात है, इसलिए इन इलाकों में अपना एक सामाजिक आधार तैयार कर क्रांतिकारी संघर्षों का सफाया करने से इनका दोहन भी आसान हो जाएगा। संघ गिरोह के पीछे खड़ी दलाल पूंजीवादी ताकतों को यह रणनीतिक फायदा होगा। इसलिए अब यह समझना काफी आसान होगा कि वनबंधु परिषद द्वारा संचालित एकल विद्यालयों के लिए 'रायपुर एलायज एण्ड स्टील लिमिटेड' क्यों पैसा 'दान' कर रही होगी।

## विरोध में आगे आओ!

आदिवासी समुदायों और अन्य जनवादी संगठनों को 'एकल विद्यालय' के संचालन के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। सरस्वती शिशु मंदिरों के जरिए समाज के साम्पदायीकरण का काम पहले से जारी है। ये साम्प्रदायिक ताकतें अलग-अलग नाम बदलकर अलग-अलग रूपों में आदिवासी समाज के अंदर धार्मिक उन्माद के बीज बोने की कोशिश करती हैं। इसका विरोध करना जरूरी है ताकि आदिवासियों की भाषा, संस्कृति व अस्मिता को अक्षुण्ण रखा जा सके और विकसित किया जा सके। ✶

# नाबालिग से गैंगरेप किया पुलिस वालों ने सत्यशोधक समिति का अरोप

### 29 मार्च 2009 को गड़चिरोली से एक समाचारपत्र 'लोकमत समाचार' में छपी खबर

*गड़चिरोली के पावरवेल ग्राम की एक नाबालिग आदिवासी लड़की पर पांच पुलिसकर्मियों द्वारा सामूहिक बलात्कार किए जाने का सनसनीखेज आरोप स्वयंसेवी संगठनों की सत्यशोधक समिति ने लगाया है। मामले की जांच कर लौटी सत्यशोधक समिति ने आज गड़चिरोली में पत्रपरिषद लेकर यह आरोप लगाया। समिति ने मामले की पृथक जांच कराने तथा दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की है। गत दिनों पावरवेल ग्राम में नक्सली मुठभेड़ के बाद पुलिस ने एक आदिवासी लड़की को गिरफ्तार किया था, जबकि लड़की के परिजन उसे निरपराध नाबालिग कह रहे थे। इन खबरों का संज्ञान लेकर बाल अधिकार तथा मानवाधिकारों से जुड़े लोगों ने सत्यशोधक समिति का गठन किया, जिसने पावरवेल, तुडमेल ग्राम का दौरा किया। समिति के सदस्य पीड़ित लड़की से मिले। इसके बाद उन्होंने जिला मुख्यालय में कहा कि उस लड़की पर पांच पुलिसवालों ने बलात्कार किया है।*

*समिति में महारूख येदानवाला, आईएपीएल के अधिवक्ता विजय हिरेमठ, अधिवक्ता अनिल काले, महिला हिंसा विरोधी समिति नागपुर की शोमा सेन, एस. अनिता, भारतीय महिला फेडरेशन की आशा मोकाशो शामिल थीं। उन्होंने बताया कि पुलिसवालों ने पीड़ित लड़की को रात भर बंद रखा। अगले दिन पांच पुलिसवाले लड़की को जंगल ले गए और बलात्कार किया। उसे धमकाया गया कि किसी से न कहे। लेकिन उसने चंद्रपुर जेल अधीक्षक से शिकायत कर दी। समिति अब रिपोर्ट को मानवाधिकार आयोग व बाल अधिकार आयोग को सौंपेगी।*✶

# केसेकोडी 'हत्याकाण्ड' का झूठ –
# क्रांतिकारी आंदोलन पर रमन सरकार के दुष्प्रचार–युद्ध का हिस्सा!

11 अगस्त 2009 को कांकेर जिले के कोयलीबेड़ा थाना क्षेत्र में आने वाले ग्राम केसोकोडी में नक्सलवादियों द्वारा एक ही परिवार के 8 सदस्यों की कथित सामूहिक हत्या की खबर ने पूरे प्रदेश में हड़कम्प मचा दिया था। खबर में यह बताया गया था कि मारे गए लोगों में छह महिलाएं थीं जिनमें दो साल की बच्ची से लेकर 70 साल की बूढ़ी औरत शामिल थी। सच्चाई और ईमानदारी के बजाए झूठ, उत्तेजना और सनसनी के बल पर ही पलने वाले मीडिया ने इस मनगढ़ंत कहानी में अपनी तरफ से मिर्च–मसाला लगाकर चौबीसों घण्टे प्रसारित किया। केसेकोडी गांव का निवासी रामायण विश्वकर्मा के कथित बयान को अपनी जानकारी का एक मात्र स्रोत बनाकर प्रदेश के पुलिस मुखिया विश्वरंजन ने इसे हमारी पार्टी पर विष वमन करने की अपनी चिर–परिचित मुहिम में ईंधन की तरह इस्तेमाल किया। खबर मिलते ही रायपुर में प्रेस वार्ता का आयोजन कर इसका दोष हमारी पार्टी पर मढ़ दिया। खण्डन–निंदा का सिलसिला इतना जोर शोर से चलता रहा कि किसी को इस खबर की पुष्टि करने की जरूरत तक महसूस नहीं हुई। क्या मंत्री क्या नेता, सबके सबने हमारी पार्टी पर कीचड़ उछालने की जी–तोड़ कोशिश की। प्रदेश के खबरदार अखबार 'छत्तीसगढ़' के सम्पादक सुनीलकुमार ने इस भ्रामक हत्याकाण्ड पर सम्पादकीय लिखते हुए कहा कि वे अब नक्सलवादियों और सरकार के बीच वार्ता की हिमायत करना बंद करेंगे। उनका इशारा साफ है – वे अब क्रांतिकारी आंदोलन का पुलिस–अर्द्ध सैनिक बलों द्वारा दमन का समर्थन करेंगे। एक और अखबार में सम्पादकीय सुर्खी थी – 'नक्सलियों ने जीवितों को जला दिया!' रायपुर के एक नामी पत्रकार ने बीबीसी रेडियो पर बोलते हुए इस अंदाज में हमारी पार्टी को इस हत्याकाण्ड के लिए जिम्मेदार ठहराया था मानों वह खुद उसका चष्मदीद गवाह हो। खुद को 'लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ' मानने वाले मीडिया का असली चरित्र क्या है, इसे अच्छी तरह से समझने–जानने का फिर एक बार मौका मिला है इस पूरे प्रकरण से।

अगले दिन पुलिस के हवाले से खबरों में यह बताया गया कि नक्सलवादियों के हमले की आशंका को देखते हुए 48 घण्टे बाद भी पुलिस घटनास्थल पर पहुंची ही नहीं थी। लेकिन इसके बावजूद भी पुलिस–प्रशासन बराबर दावे करते रहा कि इस 'हत्याकाण्ड' को हमारी ही पार्टी ने अंजाम दिया। पर सच्चाई सामने आने में देर नहीं लगी। और वो सच्चाई यह है कि केसेकोडी में कोई हत्याकाण्ड हुआ ही नहीं था। जिन 8 लोगों की मौत होने की बातें की गई थीं दरअसल वे सभी जीवित और सकुशल हैं। इसके बाद सबकी बोलती बंद होनी चाहिए थी। जिन–जिन लोगों ने निराधार ही हमारी पार्टी पर दोष मढ़ने की कोशिश थी और अनाप–शनाप लिखा व कहा था, उन सभी को सार्वजनिक तौर पर माफी मांगनी चाहिए थी। लोकतांत्रिक प्रक्रिया तो ऐसी ही होनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अपने इस निर्लज्ज व जहरीले दुष्प्रचार अभियान को और भी आगे बढ़ाते हुए यह बताया गया कि इस झूठी खबर को हमारी पार्टी ने ही जानबूझकर फैलाया था ताकि पुलिस को फंसाकर हमला किया जा सके। आम जनता को भी अच्छी तरह मालूम है कि चाहे किसी भी मंशा से इतना नीचतापूर्ण प्रचार करने की सिर्फ पुलिस ही सोच सकती है। ईटीवी से लेकर सभी टीवी चैनलों और अखबारों ने अगले दिन इस झूठ को भी हाथों हाथ उठा लिया और पूरी ताकत के साथ प्रसारित व प्रचारित किया। पुलिस, प्रशासन, नेता और मीडिया – सभी ने एक सुर में इस झूठे प्रचार में भाग लिया। अगर आज गोबेल्स जिंदा होता तो वह भी शायद छत्तीसगढ़ में गढ़ी जा रही हिमालय से भी बड़ी झूठी कहानियों को देख व सुनकर शर्मशार हो जाता!

इस पूरे प्रकरण पर हमारी पार्टी की स्थानीय कमेटी ने गहराई से छानबीन की। वास्तव में केसेकोडी का निवासी रामायण विश्वकर्मा पहले से पुलिस का दलाल था। वह अरसे से पुलिस की मुखबिरी कर रहा था जिसके बारे में ग्रामीण और हमारे पार्टी–कार्यकर्ता वाकिफ नहीं थे। उसके परिवार के कुछ अन्य सदस्य भी पुलिस की मुखबिरी करते हैं। यह सच है कि इस गांव में जमीन को लेकर कई आपसी विवाद हैं। लेकिन इस परिवार में भाई–भाई के बीच ऐसा कोई विवाद नहीं था, जैसा कि रामायण के हवाले से मीडिया ने प्रचारित किया था। जबसे झूठी रिपोर्ट लिखवाई तबसे रामायण पुलिस की शरण में है, जबकि उसका चचेरा भाई भजन भी पुलिस की दलाली में लिप्त है। इस परिवार के सभी सदस्यों से जनता के समक्ष पूछताछ करने के बाद पैसे के लालच में फंसाकर लोगों को मुखबिर बनाने की पुलिसिया साजिश का भण्डाफोड़ हो गया। इस परिवार की पुलिस के साथ पहले से ही सांठगांठ थी। रामायण के साथ–साथ भजन भी अक्सर थाने में जाकर उनके और आसपास के गांवों में क्रांतिकारी गतिविधियों के बारे में बताया करता था। उसने इस बात को कबूल भी किया। जन सुनवाई के बाद व्यापक जनता की सहमति से भजन को हमारे कॉमरेडों ने मौत के घाट उतार दिया।

11 अगस्त को रामायण द्वारा कोइलीबेड़ा थाने में सामूहिक हत्याकाण्ड की झूठी रिपोर्ट लिखवाना बहुत ही बड़े व घिनौने षड़यंत्र का हिस्सा था। इसके पीछे प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों की मंशा यह थी कि ऐसे दुष्प्रचार के जरिए हमारी पार्टी को जनता से अलग–थलग किया जाए। देश के कोने–कोने में हमारी पार्टी की अगुवाई में तेजी से आगे बढ़ रहे क्रांतिकारी आंदोलन से घबराए हुए लुटेरे शासक वर्गों ने प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह और गृहमंत्री चिदम्बरम के नेतृत्व में तथा अमेरिकी साम्राज्यवादियों के निर्देश पर फासीवादी व चौतरफा हमले की साजिश रची। इस

**( शेष पेज 26 में... )**

# मानपुर हमले (‘आपरेशन विकास’) – रमन सरकार की दमनकारी नीतियों और सिंगारम व कोकावाड़ा नरसंहारों का जवाब!

12 जुलाई 2009 का दिन क्रांतिकारी जनयुद्ध के इतिहास के पन्नों में लाल अक्षरों से लिखा जाएगा। उस दिन राजनांदगांव जिले के मानपुर इलाके में हमारी पीएलजीए की एक विशेष कम्पनी ने हत्यारे व आतंकी पुलिस बलों पर सिलसिलेवार व शानदार हमलों को अंजाम दिया। मानपुर के आसपास तीन जगहों पर हुए इन हमलों में जिला एसपी विनोदकुमार चौबे, दो टीआई, एक एएसआई समेत कुल 30 पुलिस वालों का सफाया किया गया और कई अन्य घायल हुए। हमारी तरफ से कोई भी नुकसान नहीं हुआ। पुलिस अफसरों का यह दावा कि इस घटना में 10 से ज्यादा नक्सलवादी मारे गए हैं, एक सफेद झूठ ही नहीं, बल्कि अपने बलों के बुरी तरह गिर चुके मनोबल को ऊपर उठाने का विफल प्रयास है। 25 अत्याधुनिक हथियार व अन्य सैन्य साजो सामान जन सैनिकों के हाथों में आ गए। इसमें 7 एके-47 रायफलें, 14 इंसास रायफलें, 3 एसएलआर, एक 2 इंची मोर्टार, 15 हथगोले, 22 बुलेटप्रूफ जैकेट, 14 हेलमेट, 3 वाकीटाकी सेट आदि शामिल हैं। इस घटना से बौखलाई हुई छत्तीसगढ़ की रमन सरकार तुरंत ही सैकड़ों सीआरपीएफ और एसटीएफ को रवाना कर जनता पर आतंकी हमले करने की साजिश रच रही है। खासकर अपना वफादार सेवक एसपी वीके चौबे के मरने पर वह बुरी तरह दिग्भ्रमित है। ‘आपरेशन विकास’ के नाम से एरिया ऐम्बुश के रूप में संचालित इन सिलसिलेवार हमलों को सफल बनाने वाले पीएलजीए के बहादुर कमाण्डरों, जांबाज लाल योद्धाओं और मानपुर इलाके की संघर्षशील जनता का हमारी स्पेशल जोनल कमेटी लाल-लाल अभिनन्दन पेश करती है।

## क्यों किए ये हमले?

रमन सरकार ने खासकर दोबारा सत्ता पर काबिज होने के बाद से जनता और जन आंदोलनों को निशाना बनाकर अपनी फासीवादी दमनकारी नीतियों में उल्लेखनीय तेजी लाई है। झूठी मुठभेड़ की घटनाओं में इजाफा करने के साथ-साथ एक के बाद एक आदिवासियों के नरसंहारों का सिलसिला शुरू किया। 10 जनवरी को सिंगारम में 18 आदिवासी नौजवानों का कत्लेआम कर पूरी निर्लज्जता के साथ उसे ‘मुठभेड़’ का नाम दिया। अभी-अभी बस्तर के तोंगपाल के निकट हमारी पीएलजीए द्वारा किए गए एक सफल ऐम्बुश के बाद बौखलाहट में 7 निर्दोष आदिवासियों को मौत के घाट उतार कर उन्हें भी ‘नक्सली’ बताया गया। इन नरसंहारों को लेकर स्थानीय जनता और जनवादी ताकतों द्वारा पुरजोर विरोध किए जाने के बावजूद भी अभी तक किसी पुलिस अधिकारी को गिरफ्तार करना तो दूर, निलंबित तक नहीं किया। हालांकि कांग्रेस ने या यूं कहें कि कुछ कांग्रेसियों ने नरसंहारों को लेकर चंद दिनों तक बयानबाजी की लेकिन दोषियों को दंडित करने की मांग नहीं उठाई क्योंकि क्रांतिकारी आंदोलन के दमन के मामले में कांग्रेस और भाजपा में कोई खास फर्क नहीं है। जहां रमन सरकार ने हाल ही में हमारी पार्टी समेत छह जन संगठनों पर लगे प्रतिबंध को जारी रखते हुए फिर से प्रतिबंध की घोषणा की, वहीं केन्द्र की यूपीए सरकार ने हमारी पार्टी को आतंकवादी संगठन घोषित करते हुए प्रतिबंध लगाया। आज मानपुर हमलों के बाद हाय तौबा मचाते हुए कांग्रेस भले ही रमनसिंह के इस्तीफे और प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग कर रही हो, उसका इशारा जन आंदोलनों के और अधिक दमन की तरफ ही है। सिंगारम, तोंगपाल जैसे नरसंहारों को बंद करने और दोषियों को सजा देने की मांग कोई नहीं उठा रहा है।

रमन सरकार केन्द्र से अतिरिक्त अर्द्ध-सैनिक बटलियनें देने की लगातार मांग कर रही है। गृहमंत्री चिदंबरम भी रमन सरकार की मांगों को बिना किसी लागलपेट के पूरा करते जा रहा है। इस प्रकार अविभाजित बस्तर, राजनांदगांव और सरगुजा के जंगलों को सीआरपीएफ की छावनियों में तब्दील किया जा रहा है। गांवों पर हमले, घरों को जलाना, महिलाओं के साथ पुलिस व केन्द्रीय बलों द्वारा सामूहिक बलात्कार, झूठी मुठभेड़ें, सामूहिक हत्याएं और लूटपाट रोजमर्रा की बात हो गई है।

अपार प्राकृतिक सम्पदाओं की धरती छत्तीसगढ़ को दलाल पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट की चारागाह में तब्दील करने की मंशा से रमन सरकार ने अपने छह साल के कार्यकाल में कई एमओयू कर डाले हैं। दलाली के एवज में वह जनता की सम्पदाओं को औने-पौने दामों पर बेच रही है। लाखों जनता, खासकर आदिवासियों के विस्थापन की कीमत पर बड़े बांधों, बड़ी परियोजनाओं और खदानों को शुरू करती जा रही है। उसने अपनी उद्योग नीति व खनिज नीति भी इसी लूटकारी व दलालखोर योजना के अनुरूप तैयार किया। जनता के विस्थापन व जन संसाधनों की लूट के खिलाफ उठ खड़े होने के कारण वह हमारी पार्टी को तथा हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन को सबसे बड़ा खतरा मानते हुए दक्षिण व पश्चिम बस्तर क्षेत्र में सलवा जुडूम के नाम से बर्बर फासीवादी दमन अभियान शुरू किया। **एक शब्द में कहा जाए तो रमन सरकार के शासन का मतलब लूट, दमन, नरसंहार व तबाही के अलावा कुछ नहीं है।**

खासकर राजनांदगांव जिले के मानपुर इलाके में पिछले फरवरी महीने से रमन सरकार ने दमन अभियान में तेजी लाई। चूंकि मानपुर इलाका अनमोल खनिज संपदा से समृद्ध इलाका है, इसलिए यहां पर भी दलाल पूंजीपतियों की गिद्धदृष्टि लगी हुई है। पल्लामाड़ इलाके में दलाल पूंजीपतियों की कई कम्पनियां लाइन लगाए हुई हैं ताकि इस क्षेत्र के जल-जंगल-जमीन को हड़प लिया जा सके। इसके खिलाफ खड़े होने के कारण

ही खड़गांव, सीतागांव और मदनवेड़ा में पुलिस चौकियां खोल दीं जहां पर सैकड़ों पुलिस बलों को तैनात किया गया। इन पुलिस बलों ने जनता पर आतंक का नंगा नाच शुरू किया। 31 मई को खड़गांव के पास जक्के और घोड़ागांव गांवों में वहशियाना हमला कर दो ग्रामीणों को गोली मार दी जिससे वे बुरी तरह घायल हुए। महिलाओं के साथ मारपीट के अलावा अभद्र व्यवहार किया। पुलिस ने ग्रामीणों पर एकतरफा हमला कर नक्सलियों के साथ मुठभेड़ होने की कहानी गढ़ दी जिसमें दो ग्रामीणों के नक्सलियों की गोलियों का शिकार होने का झूठा दावा किया। स्थानीय जनता के पुरजोर विरोध के बावजूद भी पुलिस बलों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई। सीतागांव में एक महिला के साथ बलात्कार किया गया। इसी क्षेत्र में आने वाले हाल्लेपाल गांव में पड़ोस के महाराष्ट्र पुलिस कमाण्डों ने एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया। कुल मिलाकर कहा जाए तो सरकार मानपुर इलाके में जनता का दमन कर तथा हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलकर बड़े व विदेशी पूंजीपतियों की लूटखसोट की नीतियों को आगे बढ़ाना चाह रही है।

इस सब के जवाब में ही हमने इस प्रतिरोधी अभियान को अंजाम दिया जिसका नाम **'आपरेशन विकास'** रखा गया। हाल ही में, 24 मई 2009 को आंध्र एसआईबी द्वारा मारे गए हमारे केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड 'विकास' (सुधाकर रेड्डी) तथा 16 सितम्बर 2006 में इसी इलाके में हुई एक झूठी मुठभेड़ में शहीद हुए हमारे स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉमरेड 'विकास' (श्रीनिवास) की हत्याओं का बदला लेना तथा इन हमलों की मदद से मानपुर इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन के 'विकास' में तेजी लाना... यही इस **'आपरेशन विकास'** का लक्ष्य है। दुश्मन के बलों का बड़े पैमाने पर सफाया कर गुरिल्ला युद्ध को तेज करने तथा हथियारों की दृष्टि से पीएलजीए को मजबूत करने के लक्ष्य से हमारी पार्टी द्वारा समूचे दण्डकारण्य क्षेत्र में अपनाए गए कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान (टीसीओसी) का हिस्सा है यह आपरेशन।

## एसपी विनोदकुमार चौबे का सफाया क्यों?

जाहिर सी बात है कि हमारी पीएलजीए की इस विशेष कम्पनी की कमान ने बड़े ही सुनियोजित तरीके से एसपी वीके चौबे को निशाने पर लिया। मानपुर इलाके में 16 सितम्बर 2006 को हमारे स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉमरेड विकास (श्रीनिवास) को भानुप्रतापपुर के नजदीक दमकस्सा के जंगल में निहत्थी हालत में पकड़कर बर्बर यातनाएं देने के बाद उसी शाम को 'मुठभेड़' के नाम से उनकी हत्या करने में एसपी विनोदकुमार चौबे का प्रत्यक्ष हाथ था। वह उस समय कांकेर जिले का एसपी हुआ करता था। उसके बाद उसका राजनांदगांव जिले में तबादला हुआ। मानपुर क्षेत्र में जारी सभी पुलिसिया दमनकारी योजनाओं की रूपरेखा बनाने के पीछे चौबे था ही, इसके साथ-साथ पिछले साल जनवरी में रायपुर-भिलाई में हुई हमारे शहरी विभाग के कामरेडों की गिरफ्तारियों और उन्हें यातनाएं देने व तरह-तरह के झूठे केसों में फंसाने में भी इसी का हाथ था। खासकर हमारे एक कार्यकर्ता सुमित को गिरफ्तार कर उसे लालच में फंसाकर मुखबिर बनाने का चौबे ही मुख्य रूप से जिम्मेदार था। साथ ही पार्टी का धन 10 लाख रूपए जो सुमित की गिरफ्तारी के समय बरामद किया गया था, चौबे और उसके सहयोगियों ने ही डकार लिया था। इसके साथ-साथ कई ऐसे बेरोजगार नौजवानों, जो किसी न किसी रूप से क्रांतिकारी आंदोलन से प्रभावित थे या संपर्क में थे, को साम-दान-भेद-दंड के तरीकों से पुलिस का खबरिया बनाकर उन्हें नियमित वेतन देने तथा पार्टी के नेताओं को गिरफ्तार कर उनकी हत्या की साजिशें रचने में वीके चौबे सबसे बदनाम अफसर रहा। सीधे मुकाबलों में हमसे लोहा लेने से कतराने वाले इस कायर अधिकारी ने अपने दलालों के जरिए जहर का प्रयोग कर हमारे दस्तों और हमारे नेताओं का सफाया करने की साजिशें एक बार नहीं, कई बार कीं। कमल सारडा (रायपुर एलायज का मालिक जिसकी खदान पल्लामाड़ इलाके में जन विरोध के चलते बंद है) जैसे बड़े पूंजीपतियों से करोड़ों रुपए की दलाली खाकर (जिसमें आईजी मुकेश गुप्ता भी शामिल है) जिले में कई थाना-चौकियां खोलकर जनता को आतंकित कर क्रांतिकारी आंदोलन से दूर करने की साजिश भी की। हाल ही में, 31 मई को जक्के-घोड़ागांव में दो निर्दोष ग्रामीणों पर गोली चलाकर घायल करने की घटना के पीछे भी सूत्रधार यही चौबे था। उसके बाद भड़के जनाक्रोश को भी दबाने की कोशिश इसी चौबे ने खुद मानपुर में डेरा डालकर की। इसीलिए इस जालिम, षडयंत्रखोर व प्रतिक्रियावादी पुलिस अफसर को मार डालने का हमारी पार्टी ने फैसला लिया जिस पर हमारी पीएलजीए ने 12 जुलाई को अमल किया।

## हमारी चेतावनी

हम रमन सरकार को चेतावनी देते हैं कि आदिवासियों का नरसंहार बंद करो; झूठी मुठभेड़ों का सिलसिला बंद करो; आदिवासी मां-बहनों के साथ सामूहिक बलात्कार करने वाले पुलिस-एसपीओ को सजा दो; गांवों को जलाना बंद करो; गांव-गांव में मुखबिर पालना बंद करो; पुलिस थाना-चौकी खोलना बंद करो; अर्द्ध-सैनिक बलों की तैनाती बंद करो; छत्तीसगढ़ की सम्पदाओं को बड़े व विदेशी कम्पनियों के हाथों बेचने की लूटखसोट की नीतियां रद्द करो... संक्षेप में क्रांतिकारी आंदोलन का दमन, मानवाधिकारों का हनन तथा लूटकारी नीतियों का अमल बंद करो। वरना मानपुर हमलों जैसे सिलसिलेवार हमलों में और तेजी लाई जाएगी। डेढ़ साल में या दो साल में क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने का खयाली पुलाव पकाना बंद करो और जनता को भ्रम में डालने की कोशिशें बंद करो। जब तक इस समाज में शोषण, दमन, लूट, उत्पीड़न, भेदभाव, अन्याय आदि समस्याएं रहेंगी और इसके लिए जिम्मेदार लुटेरों का राज जारी रहेगा, तब तक क्रांतिकारी संघर्षों का **'विकास'** भी जारी ही रहेगा। ✶

# मानपुर हमलों (ऑपरेशन विकास) के संदर्भ में पूर्वी रीजनल ब्यूरो का संदेश

## दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमिटी के अन्तर्गत कार्यरत कमिटियों, जनमुक्ति छापामार सेना और क्रान्तिकारी बहादुर जनता को हार्दिक अभिनन्दन के साथ गर्म जोशी भरा लाल सलाम!

**कामरेडो,**

पीएलजीए के जन योद्धाओं और बहादुर क्रान्तिकारी जनता, छत्तीसगढ़ की वीर भूमि में प्रतिरोध संघर्ष की उठती, धहराती, ललकारती, हुंकारती जन-ज्वार, शत्रु शासक वर्ग की सरकारी-गैर सरकारी सेनाओं को निगलने लगी है। ऐतिहासिक छोटे-बड़े संघर्षों की धारावाहिकता में रानीबोदली, बलीमेला, दंतेवाड़ा जेल ब्रेक , गढ़चिरौली और 12/7/09 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिला अन्तर्गत मानपुर थाना में एंबुश कर 30 एसटीएफ, पुलिस सहित खूंखार एसपी विनोद चौबे का सफाया शासक वर्ग के लिए एक भारी झटका है, जो श्वेत आतंक के इलाके में, श्वेत दमनकारी सेनाओं के ऊपर लाल सेनाओं का लाल आतंक प्रात: कालीन सूर्योदय की लालिमा की भांति मुक्ति की लाल किरण बिखेरने लगी है।

अमेरीकी साम्राज्यवाद के पालतू शासक वर्ग का प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की घोषणा - नक्सलवाद देश की आतंरिक सुरक्षा के लिए भारी खतरा यानी शोषित वर्गीय बढ़ते सशस्त्र संघर्ष के बढ़ते सशक्त कदम और शक्ति की भविष्यवाणी सच होती दिखने लगी है। सहस्त्राब्दियों से दमित, अत्याचारित अपने ही श्रम से उत्पादित अन्न, वस्त्र, आवास, चिकित्सा से वंचित, अवहेलित भूख की यंत्रणा से त्रस्त मेहनतकश जनता भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में  जैसे-जैसे आस्था, भरोसा, विश्वास के साथ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित शत्रु शासक वर्ग की किलेबंदियों की ओर श्रम-आधारित एकता और लक्ष्य तथा संकल्पों के प्रति दृढ़ता से लम्बी डग भरती सतत आगे बढ़ती जा रही है, ठीक वैसे-वैसे शासक वर्ग की राजनीतिक सत्ता और उसकी मूल शक्ति बन्दूकें जनमुक्ति छापामार सेना की कार्रवाइयों से भहराने और बिखरने लगे हैं। ठीक उसी अनुपात में हम दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि आम जनता की सक्रियता, साहस, उत्साह और अपने संघर्ष में जीत के प्रति अधिक आस्थावान हैं। इलाके से बाहर देश के कोने-कोने में ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रों में संघर्षरत जनता को भी संघर्ष के प्रति आस्थावान और अंतिम जीत क्रान्तिकारी जनता की ही होगी, आश्वस्थ बनाता है। शत्रु शासक वर्ग का क्रूरतम दमन के लिए चौतरफा हमले जनमुक्ति छापामार सेना, जनता और जनमिलिशिया को चौतरफा प्रतिरोध और प्रत्याक्रमण में अभ्यस्थ बना डाला है। आक्रमण प्रत्याक्रमण, हमले और मुकाबले - दैनिक जीवन का अब हिस्सा बन चुका है। राजनांदगांव जिला अन्तर्गत मानपुर थाने के मदनवाड़ा जंगल की गुणात्मक रूप से उन्नत व बड़े किस्म के एरिया एंबुश की कार्रवाई एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस का आह्वान छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में और गुरिल्ला जोन को आधार क्षेत्रों में बदल डालने के नारा को साकार करने की ओर मुंह को मोड़ दिया है।

इस नारा के पक्ष में कहना उचित और प्रासंगिक होगा कि इधर बिहार-झारखण्ड-उत्तर छत्तीसगढ़ सैक में भी तीन चार महीने के अंदर कुछ लड़ाईयां हुई हैं, जिससे शत्रु सैन्य बल को काफी नुकसान हुआ है। लगभग 55-60 से अधिक मारे गये हैं, जिसमें सीआरपीएफ, बीएसएफ, एसटीएफ और कमांडो शामिल हैं। सैंकड़ों घायल भी हुए हैं। 50-60 हथियार भी जब्त हुए हैं। इसी लिए दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि लड़ाई का मुंह चलायमान युद्ध की ओर होता जा रहा है।

ऑपरेशन विकास में जब्त हथियारों का जखीरा

पूर्वी रीजनल ब्यूरो (ईआरबी) केन्द्रीय रीजनल ब्यूरो, उसमें कार्यरत सीएमसी कामरेडों, डी.के. एसजेडसी सदस्यों, एसजेडएमसी, पीएलजीए के तमाम जन योद्धाओं सहित जनमिलिशिया स्क्वाड, प्लाटून और कंपनियों तथा क्रान्तिकारी जनता को राजनांदगांव (मानपुर) जैसे संघर्षों के सफलतापूर्वक संचालन के बढ़ते कदम को हार्दिक लाल अभिनन्दन के साथ गर्म जोशी भरा लाल-लाल सलाम पेश करते हुए मनमोहन सिंह द्वारा पेश की जा रही चुनौतियों की स्वीकृति की घोषणा भी करता है।

**क्रान्तिकारी अभिनन्दन के साथ**

**पूर्वी रीजनल ब्यूरो**

19 जुलाई 09 **भाकपा (माओवादी)**

# पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने किया कोर्ट परिसर में हमला! पोलितब्यूरो सदस्य कॉमरेड सुनिर्मल को आजाद करवाया!!

बिहार के लखीसराय कोर्ट परिसर में पीएलजीए बलों ने 23 जून 2009 को दिन दहाड़े एक जबर्दस्त हमला कर कॉमरेड मिसिर बेस्रा उर्फ सुनिर्मल को पुलिस के चंगुल से आजाद करवा लिया। साथ में तीन अन्य कॉमरेडों को भी छुड़वाने में सफलता मिली। ज्ञात हो कि लालगढ़ में अर्ध सैनिक बलों की कार्रवाई के खिलाफ पांच राज्यों में हमारी पार्टी ने बंद का आव्हान दिया हुआ था, तभी यह कार्रवाई हुई। कॉमरेड मिसिर बेस्रा जो झारखंड में सुनिर्मल के नाम से प्रसिद्ध हैं, गिरफ्तारी के समय हमारी पार्टी के पोलितब्यूरो सदस्य व केंद्रीय मिलटरी कमीशन के सदस्य थे। वे 1985 में पार्टी में शामिल हुए थे। कॉमरेड सुनिर्मल को सितम्बर 2007 में झारखण्ड के खूंटी जिले से गिरफ्तार किया गया था। बिहार के लखीसराय कोर्ट में उन्हें एक केस में पेशी पर लाया गया था। पीएलजीए ने सुनियोजित हमला कर उन्हें छुड़वा लिया।

मीडिया में आई खबरों के मुताबिक कोर्ट परिसर में पीएलजीए के छापामार 10 मोटरसाईकलों से घुस गए। एस्कॉर्ट में आए सशस्त्र पुलिस बलों पर मोटरसाईकलों पर बैठे गुरिल्लों ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं। एक दैनिक समाचार पत्र के मुताबिक 50 नक्सलवादियों ने इस हमले में भाग लिया। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस वालों से एक कार्बाईन व दो राइफलें भी पीएलजीए योद्धाओं ने छीन लीं। इसमें एक होमगार्ड मारा गया जबकि एक कांस्टेबल व एक हवलदार इस हमले में घायल हुए।

आज देश भर में दुश्मन की जेलों में हमारे वरिष्ठ नेताओं सहित कई क्रांतिकारी साथी बंद हैं। जब उनकी जमानत होती है पुन: उनको झूठे केसों में फंसाकर गिरफ्तार कर लिया जाता है। अत: हमारे पास कोई चारा ही नहीं बचता कि उन्हें बिना हमले आजाद करवाया जाए। 'प्रभात' पीएलजीए के उन बहादुर कामरेडों को इस कार्रवाई पर लाल-लाल अभिनंदन प्रेषित करती है। और आव्हान करती है कि दुश्मन की जेलों से इसी रास्ते से हमारे साथियों को आजाद करवाया जाए। ✶

## खबरें जंगे मैदान से

# बिहार-झारखंड में पीएलजीए के शानदार हमलों का सिलसिला तेज

**हमारी पीएलजीए ने जनवरी से जून 2009 तक बिहार-झारखंड में करीब दर्जन भर बड़े हमलों को अंजाम दिया। इन हमलों में 45 से ज्यादा दुश्मन बलों का सफाया किया गया और बहुत सारे घायल हुए। मरने वालों में राज्य पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ, सैप के सरकारी सुरक्षा बलों के जवान शामिल हैं। पीएलजीए ने उनके हथियारों को भी जब्त करने में सफलता हासिल की। कुछ हमलों का ब्यौरा इस प्रकार है -**

✶7 जनवरी - मनिका में विस्फोट, 6 पुलिसवालों की मौत।

✶6 फरवरी - बुंडू में विस्फोट, 5 पुलिस वाले घायल।

✶11 मार्च - अड़की में हमला, 5 पुलिसकर्मियों का सफाया।

✶9 अप्रैल - पलामू में विस्फोट, एक जवान की मौत।

✶11 अप्रैल - अड़की में मुठभेड़, सीआरपीएफ के 5 आतंकियों की मौत।

✶15 अप्रैल - लातेहार में विस्फोट, एक हवलदार समेत 2 पुलिस वालों सफाया।

✶16 अप्रैल - लातेहार के चंदवा क्षेत्र में विस्फोट, 10 पुलिस वालों का सफाया।

✶17 अप्रैल - लातेहार में विस्फोट, एक जवान का सफाया।

✶10 जून - प. सिंहभूम में गोइलकेरा में विस्फोट, 10 पुलिसवालों का सफाया।

✶21 जून - बोकारो में दो हमले, 11 पुलिस वालों का सफया, सात जवान घायल। इसमें एक बारूदी सुरंग निरोधी वाहन उड़ाया गया। तीन एसएलआर और एक इंसास जब्त की। यह हमला बोकारो जिले के बेरमो स्थिति फूसरो बाजार व नावाडीह में किया गया। बताया जा रहा है कि इस में कई महिलाओं समेत 50 छापामारों ने भाग लिया। ✶

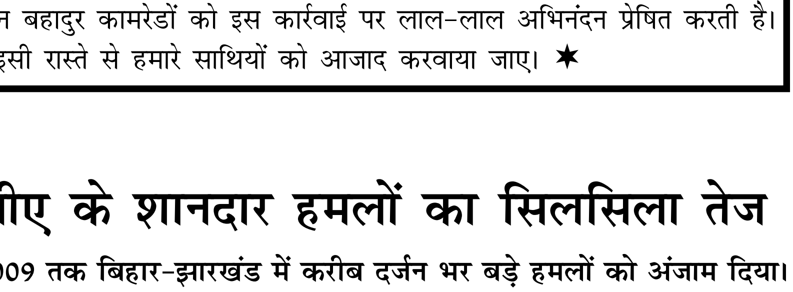

पीएलजीए के हमलों में ध्वस्त पुलिसिया वाहन

**जन-प्रतिरोध**

# दमन के विरोध में जनता उठ खड़ी हुई!

## 20-21 मई को दण्डकारण्य बंद सफल

माओवादी गतिविधियों में गिरफ्तार बंदियों को राजनीतिक बंदी का दर्जा देने व जेल बंदियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने और जेल की नारकीय जीवनस्थितियों को बदलने आदि मांगों को लेकर 20-21 मई को आहूत दो दिवसीय बंद को दण्डकारण्य की क्रांतिकारी जनता, जन मिलिशिया और पीएलजीए ने प्रभावी रूप से सफल बनाया। दक्षिण बस्तर से लेकर मोहला-मानपुर तक, गड़चिरोली से लेकर जगदलपुर तक सभी जगहों पर बंद का व्यापक रूप से पालन किया गया। सभी वाहनों के पहिए दो दिनों तक थमे रहे। किरंडुल में रेल पटरी के एक हिस्से को उखड़ दिया गया। सभी डिवीजनों में पोस्टर व पर्चों के माध्यम से व्यापक प्रचार अभियान चलाया गया।

इस मौके पर डीके एसजेडसी सचिव कॉमरेड कोसा ने पत्रकार वार्ता बुलाकर जेल साथियों के हालात के बारे में विस्तार से बात रखी। उन्होंने मीडिया के माध्यम से जेलों में बंद राजनीतिक बंदियों का भी आह्वान किया कि वे जेलों के अंदर दो दिन की हड़ताल रखें। इस आह्वान को पाकर जगदलपुर में माओवादी कैदियों द्वारा हड़ताल रखने की खबर है। विभिन्न डिवीजनों में पत्रकारों के सामने जेलों में बंद साथियों के परिजनों की बैठकें की गईं। सड़कों को जाम कर पोस्टर-पर्चे आदि बांटकर लोगों में व्यापक रूप से प्रचार किया गया। इन सभी गतिविधियों से जेलों में कैद कॉमरेडों और आम लोगों के दुख-तकलीफों के बारे में जनता में व्यापक प्रचार हुआ। जनता ने लुटेरे शासन तंत्र के दमनकारी कदमों की कड़ी निंदा की।

## पुलिसिया ज्यादतियों के खिलाफ मानपुर में रैली

पुलिस व सीआरपीएफ के आतंकी जवानों के खिलाफ मानपुर एरिया में लंबे समय से जनता में गुस्सा सुलग रहा है। सीआरपीएफ व पुलिस वाले पूरे इलाके में दहशतगर्दी फैला रहे हैं। जिसे चाहे उठाना, जिसे चाहे मारना, नक्सली बताकर नाजायज तरीके से पकड़ कर यातनाएं देना, महिलाओं, लड़कियों के साथ छेड़खानी करना आदि से वहां की जनता तंग आ चुकी थी। 31 मई की घटना ने तो जनता के आक्रोश को और भड़का दिया। उस दिन खड़गांव थाने के पुलिस वालों और सीआरपीएफ के जवानों ने मोहला तहसील के जक्के और घोड़ागांव गांवों में आतंक का नंगा नाच किया। जो भी मिला उसे मारते हुए, डकैतों की तरह घरों में घुसते हुए दारू-मुरगा लूटा और कई लोगों की पिटाई की। इसका विरोध करने पर महिलाओं के साथ भी उन्होंने बदसलूकी की। संतलाल नामक ग्रामीण को जबरन गांव से बाहर ले जाकर पेड़ से उलटा टंगाकर अंधाधुंध पिटाई की जिससे वह बेहोश हो गया। इसे देखकर गांव के महिला-पुरुषों ने अपनी नाराजगी प्रकट की और संतलाल को छुड़वा लिया। इसके जवाब में पुलिस वालों ने एकतरफा गोलीबारी कर दो ग्रामीणों को घायल किया। निर्दोष व निहत्थे ग्रामीणों पर वहशी अंदाज में गोलीबारी कर अखबारों में नक्सलवादियों के साथ 'मुठभेड़' होने का झूठा बयान दिया जिसमें 'नक्सलवादियों की गोलियों' से दो ग्रामीणों के घायल होने की खबर दी।

दरअसल जनता पर यह हमला बड़े पूंजीपतियों की कम्पनी रायपुर एलायज और उसके मालिक कमल सारडा की शह पर हो रहा है। उसने पुलिस महकमे को करोड़ों की दलाली खिला रखी है ताकि पुलिस जनता के प्रतिरोध को खत्म कर उसकी बंद पड़ी पल्लामाड़ खदान को दोबारा चालू करवाया जा सके। आईजी मुकेश गुप्ता, एसपी चौबे और अन्य अधिकारी सब कमल सारडा का पैसा खाकर जनता को आतंकित कर रहे हैं।

इसके खिलाफ जनता ने 10 जून को मानपुर में रैली अयोजित की जिसमें मोहला, मानपुर, आंधी, खड़गांव, मदनवाड़ा, महका, दोरदे, मूचर, हुरवे, हुरेली, सीतागांव, खुरसे, कोसमी, मुरागुटा साहित कई गांवों की जनता ने स्वत:स्फूर्त भाग लिया। सीआरपीएफ व पुलिस की आतंकी गतिविधियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

## ग्रामीणों ने किया थाने का घेराव

13 अप्रैल 09 की शाम किरण्डुल के पास ग्राम हिरोली के निकट पुलिस ने पीएलजीए बलों के तीन सदस्यों को मार गिराने का दावा किया था। दूसरे दिन सोमवार के दोपहर दो बजे किरंडुल पहुंचकर इस मुठभेड़ में मारे गए युवक छन्नू के पिता सुक्का सहित लगभग 200 ग्रामीणों ने मुठभेड़ को फर्जी बताते हुए थाने का घेराव किया। पुलिस द्वारा परिजनों को शव सौंपने के बाद ही ग्रामीण वहां से हटे। घटना के संबंध में मारे गए युवक के पिता सुक्का एवं ग्रामीणों ने बताया किया छन्नू रविवार को साइकल पर सवार होकर ग्राम समलवार में एक शादी समारोह में गया था। शाम को पुलिस गांव में पहुंची तथा 20-25 लोगों से मारपीट करते हुए तीन युवकों भास्कर, राजू तथा छन्नू को उठाकर ले गई तथा उन्हें गोली मार दी गई। विगत दिनों छन्नू का एनएमडीसी में ट्रेनी के पद पर चयन हो गया था। ग्रामीणों ने बताया कि इस संबंध में कलेक्टर दंतेवाड़ा को ज्ञापन सौंपेंगे। ✶

---

**(...पेज 21 का शेष)**

साजिश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा दुष्प्रचार-युद्ध है जिसमें मीडिया का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। लेकिन इस साजिश को जनता ने विफल कर दिया। सरकारी दुष्प्रचार को रद्दी के टोकरे में फेंक दिया। विश्वरंजन व उसके मालिक शासक वर्गों को तथा उनकी सेवा में जुटे मीडिया को शायद यह मालूम न हो, पर सच्चाई यह है कि सूरज पर थूकने की कोशिश करने से खुद थूकने वाले के चेहरे पर ही गिरेगी।

*31 अगस्त 2009*

# पीएलजीए के हमलों से दुश्मन में हड़कम्प

पिछले एक साल के अंदर, खासकर लोकसभा चुनावों की घोषणा के बाद से शुरू कर अभी तक पीएलजीए ने आतंकी पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों पर लगातार कई सफल हमले किए। अक्टूबर 2008 से अक्टूबर 2009 तक हुए हमलों में 200 से ज्यादा भाड़े के सशस्त्र जवान मारे गए। मरने वालों में एसपी से लेकर विभिन्न स्तरों के अधिकारी व जवान शामिल हैं। खास बात यह है कि सरकारें कोबरा, सी-60 या एसटीएफ आदि जिन कमाण्डो बलों को बड़े तीसमारखां के रूप में पेश करते हुए जनता में आतंक पैदा करने की कोशिश कर रही हैं, ऐसे कमाण्डो बलों की इन मरने वालों में उल्लेखनीय संख्या रही है। 150 से ज्यादा सशस्त्र बल घायल हो गए। पीएलजीए ने दर्जनों सफल हमले कर दुश्मन से कुल 125 हथियार छीन लिए। इनमें 34 एके-47, 41 एसएलआर, 31 इंसास, 3 एलएमजी, 8 त्रीनॉटत्री, 4 दो इंची मोर्टार व 4 पिस्तौल शामिल हैं। इसके अलावा हजारों कारतूस व विभिन्न किस्म का फौजी साजोसामान जब्त किए गए। इन हमलों को सफल बनाने वाले विभिन्न स्तर के कमाण्डरों, पार्टी कमेटी सदस्यों, वीर सैनिकों और क्रांतिकारी जनता का 'प्रभात' लाल-लाल अभिनंदन पेश करती है। इनमें कुछ खास हमलों की संक्षिप्त रिपोर्टें पेश हैं -

## टव्वेटोला ऐम्बुश - 16 मरे

21 मई 2009 के दिन गड़चिरोली जिले के टव्वेटोला के पास पीएलजीए ने महाराष्ट्र पुलिस के दरिंदों पर एक जबर्दस्त हमला किया। कोरेपल्ली, मरकानार और मुगनेर के बाद यह फिर एक करारा प्रहार था। दरअसल 21-22 मई को हमारी पार्टी के मध्य रीजियन ब्यूरो ने जेलों में कैद क्रांतिकारी साथियों और पार्टी के समर्थकों पर हो रहे अत्याचार बंद करने की मांग से बंद का आह्वान दे रखा था। बंद के दौरान जगह-जगह पेड़ गिराकर रास्ते जाम कर दिए गए थे। इसी प्रकार धनोरा-मुरुमगांव रोड पर टव्वेटोला के पास लगाए गए अवरोधों को हटाने के लिए धनोरा थाने से 16 पुलिस वालों का दल, जिसमें एक निरीक्षक और एक उपनिरीक्षक शामिल थे, दो गाड़ियों में सवार हो कर पहुंचा था। पीएलजीए के सैनिकों ने सुनियोजित तरीके से इस हमले को अंजाम दिया। गौरतलब है कि दो गाड़ियों पर किए गए हमलों में बारूदी सुरंग का प्रयोग नहीं किया गया। मुख्य रूप से गोलीबारी से ही इस पूरे हमले को सफल बनाया गया था। ज्यों ही गाड़ियों का काफिला किलिंग जोन में पहुंचा तो पीएलजीए की एक टुकड़ी ने सामने से रोड के बीचोबीच खड़े होकर गोलियां चलनी शुरू कीं। इससे दोनों गाड़ियां रुक गईं, बल्कि आगे की गाड़ी का ड्राइवर को गोली लगी भी थी। दोनों गाड़ियों से पुलिस वाले उतर गए और आमने-सामने की लड़ाई शुरू हो गई। 40 मिनट के अंदर इस ऐम्बुश को सफलता से पूरा किया गया। इस हमले की दो खासियतें और हैं - एक, इसमें पीएलजीए की तरफ किसी को खरोंच तक नहीं आया और दो, दोनों गाड़ियों में आए सारे पुलिस वालों का सफाया हुआ, एक भी बच नहीं पाया। हालांकि पीएलजीए के सैनिकों ने लड़ाई के दौरान कई बार सरेंडर करने को कहा। लेकिन पुलिस वाले सुनने को तैयार नहीं थे। 16 के 16 हथियार भी छीन लिए गए जिसमें 3 एके-47 और 13 एसएलआर शामिल थीं। 1000 से भी ज्यादा गोलियां और अन्य साजोसामान भी पीएलजीए के कब्जे में आ गए।

अभी तक पुलिस की झूठी मुठभेड़ों में अपने दर्जनों बेटों व बेटियों को खोने वाले गड़चिरोली के आदिवासियों, अभी तक पुलिस के हाथों अनगिनत व अकथनीय अपमान व अत्याचार सहने वाली गड़चिरोली की आदिवासी मां-बहनों और पुलिस के जोर जुल्मों व रौब-दाब से त्रस्त हर शख़्स ने अपनी बांहें फैलाकर इस हमले की जय-जयकार की। पीएलजीए की बहादुरी की हर जगह प्रशंसा हुई। इस हमले में मरने वाले 16 पुलिस दरिंदों में 5 महिलाएं भी शामिल थीं। इस तरह महिला पुलिस कर्मियों के पीएलजीए के हाथों मरने की यह पहली घटना थी। इसको लेकर हमारी पार्टी को, खासकर हमारी पीएलजीए की वाजिब प्रतिरोधी कार्रवाइयों को नीचा दिखाने की कोशिशें की गईं। सच यह है कि महिला कांस्टेबल समेत सभी भाड़े के जवान अत्याधुनिक हथियारों से लैस थे और उनमें किसी ने भी सरेंडर करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि लगातार गोलीबारी जारी रखी। लड़ाई के दौरान ही सभी मारे गए। गड़चिरोली की संघर्षशील जनता ने सारे दुष्प्रचार को रद्दी के टोकरे में फेंक दिया। इस हमले के बाद जहां गड़चिरोली के पुलिस बलों का मनोबल बुरी तरह ढीला पड़ गया, वहीं जनता का मनोबल काफी ऊंचा हो गया।

## मल्लमपोड़ूर ऐम्बुश - 17 मरे

8 अक्टूबर 2009 को गड़चिरोली जिले के लाहेरी पुलिस थाने से थोड़े ही दूर (800 मीटर) पर पीएलजीए ने एक और शानदार हमले को अंजाम दिया जिसमें सी-60 के 17 कमाण्डो कुत्ते की मौत मारे गए और दो अन्य घायल हो गए। मरने वालों में लाहेरी का थानेदार सीएस देखमुख भी शामिल है। दरअसल 13 अक्टूबर को महाराष्ट्र विधानसभा का चुनाव था। नेताओं के दौरे जारी थे। पुलिस, कमाण्डो और अर्द्ध-सैनिक बल गांवों में गश्त बढ़ाकर आतंक का तांडव मचा रहे थे। जनता को धमका रहे थे कि वोट नहीं डालेंगे तो गांवों को जला देंगे या नक्सलवादी बताकर गोली मार देंगे। कई जगहों पर लोगों की हत्या कर 'नक्सलवादी' बताया गया। इसी सिलसिले में लाहेरी थाने से 45 कमाण्डों का एक बैच गांवों पर हमलों के लिए

निकला हुआ था। एक गांव में उन्होंने जनता से मारपीट कर फिर लाहेरी लौट रहे थे। यह खबर पाकर पीएलजीए के कॉमरेडों ने करीब डेढ़ घण्टे तक दौड़ लगाकर पुलिस वालों को आगे से रोक दिया। इस तरह सुबह साढ़े 11 बजे शुरू हुई थी यह ऐतिहासिक लड़ाई। सभी पुलिस वालों के पास अत्याधुनिक हथियार थे और हजारों गोलियां थीं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि थाना पास में ही था जहां से कुछ ही मिनटों में मदद मिलने की उन्हें बड़ी उम्मीद थी। लेकिन इनमें से कोई भी उन्हें बचा नहीं सका। थोड़े समय तक पागलों की तरह अंधाधुंध गोलियां चलाकर पीएलजीए के प्रतिरोध को देखकर भागना शुरू किया। पीएलजीए के सैनिकों ने उन्हें खूब दौड़ाया। जहां जो मिला उसे मारते आगे बढ़ते गए। खेतों के अंदर दो दफे आमने-सामने की जबर्दस्त मुठभेड़ें हुईं। पीएलजीए के सैनिकों ने अचूक निशानेबाजी का प्रयोग करते हुए पूरे 17 कमाण्डों को मार डाला और दो अन्य को घायल कर दिया। बाकी सभी ने लड़ाई के मैदान से भागकर अपनी जानें बचा लीं। 3 बजे तक चली लड़ाई के बाद पीएलजीए को यह शानदार सफलता मिली। थाने में कई दर्जन पुलिस वालों की मौजूदगी के बाद भी इनकी मदद को एक चिड़िया भी नहीं आया। एक बात स्पष्ट है। ये लोग निहत्थी आम जनता पर जितनी भयानकता व क्रूरता बरतते हैं और आतंक का जितना नंगा नाच करते हैं, जब हथियारबंद पीएलजीए सैनिकों से आमने-सामने लड़ने का वक्त आता है तो उतनी ही कायरता का प्रदर्शन करते हैं। कुछ घण्टे पहले यही लोग पास के मुरुंगल गांव के निर्दोष ग्रामीणों की पिटाई कर रहे थे, गाली-गलौज कर रहे थे और धमकियां दे रहे थे। लेकिन वही लोग अब बदहवास भाग रहे हैं। बहरहाल, मारे गए पुलिस वालों से कुल 19 हथियार (6 एके-47, 9 एसएलआर, एक एलएमजी, एक मोर्टार और दो पिस्तौलें) तथा करीब 1500 कारतूस व कुछ अन्य सामान भी पीएलजीए ने जब्त किए।

पीएलजीए की इस शानदार व ऐतिहासिक जीत के लिए एक बहादुर व युवा कमाण्डर ने अपनी जान कुरबान कर अपना गर्म लहू बहा दिया। वह हैं कॉमरेड मंगेश जो दक्षिण गड़चिरोली के डिवीजनल कमाण्डर-इन-चीफ थे। लड़ाई जब अंतिम चरण में पहुंच चुकी थी, वह दुश्मन से एक दम नजदीक से लोहा लेते हुए जब अपना कवर बदल रहे थे तभी दुश्मन की गोली का शिकार हो गए। इसके साथ ही हमने एक वीरयोद्धा खो दिया। बहरहाल, बिना कुरबानी के संघर्ष में जीत संभव नहीं है। और बलिदान की काफी पुरानी परम्परा रही है हमारी पार्टी की। इसी परम्परा को हमारे कॉमरेड मंगेश ने आगे बढ़ाया। *(इस कॉमरेड की जीवनी हम अगले अंक में देने का प्रयास करेंगे। - सम्पादक)* कॉमरेड मंगेश की लाश को अपने कंधों पर लेकर और दुश्मन के छीने हुए सारे हथियार लेकर सभी कॉमरेड लौट आए। और शहीद कॉमरेड मंगेश का पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया।

## पालचेलिमा हमला-6 कोबरा समेत 9 मरे

केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया करने के लक्ष्य से छेड़े गए देशव्यापी हमले की शुरूआत सितम्बर में हो चुकी है। इस हमले में कोबरा बलों को धुरी बनाया जा रहा है क्योंकि कथित रूप से इन्हें आंध्र ग्रेहाउण्ड्स बलों की तर्ज पर बनाया गया। ऑपरेशन रेडहंट के नाम से करीब एक हजार बलों को इकट्ठा कर, जिसकी अगुवाई कोबरा बल कर रहे थे और दंतेवाड़ा एसपी समेत कई बड़े अधिकारियों का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन था, दक्षिण बस्तर के पालाचेलिमा और सिंगनमडगु के आसपास बहुत बड़ा दमन अभियान चलाया गया। सिंगनमडगू के पास जंगल में पीएलजीए के हथियार मरम्मत करने वाले एक कैम्प का पता पाकर सबसे पहले कोबरा बलों ने उस पर हमला किया। लेकिन वहां उनके हाथ कुछ नहीं लगा सिवाए कुछ पुराने या टूटे-फूटे देशी हथियारों के। लेकिन इसके बाद इस खबर को पाकर पीएलजीए के वीर योद्धाओं ने बड़े ही तेजी से कोबरा बलों का घेराव कर जवाबी हमला बोल दिया। पहले दो प्रयासों में तो कोबरा बल रुके भी नहीं थे। पीएलजीए को देखते ही उन्होंने भागना शुरू किया था। काफी दूर दौड़कर उन्हें आगे से घेरना पड़ा तब जाकर कोबरा जाल में आ गए। पीएलजीए ने कोबरा के कुल 6 लोगों को, जिनमें दो सहायक कमाण्डेण्ट, एक एएसआई, दो हवलदार और एक आरक्षक शामिल थे, और 3 एसपीओ को वहीं मार गिराया। कम से कम 6 कोबरा बुरी तरह घायल भी हो गए। बाकी सभी भाग गए। मारे गए कोबरा की लाशें दो दिनों तक वहीं पड़ी रहीं। इस हमले की बदौलत कुल 5 हथियार (2 एके-47, 2 एसएलआर और एक इंसास रायफल) भी हमारे कब्जे में आ गए।

कोबरा बलों को मिली इस शर्मनाक पराजय के बाद सुनियोजित तरीके से सशस्त्र बलों ने बड़ी संख्या में आम जनता की हत्या की। सिंगनमडगू, पालाचेलिमा और आसपास के गांवों में कम से कम 12 आम आदिवासी ग्रामीणों की हत्या कर उन्हें 'नक्सलवादी' बताया गया। इस तरह शोषक सरकार के भाड़े के सैनिकों ने अपनी कायरता का इजहार किया।

## आसिरगुड़ा ऐम्बुश - 11 मरे

दंतेवाड़ा जिले के इंजरम के करीब 6 मई 2009 की सुबह 11.30 बजे पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने एक ट्रेक्टर-ट्राली को निशाना बनाते हुए बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। विस्फोट से उसके परखचे उड़ गए। इसमें सवार पांच एसपीओ व दो सीआरपीएफ के आतंकियों का सफाया हो गया। एक घायल ने बाद में दम तोड़ दिया। इस कार्रवाई में तीन अन्य एसपीओ गुंडे घायल भी हुए। घटनास्थल पर मरने वालों में सीआरपीएफ का एक सब इंस्पेक्टर, दो कांस्टेबल और चार एसपीओ शामिल हैं। साथ में 4 जुडूम के गुंडे भी इसमें मारे गए हैं। कुल मिलाकर 11 मरे व 4 घायल हुए हैं। अखबारों की खबरों के अनुसार पुलिस की यह पार्टी भेज्जी कैंप व थाने में तैनात भाड़े के जवानों के लिए रसद सामग्री पहुंचाकर वापस लौट रही थी। इस हमले में पांच राइफलें जब्त कर ली गईं। ✶

# ऐतिहासिक मिनपा हमले में शहीद हुए पीएलजीए के बहादुर योद्धा कॉमरेड्स चंदू, बाबू, दसरू और रिंकू को लाल-लाल सलाम!

10 अप्रैल 2009 को मिनपा गांव में पुलिस व पीएलजीए की गुरिल्ला बटालियन के बीच हुए घमासान में सीआरपीएफ के 13 भाड़े के सैनिक मार डाले गए जिसमें एक डिप्यूटी कमाण्डेण्ट और एक सब-इंस्पेक्टर शामिल हैं, और दर्जन भर से ज्यादा घायल हो गए। इन भाड़े के बलों से हमारी पीएलजीए ने 6 हथियार (3 एके-47 और 3 इंसास रायफलें) छीन लिए । लेकिन इस सफलता को प्राप्त करने के लिए कॉमरेड चंदू, बाबू, दसरू और रिंकू दुश्मन के साथ बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। झूठे लोकसभा चुनावों के मद्देनजर 10 अप्रैल को चिंतागुप्पा पुलिस थाने से सीआरपीएफ के 45 व जिला पुलिस बल के 6, कुल 51 भाड़े के जवान मिनपा गांव में मतदान केंद्र की जांच करने के नाम से आए थे। चिंतागुप्पा से मात्र चार किलोमीटर दूर स्थित इस गांव में दो टोले हैं। पहले पुलिस वाले पदमगूड़ेम टोला पहुंचकर महुआ बीन रहे दो ग्रामीणों को पकड़े। इस पारा से 10 मुर्गों को पकड़कर खा गए। पकड़े गए दोनों ग्रामीणों को बेवजह पीटते हुए मिनपा के दूसरे टोले में ले गए जहां स्कूल भी है। उस टोले में ले जाने के बाद उन्हें जबरन अपने आगे-आगे चलते हुए रास्ता बताने के लिए मजबूर किया। पुलिस वाले पदमगूड़ेम पहुंचने का समाचार पीएलजीए पाकर तुरंत चौकस हो गई व जल्द ही चारों तरफ से पुलिस-फोर्स को घेर कर धावा बोल दिया। लेकिन दुश्मन मिनपा के मुख्य टोले को न आते हुए दोबारा पदमगूड़ेम की ओर मुड़ गए। तब तक पुलिस के आगे-पीछे, दाएं-बाएं चारों तरफ पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने उनको घेर लिया। इस तरह तकरीबन 11.45 बजे घमासान शुरू हो गया जो साढ़े तीन बजे तक चलता रहा। इसमें कुल 13 भाड़े के अर्ध सैनिक बलों को मार डाला गया और 13 अन्य को घायल किया गया। इस शानदार व ऐतिहासिक हमले में शहीद हुए कॉमरेड चंदू, कॉमरेड बाबू, कॉमरेड दसरू और कॉमरेड रिंकू की जीवनियों पर नजर डालें और उनके आदर्शों को अपनाएं।

**कामरेड चंदू**

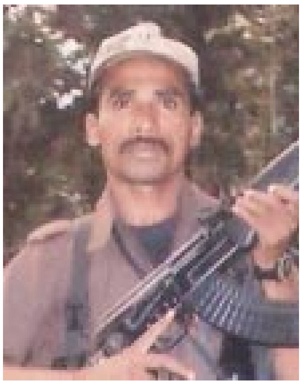

**कामरेड बाबू**

**कामरेड दसरू**

**कामरेड रिंकू**

## नौजवान योद्धा कॉमरेड चंदू

अमर शहीद कॉमरेड चंदू (कंपनी पार्टी कमेटी सदस्य व कंपनी-3 के उपकमांडर) का असली नाम मुचाकी देवा है। वह 35 वर्ष का नौजवान था। उनका जन्म मध्यम वर्गीय आदिवासी कोया परिवार में हुआ था। उनका गांव बुरूलंका था जो एरिया किष्टारम, ब्लॉक कोंटा और जिला दंतेवाड़ा में स्थित है। कॉमरेड चंदू मुचाकी हड़मा और मुचाकी जोगी दम्पत्ति की दूसरी संतान थे। 1960 के दशक में अपने पैतृक गांव सुकमा तहसील के छिंदगढ़ ब्लॉक के गांव टीटो (खेड़ातोंग) से चंदू के दादाजी व उनके चाचा खेती के लिए जमीन तलाशते हुए कोंटा तहसील के किष्टारम अंचल के बुरूलंका गांव में आकर बस गए थे। बुरूलंका में कॉमरेड चंदू के दादाजी के बसने के बाद सन् 1975 में कॉमरेड चंदू के पिताजी अपने दो बच्चों को लेकर बुरूलंका आए थे। तब कॉमरेड चंदू दुधमुंहा बच्चा था। मां का बीमारी के कारण देहांत हो गया था। छोटे से बच्चे मुचाकी देवा को उनकी दादी व मौसी गंगी व चाचा सुकड़ाल ने पाल-पोस कर बड़ा किया।

इस एरिया में 1980 के दशक में हमारे छापामार दस्ते ने कदम रखा था। तब तक किष्टारम, गोल्लापल्ली व पामेड़ रेंज को पूरी तरह से रिजर्वड (रक्षित) फारेस्ट के रूप में केंद्र व राज्य सरकार ने घोषित कर रखा था। इधर राजस्व व्यवस्था नहीं थी। वन विभाग से ही राज्य सरकार अपने प्रशासनिक कार्य चलाती थी। इस क्षेत्र के गांव सुकमा और दंतेवाड़ा एरिया से हजारों की संख्या में पलायन कर आए लोगों से बसे हैं। ये सब कोया समुदाय के आदिवासी हैं जो 1950 के दशक में बड़े पैमाने पर उधर से पलायन कर आए थे। इस तरह के परिवारों में कॉमरेड चंदू का परिवार भी एक है।

यहां वन विभाग के जुल्म व अत्याचारों के खिलाफ पार्टी के नेतृत्व में जनता ने लगातार संघर्ष कर विजय प्राप्त की है। बेगारी से निजात पाई है। जंगल काटकर खेती करने पर, लकड़ी

काटकर मकान बनाने पर वन विभाग बहुत सारे फर्जी मुकदमों में फंसा कर लोगों को जेल में बंद कर देता था। जनता की लाखों रुपये  की गाढ़ी कमाई भ्रष्ट अधिकारियों की जेबों में चली जाती थी। यहां पर क्रांतिकारी छापामार दस्तों के प्रवेश के बाद हमारी पार्टी की राजनीति को समझते हुए जनता ने वन विभाग के अधिकारियों के खिलाफ जुझारू संघर्ष किया और जल-जंगल-जमीन पर अपना अधिकार कायम किया। उनकी लूटखसोट, भ्रष्टाचार, और अत्याचारों का मुंहतोड़ जवाब दिया। तेंदूपत्ता मजदूरी बढ़ाने, वनोपजों की मूल्य वृद्धि के लिए सेठ-साहुकारों से संघर्ष, गांव के सामंती मुखियाओं के जुल्मों के खिलाफ संघर्ष आदि से बुरूलंका गांव न सिर्फ प्रभावित हुआ था, बल्कि सक्रिय बना था। 1985 तक गांवों में जन संगठन मजबूत होकर संघर्ष तेज हो चुके थे। इन्हीं संघर्षों ने युवक-युवतियों के मानसपटल पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने शोषण के समूल नाश के लिए सशस्त्र छापामार दस्तों में भर्ती होना शुरू किया।

किशोर अवस्था से युवा अवस्था की ओर अग्रसर कॉमरेड मुचाकी देवा भी इससे अछूते नहीं रहे। उनके नौजवान मन में भी गांव के संघर्षों ने उत्साह व चेतना का संचार किया था। सन् 1990 के जनवरी माह में दुश्मन से गांव की सुरक्षा करने के लिए ग्राम सुरक्षा दल (जीआरडी) का गठन किया गया तो वह उसके सदस्य बने थे। उस समय चंदू की उम्र महज 16 या 17 वर्ष की रही होगी जब वह गांव की जनता को सुरक्षा देने के लिए आगे आए थे।

इसी वर्ष यानी 1990 के जुलाई माह में उन्होंने छापामार दस्ते में भर्ती होने का प्रस्ताव सामने रखा, तो उन्हें दस्ते में भर्ती कर लिया गया। लेकिन पार्टी की आवश्यकता और आंदोलन के विस्तार की जरूरतों के मुताबिक कॉमरेड मुचाकी देवा (चंदू) का उत्तर बस्तर के कोंडागांव दल में तबादला करने का प्रस्ताव उच्च कमेटी ने किया। नए होने पर भी कॉमरेड चंदू ने कोंडागांव दल में जाने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

तब से लेकर तीन साल तक, यानी जुलाई 1993 तक कोंडागांव के छापामार दल के सदस्य तथा पार्टी सदय के रूप में उन्होंने अपना योगदान दिया। वह दल का अनुशासन व पार्टी के नियम-कायदों का पलान दृढ़ता से करते हुए आगे बढ़ते रहे।

हमारी पार्टी दक्षिण से उत्तर की ओर विस्तार हुई है। वहां की जनता के लिए हमारी पार्टी व आंदोलन एकदम नई चीजें थीं। हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन के उत्तर की ओर विस्तार को रोकने के लिए सरकार ने दमन में तेजी लाई। कई नये-नये पुलिस थानों व कैंपों को खोलकर पुलिस गश्त को बढ़ा दिया था। दुश्मन के जोर जुल्मों के बीच, धैर्य के साथ रहकर वहां की आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए दल के साथ उन्होंने कठोर मेहनत की। वन विभाग के जुल्म, अत्याचार व घूसखोरी के खिलाफ किये गए सभी संघर्षों में कॉमरेड चंदू की भूमिका रही है। रावघाट, कुव्वेमारी व बोधघाट परियोजनाओं के विरोध में पार्टी द्वारा चलाए गए संघर्षों में स्वयं भाग लेते हुए जनता को संगठित किया। इसके अलावा वहां की जनता की माड़िया व हल्बी भाषाओं को सीखकर, वहां की जनता के गीतों को सीखकर जनता को जागृत करने के जीतोड़ प्रयास हमारे शहीद कॉमरेड चंदू ने किये।

22 मई 1991 को बड़े डोंगर क्षेत्र में बंगापाल गांव के नजदीक दुश्मन पर घात लगाकर किए हमले में ...पुलिस वालों को खत्म करने व अन्य चार को घायल करने की कार्रवाई में उन्होंने भाग लिया था। जनता के जीवन को तबाह करते हुए जारी खदानों की खुदाई के विरोध में की गई विध्वंसात्मक कार्रवाइयों में वह शामिल रहे।

सन् 1993 के जनवरी महीने में दण्डकारण्य फारेस्ट कमेटी (वर्तमान में स्पेशल जोनल कमेटी) का प्रथम प्लेनम हुआ था। इस प्लेनम में सैनिक कार्रवाइयों के लिए अलग से स्पेशल मिलिटरी दल का गठन करने व सैनिक कार्रवाइयों को तेज करने का निर्णय हुआ था। उस समय पूर्वी डिवीजन और आदिलाबाद डिवीजन भी दण्डकारण्य के कार्यक्षेत्र में आते थे। तब तक बस्तर डिवीजन (वर्तमान में पांच डिवीजन) एक ही कमेटी के तहत थी। जुलाई 1993 में बस्तर डिवीजन में गठित किए गए पहले मिलिटरी दल में कॉमरेड चंदू सदस्य चुने गए थे। तब से लेकर मिनपा के शानदार हमले तक जिसमें उनको वीरगति प्राप्त हुई, उन्होंने पीएलजीए की विभान्न फौजी इकाइयों में 16 वर्षों तक काम किया। सैनिक मोर्चे पर दृढ़ता के साथ डटे रहे व अपना अमूल्य योगदान उन्होंने दिया।

सन् 1995 में पहली दफा दण्डकारण्य में पार्टी ने पलटन का गठन किया। इस पलटन में सेक्शन उप कमांडर का दायित्व उन्हें सौंपा गया व उसे उन्होंने बखूबी से निभाया। पहली बार दण्डकारण्य में सफल हुई मानपुर रेड में वह शामिल रहे, गड़चिरोली के भाम्रागढ़ के पास किये गए कोरची एंबुश में कमांडो फोर्स की धज्जियां उड़ाने में वह आगे रहे।

आंदोलन की जरूरतों को देखते हुए पार्टी ने उन्हें दक्षिण बस्तर स्पेशल दल में स्थानांतरित किया। इस स्पेशल दल में कुछ दिन रहने के बाद नव गठित पलटन में कॉमरेड चंदू सदस्य बने। उसके बाद बीजापुर जिले के तोर्रेम और नारायणपुर जिले के बाकुलवाही में किए गए दो बड़े ऐंबुशों में शामिल होकर कई पुलिस बलों को खत्म करने में उन्होंने शानदार भूमिका निभाई। इन हमलों में दुश्मन से कई हथियार छीनकर पीएलजीए को हथियारबंद करने में उनका खासा योगदान रहा। सैनिक मोर्चे के अलावा सांगठनिक मोर्चे पर भी उन्होंने अच्छा-खासा काम किया। किष्टारम एरिया पार्टी कमेटी सदस्य रहते हुए एरिया के जन संगठनों के कामकाज और गांव में पार्टी निर्माण की प्रक्रिया में भाग लिया। सन् 2000 के नवंबर माह में पृथक बस्तर की मांग को लेकर पार्टी ने आंदोलन शुरू किया था। इस आंदोलन के तहत कोंटा में बड़ी-बड़ी रैलियों का आयोजन किया गया था। इन रैलियों को सफल बनाने के लिए कॉमरेड चंदू की कठोर मेहनत को भुलाया नहीं जा सकता। किष्टारम एरिया की जनता को बड़ी संख्या में गोलबंद करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन् 2001 में सम्पन्न पुरानी भाकपा (माले) (पीपुल्सवार)

की कांग्रेस के बाद पीएलजीए (तब पीजीए) की इकाइयों को व्यापक रूप से निर्माण करने का कार्यभार लिया गया था। इस आह्वान को पाकार डीके एसजेडसी ने तब मौजूद दो पलटनों को बढ़ाकर पांच पलटन बनाने का निर्णय लिया। इस निर्णय के तहत जून 2001 में बनी पलटन-4 में पलटन कमांडर का दायित्व उन्हें सौंपा गया। तब से अगस्त 2006 तक वह पलटन-4 को सफल नेतृत्व प्रदान करते रहे।

2005 में वह पलटन पार्टी कमेटी के सचिव चुने गए। पलटन कमांडर रहते हुए दरभागुड़ा के पास सलवा जुडूम गुंडों को बारूदी सुंरग विस्फोट से उड़ाने की कार्रवाई का कॉमरेड चंदू ने प्रत्यक्ष नेतृत्व किया था। भाजपा सरकार के लिए दरभागुड़ा विस्फोट बहुत बड़ा धक्का था। दिल्ली तक इस कार्रवाई की गूंज सुनाई दी थी। इस विस्फोट के बाद ही जुडूम की बड़ी-बड़ी रैलियों व सभाओं पर रोक लग गई थी। गुण्डों के हौसले पस्त होने शुरू हो गए थे। 2006 के अप्रैल माह में इंजरम बैस कैंप पर पीएलजीए के द्वितीय बल व जन मिलिशिया को लेकर हमला कर सलवा जुडूमी गुंडों और एसपीओं का सफाया करने में उन्होंने भाग लिया था। इस कैंप के गुंडों का गांवों में भयंकर आंतक छाया हुआ था। इस हमले के बाद जनता को काफी राहत मिली थी। उसी वर्ष जुलाई में एर्राबोर 'राहत' शिविर पर सैकड़ों मिलिशिया, मुख्य व द्वितीय बलों ने मिलकर एक बड़ा हमला कर 33 से ज्यादा एसपीओ का सफाया किया था। इस हमले में भी कॉमरेड चंदू की भूमिका बेहद साहसिक रही थी।

2006 के अगस्त में दक्षिण बस्तर डिवीजन का चौथा पार्टी अधिवेशन सम्पन्न हुआ था। इसमें प्रतिनिधि के रूप में कॉमरेड चंदू ने भाग लिया था। विगत पांच सालों के कार्यों पर समीक्षा करने व पार्टी द्वारा किये गए निर्णयों और उनके अमल करने में हुई खामियों पर हुई तीखी बहस में उन्होंने गंभीर रूप से भाग लिया था। अधिवेशन में नई कमेटी के पैनल में कॉमरेड चंदू का नाम भी था। इस अधिवेशन में उन्हें डिवीजनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। सम्मेलन के बाद हुई प्रथम बैठक में उन्हें कंपनी-3 में तबादला करने के कमेटी के निर्णय को उन्होंने तहेदिल से माना। उन्हें कंपनी पार्टी कमेटी सदस्य की जिम्मदारी प्रदान की गई। तब से लेकर शहादत तक वह इसी पद पर रहते हुए दृढ़ता से काम करते रहे।

अमर शहीद कॉमरेड चंदू का जीवन युवा पीढ़ी के लिए कई मायनों में आदर्श है। दक्षिण बस्तर के उरपलमेट्टा में 10 जुलाई 2007 को हुए ऐतिहासिक हमले में कॉमरेड चंदू ने कंपनी उप-कमांडर के रूप में भाग लिया था। इस हमले के बाद तुरंत किये गए ताड़मेट्ला, तोंगुडे़म, गोल्लापल्ली (बट्टीगुडे़म), मुरलीगुड़ा आदि सिलसिलेवार हमलों से लेकर मिनपा एंबुश तक कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लेकर कई पुलिस वालों का सफाया करने, दर्जनों अत्याधुनिक हथियारों को जब्त करने और पीएलजीए की मारक क्षमता को बढ़ाने में कॉमरेड चंदू का जबर्दस्त योगदान रहा। तीव्र होते हुए जनयुद्ध में एक योग्य व बहादुर कमांडर को खोना पीएलजीए के लिए बड़ा नुकसान है। कंपनी-3 द्वारा किये गए तमाम हमलों में भाग लेकर पूरी पीएलजीए के सामने उसे एक आदर्श कम्पनी के रूप में प्रस्तुत करने में कॉमरेड चंदू का बड़ा योगदान रहा। आज कॉमरेड चंदू भले ही हमारे बीच नहीं रहे परंतु उनके आदर्शों पर चलते हुए हजारों पीएलजीए योद्धा उन जैसे बनकर अवामी जंग को जरूर तेज करेंगे।

कॉमरेड मुचाकी देवा छोटी उम्र में ही पार्टी में शामिल होकर, कदम-ब-कदम बढ़ते हुए दण्डकारण्य आंदोलन में एक महत्वपूर्ण कमाण्डर के रूप में उभरे थे। अपनी करीब 20 साल की क्रांतिकारी जिंदगी में कॉमरेड चंदू ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन में आए उतार-चढ़ावों को देखते हुए, हार-जीतों का सामना करते हुए वह अपनी राजनीतिक समझ को, चेतना को विकसित करते गए। पार्टी में रहते हुए पढ़ना-लिखना ही नहीं बल्कि हिंदी और तेलुगू भाषाओं को भी सिखा। पार्टी साहित्य, पत्रिकाओं, सरकुलरों और रिपोर्टों को पढ़ना व पढ़कर साथी कॉमरेडों को सिखाना और उन्हें अच्छे कॉमरेड के रूप में विकसित करना वह बखूबी करते थे। थोड़ा सा भी समय मिलने से वह अध्ययन में लग जाते थे। पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले लेखों पर, ऊपरी कमेटी के कॉमरेडों से मिलने पर जरूर चर्चा करते थे व अपनी समझदारी को बढ़ाने का निरंतर प्रयास करते थे। समय का सही इस्तेमाल करते हुए, जनता के साथ कम्युनिस्ट संबंध कायम करने में वह आगे रहते थे। उन्हें क्रांतिकारी राजनीति समझाते थे। जनता में क्रांतिकारी आंदोलन पर विश्वास बढ़ाने के लिए वह जनता को इतिहास समझाते थे।

दक्षिण से उत्तर व पश्चिम ब्यूरो क्षेत्र यानी पूराने दण्डकारण्य के बालाघाट, भंडारा, मलकानगिरी, कोरापुट सब जगह उन्होंने घूमा और काम किया। कलिमेला थाना और कोरापुट जिला पुलिस हेडक्वार्टर्स पर किए गए हमलों में कॉमरेड चंदू ने प्रत्यक्ष भाग लिया था और अपनी सैनिक प्रतिभा का बढ़िया प्रदर्शन किया था। पार्टी द्वारा सौंपे गए हर दायित्व उन्होंने जिम्मेदारी के साथ निभाया। पार्टी की जरूरतों के अनुसार सैनिक इकाइयों में कई बार उनका तबादला इधर-उधर होता रहता था। परंतु कभी उन्होंने पार्टी के प्रस्ताव पर ना-नुकुर नहीं किया, बल्कि हर प्रस्ताव को अपनी सिर-आंखों पर लिया। जहां भी, जिस सैनिक इकाई में भी रहे वह उसे सुदृढ़ करने के लिए प्रयास करते रहे। छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में गुरिल्ला जोन को आधार इलाके में विकसित करने और पीएलजीए को पीएलए बनाने के क्रम में हमने इस बेजोड़ कॉमरेड को खो दिया है। कॉमरेड चंदू की शहादत से प्रेरणा लेकर उनके आदर्शों को साकार बनाने की कसम हम सब कॉमरेडों को खानी है।

## जांबाज लाल योद्धा कॉमरेड बाबू

गंगालूर एरिया ने कई वीर योद्धाओं को जन्म दिया है। इसी एरिया के गांव पुंबाड (पुसनार) में पुनेम मंगू व पूनेम सनकी दंपत्ति की पहली संतान थे कॉमरेड बाबू। बुधराम नाम से उनके माता-पिता उन्हें बड़े प्यार से पुकारते थे। उनकी मां उसे और

उसकी दो बहनों को जन्म देने के बाद बीमारी के कारण चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में गुजर गई थीं। कॉमरेड बाबू की मां अपनी दुधमुंही बच्ची को छोड़ गुजर जाने के कारण उनका व उनकी दो छोटी-छोटी बहनों का लालन-पालन उनकी मौसी के घर हुआ।

बैलाडीला पहाड़ों से सर-सरकर बहती मीनागच्चल नदी की लहरों में नहाते-धोते, खेलते-कूदते उनका बचपन बीता। गांव में पुनेम परिवार के देवता (पेन) का काटुरा करसाड़ (मेला) होता तो वह सभी बच्चों के साथ नाचने-गाने में बड़ी खुशी से भाग लेते थे। आदिवासी रीति-रिवाजों और परंपराओं को गांव के बड़े-बूढ़ों से ध्यान से सुनते थे। इसी गांव में महान भूमकाल के समय पेद्दा डोडा नामक पडियोर (योद्धा) शहीद हुए थे। उनके बारे में प्रचलित लोककथाओं को सुनते-सुनते वह बड़े हुए। बचपन से ही उनके मासूम दिल में आदिवासियों के शोषण को देख बड़ी बेचैनी पैदा होती थी और प्रश्न उठते थे कि आखिर क्यों इतनी खनिज संपदा, प्राकृतिक संपदा होने के बावजूद हम गरीब हैं?

वह थोड़ा बड़े होकर डीएकेएमएस के सदस्य बने और गांव के सांमती पारंपरिक मुखियाओं के शोषण व दबाव के खिलाफ संघर्षों में भाग लेने लगे। गांव में जन संगठन में रहते हुए वह अपनी राजनीतिक चेतना की धार को पैनी करने लगे थे। उनके पिताजी ने उनकी शादी छोटी उम्र में ही करवा दी थी। परंतु वैवाहिक जीवन ज्यादा समय तक नहीं चल पाया। उनकी जीवनसंगिनी अकाल मृत्यु का शिकार हो गई। वह खेती-किसानी करने में, बैलाडीला की खदानों में दैनिक मजदूरी के काम में अपना ध्यान लगाया करते थे। अपने परिवार को चलाने के लिए उन्होंने हर तरह के कामों में भाग लिया। अपनी बहनों की हर जरूरत का वह बहुत अच्छे से ख्याल रखते थे। गांव के बड़े-बूढ़ों के प्रति उनका व्यवहार सम्मानजनक रहता था। एक साफ-सुथरी और ईमानदार नौजवान की छवि गांव में उनकी थी। सन् 1998 के जुलाई महीने में कॉमरेड बाबू ने पार्टी के पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में अपनी क्रांतिकारी जिंदगी की शुरूआत की।

भैरमगढ़ एरिया की सीएनएम टीम के सदस्य के रूप में उन्होंने अपना क्रांतिकारी जीवन आगे बढ़ाया। भैरमगढ़ की स्थानीय सीएनएम टीम के कमांडर की जिम्मेदारी कॉमरेड बाबू को सौंपी गई। यह फरवरी 2000 की बात थी। सीएनएम में अनुशासनबद्ध सांस्कृतिक कर्मी के रूप में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। वह साथियों से बहुत जल्दी अच्छे से घुलमिल जाते थे। हंसमुख, मासूम चेहरे वाले कॉमरेड बाबू कभी घमंड से बात नहीं करते थे। नव जनवादी सांस्कृतिक आंदोलन के बारे में वह गहराई से सोचते थे। अध्ययन पर हमेशा ध्यान देते थे। बहुत सारे गीतों पर जोशीला नाच कम्पोज कर साथी कॉमरेडों को उसमें प्रशिक्षित करते थे। गंगालूर-भैरमगढ़ एरिया में 28 जुलाई, 8 मार्च जैसे राजनीतिक कार्यक्रम हों या फिर अकाल समस्या पर, पृथक बस्तर जैसे मुद्दों पर हुई कई जनसभाओं में जनता में क्रांतिकारी संदेश ले जाने के लिए उन्होंने प्रभावी काम किया। कई गांवों में सांस्कृतिक टीमों को विकसित करने का श्रेय कॉमरेड बाबू को जाता है। आज भी भैरमगढ़-गंगालूर की जनता के दिलों में अमर शहीद बाबू के गीतों के स्वर गूंजते हैं।

2000 दिसंबर में डीके पार्टी के तीसरे सम्मेलन के आयोजन के बाद पार्टी ने डीके सीएनएम टीम बनाने का निर्णाय लिया था। जून 2001 से कॉमरेड बाबू ने डीके जोन सीएनएम टीम में सदस्य रहकर कुछ समय तक नेतृत्व भी किया। पूरे दण्डकारण्य में सांस्कृतिक कर्मी के रूप में उन्होंने काम किया। माड, उत्तर बस्तर और गड़चिरोली के कलाकारों से मिलकर कई कार्यक्रम उन्होंने पेश किये। दण्डकारण्य की जनता में प्रचलित कई सांस्कृतिक विधाओं से सीखने, उन्हें क्रांतिकारी राजनीति के अनुरूप ढालने में, नए-नए गीतों, नाचों व नाटकों को सीखने में वह सदा तत्पर रहते थे। 2002 में हुई अखिल भारतीय सांस्कृतिक कार्यशाला में प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने भाग लिया। पार्टी की फौजी जरूरतों के मुताबिक वर्ष 2003 से सीएनएम के सांस्कृतिक योद्धा से छापामार योद्धा के रूप में स्थानीय गुरिल्ला दस्ते (एलजीएस) में उनके काम में बदलाव हुआ।

**पीएलजीए के कमांडर के रूप में कॉमरेड बाबू:** 2003 में सीएनएम से रीलीव होकर कुछ दिन मद्देड़ एरिया में उन्होंने काम किया। एरिया कमेटी सदस्य के रूप में रहते हुए आवापल्ली, मद्देड़ और पटनम एरिया की जनता को संगठित किया। बाद में डिवीजनल कमेटी ने 2004 से नेशनलपार्क के एलजीएस में उनका तबादला किया। छापामार दस्ते में उन्हें डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी प्रदान की गई। वह गुरिल्ला कार्रवाइयों में सक्रियता से भाग लेते-लेते 2005 में दस्ता कमांडर बने।

2005 के मार्च माह में कुटरू से वेदेरे थाने के लिए रसद ले जा रहे पुलिस वालों के ट्रेक्टर को जब्त किया गया था जिसका नेतृत्व कॉमरेड बाबू ने किया था। जून माह में क्रांतिकारी आंदोलन के समूल नाश के लक्ष्य से केंद्र-राज्य सरकार ने मिलकर फासीवादी सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू किया था। पश्चिम बस्तर के नेशनलपार्क एरिया में कुटरू-फरसेगढ़ अंचल में शुरू कर जुडूम के गुंडे लगातार गांवों पर हमले करते गए। उन्हें सबक सिखने के लिए ताड़मेंड्री में किए गए प्रतिरोधी कार्रवाई में कॉमरेड बाबू की भूमिका महत्वपूर्ण थी। बाद में मूकावेल्ली, सागमेट्टा आदि गांवों में हमला करने आए पुलिस व जुडूमी गुंडों पर गोलीबारी कर मार भगाने में उनकी भूमिका साहसिक रही। जब जनता सलवा जुडूमी आतंक से खौफ खाकर 'राहत' शिविरों की तरफ पलायन कर रही थी तो जनता का ढाढ़स बंधाकर प्रतिरोध के लिए लामबंद करने में कॉमरेड बाबू की भूमिका अविस्मरणीय थी। कई गांवों के जन मिलिशिया को व रंगरूटों को प्रशिक्षण देने में उनकी मुख्य भूमिका रही। कुटरू, करकेली और मुखरम के पास सलवा जुडूम गुंडों का

सफाया करने में वह आगे रहे। सलवा जुडूम के दमनचक्र का प्रतिरोध करने और आंदोलन को मजबूत करने के लिए ही वह हमेशा सोचते रहते थे। इसी पर पार्टी एरिया कमेटी में चर्चाएं करते थे। एलजीएस कमांडर रहते हुए उन्होंने एरिया कमांडर-इन-चीफ का दायित्व भी स्वीकार किया। जन मिलिशिया दस्तों का गठन करने व मजबूत करने के उन्होंने अच्छे प्रयास किये।

भर्ती के समय वह एक अनपढ़ कॉमरेड थे। परंतु पार्टी में रहते हुए उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। 'प्रभात', 'अवामी जंग' जैसी हिंदी पत्रिकाओं सहित वह 'वियुक्का', 'पडियोरा पोल्लो' आदि गोण्डी पत्रिकाएं भी पढ़ते थे। पार्टी द्वारा जारी होने वाले पर्चों और सरकुलरों को पढ़कर साथियों को सुनाते और समझाते थे।

**12वीं पलटन कमांडर के रूप में कॉमरेड बाबू:** 2006 के मई महीने में जब हरेक एरिया कमेटी के तहत पलटन का गठन करने का निर्णय एसजेडसी ने लिया था तब नेशनल पार्क से कॉमरेड बाबू को गंगालूर में तैनात 12वीं पलटन में स्थानांतरित किया गया था। पहले उप कमांडर और बाद में 2007 में पलटन कमांडर का कार्यभार उन्हें सौंपा गया। 2007 से 2009 फरवरी तक 12वीं पलटन का कमांडर रहते हुए पीएलजीए के प्रधान बल के साथ मिलकर पामुलवाया के पास पुलिस पर किये गए दो ऐम्बुशों में उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ भाग लिया था। इसके बाद गंगालूर के आस-पास कई एसपीओ का सफाया करने में, विशेषकर दुश्मन के खुफिया तंत्र को ध्वस्त करने में उन्होंने काफी मेहनत की। कई बदनाम मुखबिरों को खत्म करने, गिरफ्तार कर जन अदालत में घसीटने में उन्होंने अच्छी खासी भूमिका निभाई। 12वीं पलटन के कॉमरेडों की सैनिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए हर कॉमरेड पर वह ध्यान रखते थे। उनके हर सुख-दुख व परेशानी में वह शामिल होते थे।

जनता के साथ वह हमेशा सम्मानजनक व्यवहार करते थे। उनके साथ घनिष्ठ संबंध कायम रखते थे। 'जनता ही इतिहास की निर्माता है' - इस महान मार्क्सवादी अवधारणा को उन्होंने हमेशा दिल में रखकर तन-मन से एक सच्चे कम्युनिस्ट योद्धा के रूप में काम किया। 2007 में संपन्न पार्टी की एकता कांग्रेस द्वारा सौंपे गए कार्यभारों को पूरा करने के लिए व दुश्मन के दमनचक्र का नाश करने के लिए दक्षिण सबजोन में कंपनी-8 का गठन किया गया। तब 12वीं पलटन का भी कंपनी-8 में विलय हो गया। कंपनी-8 में उन्हें कंपनी पार्टी कमेटी के सदस्य के रूप में शामिल किया गया। कपंनी-8 का गठन करने के बाद पहली सैनिक कार्रवाई के तौर पर 15वीं लोकसभा के फर्जी चुनावों के बहिष्कार के दौरान मिनपा एंबुश हुआ। लगभग 4 घंटे तक चले इस भीषण संघर्ष में कॉमरेड बाबू वीरगति को प्राप्त हुए। अपनी शहादत के समय वह मात्र 30 साल के युवा थे। इस तरह एक अनुभवी योद्धा और उभरता हुआ सैन्य कमाण्डर हमसे सदा के लिए विदा ले गए।

कॉमरेड बाबू ने अपने पूरे जीवन में वर्ग-दुश्मनों और उनके भाड़े के गुण्डों व हत्यारों के खिलाफ जिस शूरता से लड़ा, पीएलजीए के हर योद्धा को उसका अनुसरण करना चाहिए। यह कॉमरेड बाबू समेत तमाम शहीदों के सपनों को साकार बनाने के लिए बेहद जरूरी है।

## पुम्बाड का वीरसपूत कॉमरेड पूनेम दसरू

25 वर्षीय कॉमरेड दसरू का जन्म भी पुम्बाड गांव में ही हुआ था। अब तक इस गांव ने क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अपने कई बेटे व बेटियां दीं और उतने ही गर्व के साथ शहादत की वीर परम्परा को ऊंचा उठाए रखा। वह कोया समुदाय के एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। कॉमरेड दसरू के मां-बाप सनकी और मेसूम हैं। कितनी भी कड़ी मेहनत-मजदूरी करने के बाद भी उनके परिवार का गरीबी से कभी पीछा नहीं छूटा। उनके परिवार के पास थोड़ी सी जमीन होने के चलते साल भर के लिए खाने को भी धान नहीं पैदा हो पाता था। इसलिए उनकी मां-बाप को मजदूरी करने के लिए बैलाडीला जाना पड़ता है। साल भर कुछ मजदूरी और कुछ खेती-किसानी कर अपने परिवार का मुश्किल से भरण-पोषण कर पाते थे। जब कॉमरेड दसरू बहुत छोटे थे तभी उनके पिताजी का निधन हो गया था। अपनी मां के साथ काम करते हुए वह अपना जीवन-यापन कर रहे थे। वह घर की दूसरी संतान थे। उनके घर में कमाई करने वालों की कमी के चलते बचपन में ही उन्होंने हल पकड़ा था। खेती, मजदूरी कर अपने परिवार को चलाने का बोझ उनके छोटे कंधों ने संभाला। दोनों भाइयों ने मिलकर अपने घर को चलाया।

कॉमरेड दसरू के परिवार के पास हल जोतने के लिए एक बैल भी नहीं होता था। पहले वह बेगारी में जमींदार की जमीन जोतते और उसके बाद उसके हल से अपने खेत की जुताई करते थे। जुताई के अलावा भी हर रोज उनके परिवार को जमींदार का काम करने के लिए मजदूरी के लिए जाना पड़ता था। सिर्फ जुताई के लिए उन्हें जमींदार का साल भर काम करना पड़ता था। कॉमरेड दसरू ने कभी जमींदारों, कभी दुकानदारों आदि के पास काम कर अपने परिवार को बमुश्किल चलाया। हाड़तोड़ मेहनत भी उनके परिवार की स्थिति को सुधार नहीं पाई। स्वाभाविक ही था कि ये प्रश्न उनको कुचेटने लगे कि कठोर परिश्रम के बाद भी यह बदहाल जिंदगी क्यों? किसके कारण से ऐसा? इसे कैसे बदला जाए?

पुम्बाड गांव की गिनती मजबूत क्रांतिकारी गांवों में होती है। जहां जन संगठन, जन मिलिशिया और जनताना सरकार का कामकाज निरंतर चलता रहता है। जन संगठनों ने वहां के जमींदारों और शोषकों के खिलाफ संघर्ष किया। कॉमरेड दसरू उसे देख कर बहुत प्रभावित हुए और संगठन की गतिविधियों में भागीदारी लेने लगे। अपनी समझदारी को बढ़ाने लगे। उसे अपनी खराब स्थिति के कारण समझ आने लगे। उन्होंने पार्टी में भर्ती होने की इच्छा जाहिर की तो उन्हें पार्टी में भर्ती कर लिया

गया। कॉमरेड दसरू ने जब यह निर्णय लिया तो बेहद दृढ़ संकल्प से लिया, जिसे उसने अंतिम सांस तक निभाया और मुस्कराते हुए जनयुद्ध में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

पार्टी ने जरूरतों को देखते हुए भर्ती होते ही उन्हें तुरंत नेशनल पार्क एरिया में स्थानांतरित किया। एक साल तक वह वहीं काम करते रहे। वहां की जनता में लोकप्रिय बने थे। दस्ते में रहते हुए हरेक काम में, जनता के कई कामों में वह उत्साह के साथ भाग लेते थे। फौजी कार्यो में उनकी खास रुचि थी और उसमें आगे रहते थे। वहां नेशनलपार्क एरिया के जमींदारों की जालिमाना हरकतों के खिलाफ व मुखबिर तंत्र को ध्वस्त करने की कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया। ये सब देखकर पार्टी ने कॉमरेड दसरू को फौजी मोर्चे पर तैनात करने का फैसला किया।

2005 में कंपनी-2 का गठन हुआ था। इस कंपनी में शुरू से ही कॉमरेड दसरू सदस्य रहे। फौजी मोर्चे पर नया होने के बाद भी उन्होंने उत्साह के साथ भाग लिया। यह समय घोर श्वेत आतंक का समय था। सलवा जुडूम के नाम से सब कुछ बर्बाद करने का वहशी अभियान जारी था। जनता के खून से अर्ध सैनिक बल और एसपीओ-गुण्डे होली खेल रहे थे। इस भयंकर दमनचक्र को देखकर वह डगमगाए नहीं, बल्कि उन्होंने खुद को मजबूत वर्ग चेतना से लैस कर अपने साहस को बढ़ा लिया। वर्ग संघर्ष में अपनी अंतिम सांस तक लड़ने का निर्णय लिया। वह फौजी कामों का निरंतर अनुभव प्राप्त करते हुए आगे चलकर जल्द ही सेक्शन कमांडर नियुक्त हुए।

कॉमरेड दसरू के क्रांतिकारी दृढ़ संकल्प को देखते हुए कंपनी पार्टी कमेटी ने 2006 के जनवरी महीने में उन्हें पार्टी की उम्मीदवारी सदस्यता प्रदान की। इसी वर्ष जून में उनकी चेतना व कामों में सक्रिय भागीदारी को देखते हुए पार्टी सदस्य बना दिया गया। उन्होंने इसे बहुत ही उत्साह के साथ लेते हुए पार्टी सदस्यता का शपथ-पत्र को पढ़कर आगे बढ़ने का संकल्प लिया। 2006 अगस्त में जब कंपनी-3 का गठन किया गया तो कुछ कॉमरेडों को कंपनी-2 से कम्पनी-3 में स्थानांतरित करना पड़ा। इस तरह कॉमरेड दसरू कंपनी-3 में शामिल हो गए। उन्हें कहीं भी भेजा जाता था तो वह उसे खुशी से स्वीकार करने वाले कॉमरेड थे। उन्होंने पार्टी के राजनीतिक, सैद्धांतिक व सैनिक पहलुओं को सीखने के लिए तत्परता दिखाई। घर में मात्र दूसरी तक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उन्होंने पूरे लगन के साथ पढ़ना-लिखना अच्छी तरह सीखा। हिंदी भाषा भी सरलता के साथ बोलने की वह कोशिश करते थे। हिंदी के साथ-साथ उन्होंने अंग्रेजी और तेलुगू भाषा को भी पढ़ना-लिखना सीखने की कोशिश की।

कंपनी-2 व कंपनी-3 द्वारा किये गए कई हमलों में भाग लेकर उन्होंने खासा अनुभव हासिल किया और इस तरह खुद को भी एक बहादुर योद्धा के रूप में उभारा। 2007 अक्टूबर में कंपनी पार्टी कमेटी ने उन्हें पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति प्रदान की। उन्हें पूर्ण रूप से सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी भी इसी दौरान दी गई। कम अनुभव होने के बावजूद उन्होंने इसे विश्वास के साथ स्वीकार किया और अपने कौशल को बढ़ाने का प्रयास किया।

**फौजी कार्रवाइयों में कॉमरेड दसरू का योगदानः** पिछले छह सालों में सैनिक मोर्चे पर रहते हुए कंपनी-2 व 3 में रहकर उन्होंने कई फौजी कार्रवाइयों में, घात लगाकर किये गए हमलों में और आमने-सामने की मुठभेड़ों में भाग लिया। 2006 में पार्टी ने एक विशेष टीसीओसी चलाने का निर्णय लिया था ताकि फासीवादी सलवा जुडूम को परास्त किया जा सके। इसके तहत 29 जनवरी 2006 को पीएलजीए ने गंगालूर स्थित सलवा जुडूम कैंप पर हमला किया। उसका लक्ष्य फासीवादी सलवा जुडूम के नेताओं, एसपीओ और गुंडों का सफाया करना था। इस हमले में कॉमरेड दसरू ने एक अहम टीम में रहकर थाना और 'राहत' शिविर के बीच घात लगाकर बैठा और करीब एक घंटे तक दुश्मनों की मदद को आने वाले पुलिस बलों को रोके रखा। शायद यही पहला मौका था जब कॉमरेड दसरू ने गोली चलाने का अनुभव प्राप्त किया। इससे पहले उन्होंने कभी बंदूक से गोली नहीं चलाई थी। युद्ध करते हुए ही युद्ध को सीखने के माओवादी उसूल का सही अमल था यह। 10 फरवरी 2006 को बैलाडीला बारूद डिपो पर किये गए ऐतिहासिक हमले में कॉमरेड दसरू ने एलएमजी सहायक के रूप में भाग लिया। इस टीम ने टॉवर पर बने बंकर को ध्वस्त करने का महत्वपूर्ण काम किया था। ज्ञात रहे कि इस हमले में करीब एक हजार जन मिलिशिया के साथ मिलकर पीएलजीए बलों ने 20 टन बारूद जब्त किया था। 2006 के मई महीने में गगनपल्ली गांव को उजाड़ने व जनता की संपत्ति को बर्बाद करने आए पुलिस बलों पर कंपनी-2 की पलटन-2 ने हमला कर एक पुलिस वाले को मौत के घाट उतारा था और दो-तीन को घायल कर दिया था। इस एंबुश में भी कॉमरेड दसरू ने अपने सेक्शन के साथियों के साथ बहादुरी का प्रदर्शन किया था। सलवा जुडूम पर करारा हमला करने के लिए 14 जुलाई 2006 को एर्राबोर सलवा जुडूम कैंप पर हमला किया गया था। इसमें भी उन्होंने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। सलवा जुडूम के कैंप के अंदर घुसकर तथा गुंडों की मदद को आने वाले पुलिस वालों को रोकने में फुर्ति के साथ भाग लिया। इस हमले ने शासक वर्गों को हिला कर रख दिया था। 29 अगस्त 2007 को जेगरगुंडा थानेदार के नेतृत्व में आए सीएएफ व एसपीओ बैच पर कंपनी-3 ने हमला किया जिसमें थानेदार सहित 12 दुश्मनों को मौत के घाट उतार दिया गया और 14 आधुनिक हथियार छीन लिए गए थे। इस शानदार हमले में कॉमरेड दसरू ने सक्रियता के साथ भाग लिया। पुलिस बलों को दूसरी तरफ से घेरते हुए भागने वाले पुलिस बलों पर एलएमजी से फायर कर एक जवान को खत्म कर डाला।

2 नवम्बर 2007 को पामेड़ इलाके के तोंगुडेम गांव में किये गए डेलिब्रेट एंबुश में 11 पुलिस वालों का सफाया कर 11 हथियार जब्त किए गए थे। इस कार्रवाई में भी उन्होंने अपने

सेक्शन को लेकर पीछे से घेरते हुए कई दुश्मनों को चोट पहुंचाई। तथा भागने वाले कायर पुलिस वालों को आधा किलोमीटर तक दौड़ाकर भगा दिया। इस तरह लड़ाइयों में अपने सेक्शन को सुचारू रूप से चलाने में कॉमरेड दसरू ने अच्छा-खासा अनुभव हासिल किया।

2007 दिसंबर में गोल्लापल्ली और किष्टारम के बीच किए गए शानदार डेलिब्रेट एंबुश में भी कॉमरेड दसरू ने अहम भूमिका निभाई। अपने सेक्शन के साथ बगल से दुश्मन को घेरते हुए सभी दुश्मनों को बीच में फंसा दिया। फंसे हुए सभी 12 पुलिसकर्मियों को खत्म कर दिया गया था। इस हमले में 12 हथियार पीएलजीए ने जब्त किए थे। इस एंबुश में हमारे 3 प्रिय कॉमरेड शहीद भी हो गए थे। परंतु कॉमरेड दसरू इससे से जरा भी नहीं घबाराए और दुगने जोश के साथ लड़ते रहे। साथियों की शहादत का बदला लेने का उन्होंने संकल्प लिया और आगे बढ़ते गए।

2008 जून महीने में कोंटा इलाके के बंडा गांव के पास किए गए एंबुश में पीएलजीए ने 4 पुलिस वालों का सफाया कर 5 एसपीओं को बंधक बनाया था। इस एंबुश में कॉमरेड दसरू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसमें भी उन्होंने अपने सेक्शन को लेकर बगल से दुश्मन का घेराव किया और पलटन कमांडर का आदेश मिलते ही भागने वाले दुश्मनों को दूर से घेरकर उन्हें गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। नवंबर 2008 में विधानसभा चुनाव के समय मतदान केंद्रों की 'सुरक्षा' के लिए आए पुलिस बलों पर पीएलजीए ने हमला किया तथा आंशिक रूप से नुकसान कर उन्हें भगा दिया। कॉमरेड दसरू ने अपने सामने मौजूद दुश्मनों को ललकारा तथा रिट्रीट होने का आदेश आते तक वहां से हिलने का नाम नहीं लिया।

10 अप्रैल को मिनपा में हुए संघर्ष में कॉमरेड दसरू ने बेहद बहादुरी के साथ अपने सेक्शन के साथियों का नेतृत्व किया। आदेश मिलते ही वह एड्वांस कर गए। दुश्मन के बहुत ही नजदीक तक जाकर उसे ललकारते हुए गोलियां बरसनी शुरू कीं और दुश्मनों को सरंडर करने की चेतावनी दी। इसी दौरान कॉमरेड दसरू को निशाना बनाते हुए दुश्मन ने गोलियां दागीं। एक निर्भीक और निडर योद्धा की तरह उन्होंने दुश्मन की गोलियों को अपनी छाती पर झेला। घायल होने पर भी हिम्मत नहीं हारी। जेब में पड़ी खून बंद करने की दवा ले ली। अंत में उन्होंने अपने गोलियों के पोच, रायफल, जेब में पड़े पैसे आदि निकाल कर साथी कॉमरेडों को सौंप दिए। उन्हीं को बचाने के प्रयासों में कॉमरेड बाबू ने आगे बढ़कर एक वीरयोद्धा की तरह वीरगति को प्राप्त किया। ये दोनों कॉमरेड एक ही गांव और एक ही परिवार के थे, उनकी बहुत ही घनिष्ठ दोस्ती थी। दुश्मन की भारी फायरिंग को देखते हुए कॉमरेड बाबू ने बचे हुए साथियों को एक कमांडर के रूप में रीट्रीट होने का अदेश दिया। उन दोनों कॉमरेडों के शवों को लाने का मौका भी हमारे कॉमरेडों को नहीं मिल पाया। दुश्मन के साथ बहादुरी व शूरता के साथ लड़ते हुए हमारे यह बहादुर युवा कमांडर शहीद हो गए।

पिछले छह सालों से सैन्य मोर्चे पर डटे हुए कॉमरेड दसरू की जिंदगी हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। एक गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे कॉमरेड दसरू पीएलजीए में भर्ती होकर एक अनुशासित व बहादुर योद्धा बने। सभी का दिल जीतते हुए अपनी योग्यता के दम पर सेक्शन कमांडर बने। कई हमलों में भाग लेकर उन्होंने अपना सैनिक अनुभव बढ़ाया और हर हमले में उस अनुभव को जोड़ते हुए अपना युद्ध कौशल बढ़ाया। गुरिल्ला युद्ध के नियमों को सीखा। दुश्मन के आने की खबर सुनते ही वह अपने साथियों को तैयार करने व हौसले देने लग जाते थे। अपने राजनीतिक-सैद्धांतिक व सैनिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किया। जो भी उनको नहीं समझ आता था वह उसे बेहिचक दूसरे कॉमरेडों से पूछते थे। घर में रहते हुए वह दूसरी कक्षा तक ही पढ़ पाए थे, पार्टी में ही उन्होंने अच्छे से पढ़ना-लिखना सीखा। हिंदी पढ़ना व बोलना सीखा। जो भी काम कॉमरेड दसरू को सौंपा जाता वह उसे समय पर पूरा करते थे। यह उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगाने वाले गुण हैं। आइए, इस नौजवान साथी के अधूरे सपनों को पूरा करने के मकसद को कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाने की कसम खाएं और उनके आदर्शों को अपनी जिंदगी में उतारने की कोशिश करें।

## जन गुरिल्ला वीरयोद्धा कॉमरेड रिंकू

मिनपा गांव में दुश्मन पर किए गए जबर्दस्त हमले में शहीद हुए बहादुर साथियों में चौथा कॉमरेड हैं रिंकू। वह कंपनी-3 के कमांडर के गार्ड थे। दक्षिण बस्तर डिवीजन में कोंटा एरिया के गेरपाड गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में वह पैदा हुए थे। उनके माता-पिता ने उन्हें हिड़मा नाम दिया था।

कॉमरेड रिंकू के माता-पिता नंगी और उंगा करीब 20 साल पहले सुकमा एरिया के कोंदाबाड गांव से जमीन के लिए कोंटा इलाके के गांव गरेपाड में आ बसे थे। उनका परिवार हर दिन पहाड़ियों में गोंद आदि इक्ट्ठा करके, बाजार में चावल के साथ अदला-बदली कर किसी तरह अपना जीवनयापन करता था। कॉमरेड रिंकू भी थोड़े बड़े हुए तो इसी काम में लगे रहते थे। अपने घर के काम में या अपने गांव के सामूहिक काम में वह कभी पीछे नहीं रहे। गांव में प्राथमिक पाठशाला न होने के कारण उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई, न ही उनके मां-बाप की ऐसी हैसियत थी कि दूर की स्कूल में कॉमरेड रिंकू को पढ़ाएं। पढ़ाई न होने के बाद भी उन्होंने मुक्ति के संघर्ष को पढ़ लिया।

छत्तीसगढ़ सरकार ने 2006 में कोंटा इलाके में क्रूर फासीवादी सलवा जुडूम अभियान चलाकर सैकड़ों गांवों को उजाड़ दिया था। जानमाल की भारी क्षति पहुंचाई। कॉमरेड रिंकू के घर और गांव को भी जुडूमी गुंडों ने जलाकर राख कर दिया। उनके बड़े भाई के बेटे को भी जुडूमी गुंडों ने मार डाला था, जब वह गोंद इकट्ठा करने के लिए पहाड़ों में घूम रहा था। नगा फोर्स के दरिंदों और सलवा जुडूम के कार्यकर्ताओं ने उनको

पकड़कर क्रूर यातनाएं देकर मार डाला था। और भी बहुत सारे लोगों को इसी तरह मारा और सैकड़ों महिलाओं के साथ बलात्कार किया। इन घोर अत्याचारों को देख कर रिंकू चुप नहीं रह सके। अपनी जनता की रक्षा के लिए व जन मुक्ति के लिए उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान दिया।

कॉमरेड रिंकू ने शुरूआत में जन मिलिशिया की कार्रवाइयों में सक्रियता के साथ भाग लिया था। सलवा जुडूम के आतंक से गांव व जनता को बचाने के लिए जन मिलिशिया में रहते हुए दिन-रात की संतरी ड्यूटियों में वह कभी पीछे नहीं रहते थे। संतरी करते समय और गांव के आसपास गश्त करते समय कई बार जन मिलिशिया पर फायरिंग भी हुई थी। इन्हीं की जन मिलिशिया टुकड़ी ने 2005 में रोड के किनारे क्लेमोर विस्फोट कर एक सीआरपीएफ वाले को खत्म किया था। इस घटना में कॉमरेड रिंकू भी शामिल थे। जन मिलिशिया में रहते समय ही कॉमरेड रिंकू लड़ने के तौर-तरीके सीख गए थे। वह जल्द ही एक अच्छे जन मिलिशिया लड़ाकू के रूप में उभर कर सामने आए।

2006 के जून महीने में कॉमरेड रिंकू पूर्णकालीन सदस्य बन गए। कोंटा एलओएस में भर्ती होकर उन्होंने कुछ समय काम किया। लेकिन फौजी जरूरतों को देखते हुए स्थानीय पार्टी कमेटी ने कंपनी-3 में सैनिक के रूप में उन्हें भेजा। फौजी इकाई में उन्होंने उत्साह के साथ काम करना शुरू किया। पार्टी के हर काम को सीखने के लिए वह गंभीरता से कोशिश करते थे। आंदोलन में पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद एक बार भी उन्होंने घर लौट कर नहीं देखा, न ही ऐसी इच्छा जताई। जनता की सेवा को ही उन्होंने अहम माना। कंपनी-3 में आने के बाद उनके कामकाज और अनुशासन को देखते हुए कंपनी पार्टी कमेटी ने उन्हें पार्टी की उम्मीदवारी सदस्यता प्रदान की। पार्टी सदस्यता उन्हें मार्च 2007 में प्रदान की गई। फौजी तथा अन्य कामों में भी सक्रिय होने के कारण उन्हें जुलाई 2007 में कंपनी-3 कमांडर के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। नेतृत्वकारी कॉमरेडों की सुरक्षा व गार्ड के कामकाज को उन्होंने जल्द ही आत्मसाथ किया व सीखा। जुलाई 2007 से लेकर 10 अप्रैल 2009, यानी अपनी शहादत के समय तक गार्ड रहते हुए जनयुद्ध में अपनी सेवाएं दीं। हमलों में रनर रहते हुए और अन्य खतरे वाले कामों में उन्होंने कभी भी अपनी जान की परवाह नहीं की। अपने कमांडर के हर आदेश को वह सिर-माथे पर लेकर युद्ध में शूरता के साथ लड़ते रहे। कमांडर के हर आदेश को तत्काल दूसरे कमांडरों और सेक्शनों तक पहुंचाने के लिए गोलीबारी के बीच भी बेहिचक दौड़कर जाते-आते थे।

कॉमरेड रिंकू घर में निरक्षर थे। पार्टी में आने के बाद पढ़ाई-लिखाई सीखी। उन्होंने हिंदी भाषा व गिनती सीखने के लिए भरपूर प्रयास किए। पार्टी पत्रिकाओं और पर्चों को पढ़ने की कोशिश लगातार करते थे। सभी कॉमरेडों के साथ वह कॉमरेडाना अंदाज में पेश आते थे। वह एक अच्छे व अनुशासनबद्ध सैनिक थे। उनकी एक और खासियत थी कि वह मछली पकड़ने में बहुत बड़े माहिर थे। तालाब 15-20 फुट गहरा भी हो तो मछलियां उनसे बच नहीं पाती थीं। वह एक अच्छे तैराक भी थे।

**फौजी कार्रवाइयों में कॉमरेड रिंकूः** पिछले साढ़े तीन सालों में कंपनी-3 में रहकर उन्होंने कई शानदार फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया। कई मुठभेड़ों में वीरतापूर्वक लड़ा। मार्च 2007 में आसिरगुड़ा में बारूदी सुरंग का विस्फोट कर 4 नगा फोर्स के दरिंदों तथा 3 एसपीओं को मार गिराया गया था व 8 हथियार पीएलजीए ने जब्त किए। उसमें कॉमरेड रिंकू भी शामिल थे। ऐतिहासिक उरपलमेट्टा हमले में कॉमरेड रिंकू ने बहुत जोश के साथ लड़ा। किसी भी हमले में कॉमरेड रिंकू ने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। शुरू से लेकर आखिर तक वह हिम्मत के साथ डटे रहे। उरपलमेट्टा के बाद ताड़मेट्ला हमले में भी वही जोश कॉमरेड रिंकू ने दिखाया। अपने कमांडर के सुरक्षा कवच की तरह उनकी रक्षा की और दुश्मनों को खत्म करने में भाग लिया। नवंबर 2007 में तोंगुड़ेम एंबुश में उन्होंने असल्ट बैच में रहकर दुश्मन का सफाया किया। दुश्मन के हथियार छीनने में पहलकदमी दिखाई। उसी वर्ष दिसंबर महीने में किष्टारम-गोल्लापल्ली के बीच बट्टीगुड़ा गांव के पास दुश्मन के सप्लाई बैच पर हमला कर 12 दुश्मनों को मौत के घाट उतारा गया था। इसमें भी कॉमरेड रिंकू ने साहस के साथ भाग लिया। जून 2008 में बंडा गांव के पास किए गए हमले में कॉमरेड रिंकू ने एक जिम्मेदार कॉमरेड की भूमिका निभाई। गोलीबारी के बीच में ही रनर काम करके कमांडर के आदेशों को संबन्धित कॉमरेडों तक पहुंचाया और साथ में हमले की ऑडियो रिकार्डिंग भी की।

2009 में 15वीं लोकसभा चुनाव बहिष्कार के दौरान पार्टी ने जनता का दमन करने आने वाले आतंकी पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों का सफाया करने का आह्वान दिया। मिनपा हमले में उन्होंने जनता की रक्षा के खतिर अपना खून बहाया। वह कंपनी कमांडर के गार्ड व रनर की भूमिका निभा रहे थे। इसी बीच दूसरी तरफ से दुश्मन की मदद में एक दूसरी पार्टी आई व उसने बगल से हमला शुरू कर दिया। इसमें कॉमरेड बाबू और दसरू शहीद हो चुके थे। इन दोनों साथियों की मदद के लिए और एक तरफ दुश्मन को रोके रखने के लिए पीएलजीए की एक टुकड़ी फायर करती रही। मदद में की फायरिंग में दुश्मन का एक भाग खत्म भी हुआ और उनके आगे बढ़ने के क्रम को रोकने में कामयाबी भी मिली। मारे गए कुछ दुश्मनों के हथियार जब्त करने के लिए कुछ साथियों के साथ कॉमरेड रिंकू ने भी एड्वांस किया। जब्त कर वापस आते समय कॉमरेड रिंकू को दुश्मन की गोली लगी। वहीं कॉमरेड रिंकू अपने प्राणों को सदा-सदा के लिए जनता के लिए त्याग गए।

कॉमरेड रिंकू एक सीधे-सादे व ईमानदार कॉमरेड थे। सैनिक मामलों में उनकी दक्षता बढ़ रही थी। मिलनसार व्यवहार वाले और निस्वार्थ कॉमरेड रिंकू छोटी उम्र में ही नव जनवादी क्रांति के लिए शहीद हो गए। कॉमरेड रिंकू की जिंदगी नौजवानों को सदा प्रेरणा देती रहेगी। ★

# इंकलाबी राह में जान कुरबान करने वाली वीर नारियों कामरेड कमला और कामरेड पार्वती के सपनों को सकार करेंगे!

10 मार्च 2009 को पूर्व बस्तर डिवीजन के केशकाल एरिया के वाडगो गांव में जब केएएमएस संगठनकर्ताओं की एक टीम अपने काम पर थी, एक मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने बड़ी संख्या में गांव को घेरकर हमला बोला था। उस समय उस टीम की कॉमरेड कमला और कॉमरेड पार्वती दोनों ही निहत्थी थीं। खून के प्यासे पुलिस कुत्ते दोनों महिला कॉमरेडों पर टूट पड़े थे। अमानवीय यातनाएं और अत्याचार झेलकर भी हमारी इन प्यारी कॉमरेडों ने उन भाड़े के टट्टुओं को पार्टी व संगठन का कुछ भी भेद बताने से इंकार कर दिया। दुश्मन की गिरफत में रहकर भी उसे परास्त किया, हमारी बहादुर साथियों ने। अपनी हार को छुपाने के लिए पाशविक पुलिस बलों ने दोनों महिला कॉमरेडों के हाथ-पैर काटकर उनकी बर्बर तरीके से हत्या की। अखबारों और रेडियो में हमेशा की तरह मुठभेड़ की कहानी गढ़कर प्रचारित की। ये दोनों ही कॉमरेड पश्चिम बस्तर डिवीजन के क्रांतिकारी आंदोलन से पैदा हुई थीं। और दोनों भी आंदोलन के विस्तार का जिम्मा अपने कंधों पर लेकर बेझिझक पूर्व बस्तर में केएएमएस के काम में शामिल हो गईं। आइए, इन दोनों वीर नारियों की प्रेरणास्पद जीवनियों पर नजर डालें -

## कॉमरेड कमला

कामरेड कमला

कॉमरेड कमला पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापूर जिला) के गंगालूर इलाके के ईरेल गांव के एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में पैदा हुई थीं। क्रांतिकारी राजनीति से कमला का परिचय बचपन से ही हो गया था। उसी राजनीतिक चेतना के चलते उन्होंने उस शादी से इंकार कर दिया था जो उन्हें पसंद नहीं थी। क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन के नेतृत्व में उन्होंने गांव की महिलाओं को पितृसत्ता एवं रूढ़िवादी रीति-रिवाजों के साथ-साथ शोषक सरकार के खिलाफ संगठित किया। जन मिलिशिया को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सैनिक प्रशिक्षण भी देती थीं। पूरे इलाके में घूमते हुए वह क्रमश: केएएमएस की रेंज कमेटी की नेत्री बन गयी थीं। दण्डकारण्य के क्रांतिकारी जनयुद्ध में सक्रिय भूमिका अदा करने वह सन् 1998 में दल में भर्ती होकर पेशेवर क्रांतिकारी बन गयी थीं। सन् 2000 में दक्षिण बस्तर में गठित एक एसजीएस की उप-कमांडर नियुक्त हुई थीं। उसके कुछ ही समय बाद काम के प्रति उनकी ईमानदारी एवं निष्ठा को देखकर पार्टी ने उनका तबादला पलटन-6 में किया था। तब से लेकर पलटन-6 से तबादला होते तक करीबन 4-5 साल तक वह उसकी एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी थीं।

पार्टी के द्वारा सौंपे गए सभी कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। पार्टी अनुशासन का सख्ती से पालन करती थीं। काम के प्रति जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार उनकी उम्र और अनुभव की तुलना में काफी परिपक्व था। सौंपी गयी जिम्मेदारियों को लगन के साथ अथक मेहनत करके पूरा करती थीं। पार्टी की ऐसी विश्वसनीय कॉमरेड बन गयी थीं कि कॉमरेड कमला को एक बार काम सौंपकर निश्चिंत रह सकते थे। वह जरूर उसे सफल बनाती थीं।

कॉमरेड कमला न सिर्फ पार्टी के प्रति बल्कि जनता के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाती थीं। जनता के प्रति उसका व्यवहार हमेशा जिम्मेदारी भरा रहता था। उत्पादन में शामिल होने में, जनता को साफ-सफाई सिखाने में, उनका इलाज करने में वह हमेशा आगे रहती थीं। पिछड़े आदिवसी इलाके में जन्म लेने के कारण कॉमरेड कमला को घर में रहते समय शाला नसीब नहीं हुई थी। लेकिन पार्टी में शामिल होने के बाद उन्होंने सैनिक कुशलताओं के साथ-साथ पढ़ना-लिखना भी सीख लिया था।

बांदे रेड में, चेरपाल एंबुश में और ताकिलोड आपर्चुनिटी एंबुश/रेड में कॉमरेड कमला की साहसिक भागीदारी ने उस इलाके की जनता में काफी उत्साह पैदा किया था।

सन् 2005 में पलटन-6 से कॉमरेड कमला का उत्तर बस्तर डिवीजन में तबादला हो गया था। एलओएस कमांडर की जिम्मेदारी निभाती हुई केशकाल इलाके की जनता की चहेती बन गयी थीं। सितंबर 2007 में जब पूर्व बस्तर डिवीजन गठित हुआ था तब से केशकाल इलाके के साथ-साथ कॉमरेड कमला स्वयं भी उस डिवीजन का हिस्सा बन गयी थीं। वह एरिया कमेटी सदस्या की हैसियत से बार्दा इलाके की सांगठनिक जिम्मेदारियां निभा रही थीं। कॉमरेड कमला की मृत्यु पूर्व बस्तर डिवीजन के क्रांतिकारी महिला आंदोलन के लिए बहुत बड़ा नुकसान है।

## कॉमरेड पार्वती

जून 2005 में केन्द्र व राज्य सरकारों ने सलवा जुडूम शुरू किया ताकि दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन का दमन किया जा सके। भैरमगढ़ के पास के कुटरू इलाके में सबसे पहले इसकी शुरूआत हुई थी। उन्होंने जून 2005 में कोतरापाल गांव

पर हमला किया था लेकिन जनता ने जबर्दस्त मुकाबला करते हुए गुण्डों और उनके नेताओं को मार भगाया। बाद में गुण्डा नेता महेश गागड़ा, विक्रम मंडावी आदि ने गुण्डों और नगा पुलिस को साथ लेकर पोल्लेवाया, पोंदुम, पातरापारा, केशकुत्तुल आदि गांवों में तबाही मचाई। कई घरों को जला दिया। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया। कई निर्दोष लोगों की हत्या की। इस तरह हर तरफ श्वेत आतंक मचा हुआ था। ऐसी स्थिति में भी पोल्लेवाया गांव की जनता क्रांतिकारी आंदोलन में दृढ़ता से खड़ी हो गई। डीएकेएमएस, केएएमएस, सीएनएम और जन मिलिशिया जनता का हौसला बढ़ाते हुए संघर्ष में खड़े हुए। उन्होंने जनता को न डरने और 'राहत' शिविरों में न जाने पर राजी करवाया। इस सम्बल के कारण ही जनता फासीवादी हमलों को झेलकर भी खड़ी हुई। ऐसे तीखे दमन के दौर में कॉमरेड पार्वती गांव में केएएमएस की सचिव के रूप में काम कर रही थीं।

21 वर्षीया कॉमरेड पार्वती का जन्म पोल्लेवाया के एक तेल्लम परिवार में हुआ था। बचपन में उन्होंने बाल संगठन में काम किया। बड़ी होने के बाद केएएमएस में शामिल होकर कई आर्थिक व राजनीतिक संघर्षों में भाग लिया। तेंदुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के लिए किए गए संघर्षों तथा सरपंचों और सचिवों के भ्रष्टाचार व उत्पीड़न के खिलाफ किए गए संघर्षों में भी उनकी भागीदारी थी। महिलाओं पर जारी पितृसत्तात्मक दमन के खिलाफ भी कॉमरेड पार्वती खड़ी हो गई। जुडूम शुरू होने के बाद जैसे जिंदगी दो फाड़ हो गई। अत: परिस्थिति के अनुसार वह खुद को ढालते हुए युवाओं को पीएलजीए में भर्ती होने के लिए प्रेरित करती रहीं।

वह जब रेंज कमेटी सदस्या के रूप में काम कर रही थीं तभी जुडूम ने उनके गांव में दो बार मीटिंग की और जनता को धमकी दी कि वह पार्टी का समर्थन न करे। बाद में महेन्द्र कर्मा का भी कार्यक्रम तय था। कॉमरेड पार्वती को जब यह मालूम चला कि वह एसपीओ और गुण्डों के साथ आ रहा था, उन्होंने और बाकी संगठन नेताओं ने जनता को समझाया कि वह मीटिंग में शामिल मत होवे। उस दिन कई लोगों ने मीटिंग में भागीदारी नहीं ली। मीटिंग में कर्मा ने घोषणा की कि वह पार्वती को अपनी 'रखैल' बनाकर रख लेगा। दरअसल रिश्ते में वह कॉमरेड पार्वती का चाचा लगता है। इसका मतलब रिश्ते में वह उसकी भतीजी लगती हैं। यह थी कर्मा की नैतिकता! एक दिन जब वह नाले में नहा रही थीं तब पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ने के लिए घेराव करने की कोशिश की। चूंकि वह केएएमएस की रेंज कमेटी सदस्या थीं और जुडूम के खिलाफ डटकर लड़ रही थीं, इसलिए वह काफी लोकप्रिय भी थीं। उन्होंने सारे कपड़े वहीं छोड़े और दौड़ना शुरू किया। उन्होंने उनका पीछे दौड़ा और यहां तक कि गोलियां भी दागीं। दो दलों में बंटकर उनके पीछे दौड़े थे। फिर भी कॉमरेड पार्वती बच गईं। उस दिन भी उन्होंने कॉमरेड पार्वती के घरवालों को धमकी दी कि अगर वह सरेंडर नहीं करतीं तो वे उसे मार देंगे। इस सब पर विराम लगाते हुए उन्होंने ऐसे समाज के निर्माण का बीड़ा उठाया जिसमें उस जैसे आदिवासियों को शांति से जीने का मौका मिले। और सितम्बर 2005 में वह भैरमगढ़ दस्ते में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में शामिल हो गईं।

बाद में उन्होंने गंगलूर 'राहत' शिविर पर किए गए हमले में भाग लिया। 10 फरवरी 2009 को बैलाडीला के पास हिरोली बारूद डिपो पर किए गए हमले में भी उनकी भागीदारी रही। उनके पार्टी में भर्ती होने के बाद उनके परिवारजनों को एसपीओ में भर्ती किया गया। परिवारों के अंदर भी विभाजन, यही जुडूम की चाल है। उनके गांव से मात्र पांच मिनट की दूरी पर पुलिस ने कैम्प लगाया जिससे ग्रामीणों पर अत्याचार और भी बढ़ गए। इस तरह के हालात ही पार्वती जैसी नौजवान महिलाओं को मजबूत क्रांतिकारियों में बदल रहे हैं। मार्च 2006 में उन्हें पूर्व बस्तर तबादला करते हुए पार्टी ने निर्णय लिया। पलटन-17 की सदस्या के तौर पर उन्होंने वहां पर सभी फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया। अरा और मुल्ले गांवों पर पुलिस पर की गई गोलीबारी की घटनाओं में वह शामिल थीं। 2007 में उन्हें महिलाओं में काम करने की जिम्मेदारी दी गई। तब से अपनी शहादत तक उन्होंने बारदा इलाके में केएएमएस की इकाइयों का गठन करने के लिए कठोर परिश्रम किया। इसी कार्य के दौरान वह कॉमरेड कमला के साथ पुलिस के हत्थे चढ़ गई थीं और उन्होंने इन दोनों वीर नारियों को क्रूरतम यातनाएं देने के बाद कायरता से उनकी निर्मम हत्या कर दी।

पाशविक यातनाओं को सहकर अपनी जिंदगी का सर्वोच्च बलिदान देकर, अपने लहू से क्रांति की राह को लाल बनाने वाली कॉमरेड कमला और कॉमरेड पार्वती जो मूल्यवान सीख हमें दे गयी हैं, उन्हें हमेशा ध्यान में रखेंगे। उनके बलिदानों को ऊंचा उठाएंगे। उन्हें विनम्रतापूर्वक जोहार अर्पित करेंगे। वर्गीय नफरत को धारदार बनाकर कॉमरेड कमला व पार्वती के सपनों को साकार करने की शपथ लेंगे।

## कॉमरेड गज्जो दुग्गा (राजे)

कॉमरेड राजे मानपुर डिवीजन के अंतर्गत पलटन-19 की सदस्या थीं। बीमारी के चलते 14 फरवरी 2009 की रात में उनकी दुखद मृत्यु हुई। उन्हें बचाने के लिए गुरिल्ला साथियों के द्वारा किए गए सारे प्रयास विफल रहे। उनकी मृत्यु की खबर सुनकर आसपास के गांवों की सैकड़ों जनता इकट्ठी हुई

और पूरे क्रांतिकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया। कॉमरेड राजे का जन्म कांकेर जिले के दुर्गकोंदल तहसील के गोंडपाल पंचायत के गांव उइकाटोला में हुआ था। गरीब आदिवासी दुग्गा परिवार में पैदा हुई कॉमरेड गज्जो बचपन से ही मेहनती लड़की थी। जब वह छोटी थीं तभी उनकी मां का निधन हो चुका था। वर्ष 2004 के दिसम्बर महीने से जब मानपुर और कोड़ेकुरसे क्षेत्र में क्रांतिकारी आन्दोलन का फैलाव हुआ तभी से नौजवान कॉमरेड गज्जो इसके संपर्क में आई थीं। बाद में इस गांव में निर्मित केएएमएस में वह सदस्या बन गई। संगठन में काम करते-करते उन्होंने पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गुरिल्ला दस्ते में काम करने का फैसला लिया। स्थानीय पार्टी कमेटी ने भी उनके फैसले का स्वागत करते हुए दस्ते में शामिल किया। इस प्रकार वह 2006 में स्थानीय दस्ते में सदस्या बन गईं। दस्ते में शामिल होने के बाद उन्होंने अपना नाम बदलकर 'राजे' रखा।

दस्ते में वह बेहद उत्साह के साथ काम करती थीं। गुरिल्ला दस्ते के जीवन के हर पहलू में वह अपनी छाप छोड़ गईं। खासकर कोड़ेकुरसे इलाके, जहां वह पली-बढ़ी थीं, की जनता की वह चहेती बनी थीं। जनता के बीच, खासकर महिलाओं के साथ वह बढ़िया ढंग से घुलमिल जाया करती थीं। महिलाओं के साथ तथा पूरी शोषित जनता के साथ हो रहे अन्याय, अत्याचार, भेदभव, शोषण और जुल्मों को लेकर वह लोगों से चर्चा करती थीं और देश में नई जनवादी क्रांति को सफल किए बगैर जनता की किसी भी समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो सकता - आदि बातों को लेकर वह जन-जन तक क्रांति का प्रचार-प्रसार करती रहीं। तेन्दुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के संघर्ष, किसानों की फसलों को समर्थन मूल्य बढ़ाने की मांग को लेकर किए गए संघर्ष, शराब विरोधी संघर्ष आदि में कॉमरेड राजे का योगदान रहा। वर्तमान शोषणकारी व्यवस्था के तहत पितृसत्ता का शोषण-दमन महिलाओं पर किस प्रकार बोझ बना हुआ है, इस बारे में कॉमरेड राजे अपनी समझदारी को विकसित करते हुए लोगों को समझाने की कोशिश करती रहीं। मानपुर क्षेत्र में हर साल आयोजित होने वाले 8 मार्च - अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजनों में क्षेत्र की तमाम मेहनतकश महिलाओं को इकट्ठा करने में कॉमरेड राजे का बड़ा योगदान रहा। उनकी बढ़ती क्रांतिकारी चेतना को ध्यान में रखते हुए उन्हें जनवरी 2007 में पार्टी सदस्यता दे दी गई।

अक्टूबर 2008 में मानपुर क्षेत्र में पहली बार घटित पलटन में कॉमरेड राजे को सदस्या के रूप में सम्मिलित किया गया। दुश्मन के बलों के खिलाफ चलाए जाने वाले कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों में भाग लेने में कॉमरेड राजे काफी उत्साह दिखाती थीं। दस्ते या पलटन की बैठकों में अपने विचारों को स्पष्ट तौर पर रखने और साथियों की गलतियों पर बेबाकी के साथ आलोचना पेश करने में कॉमरेड राजे आगे रहती थीं। साथियों को सुधारने के इरादे से ईमानदारी के साथ आलोचना पेश करने का उनका उच्च कम्युनिस्ट गुण सभी गुरिल्ला साथियों के लिए अनुकरणीय है। सदा मुस्कराते रहने वाली राजे गुरिल्ला साथियों और जनता में लोकप्रिय कॉमरेड थीं।

इस प्रकार एक सच्ची जन सेवक के रूप में कॉमरेड राजे ने मानपुर क्षेत्र में कम समय तक ही सही, यादगार भूमिका निभाई। इस उदीयमान व ऊर्जावान कम्युनिस्ट कार्यकर्ता का इस प्रकार आकस्मिक मृत्यु होना मानपुर इलाके के क्रांतिकारी आंदोलन के लिए नुकसान है। लेकिन उनके आदर्शों और उधूरे मकसद को अपने कंधों पर लेकर सैकड़ों-हजारों की संख्या में नव युवक-युवतियां निश्चित रूप से निकल पड़ेंगे और इस शोषणकारी व जुल्मखोर व्यवस्था को दफनाकर नई व शोषणविहीन व्यवस्था की नींव रखेंगे।

## कॉमरेड मीना

गड़चिरोली जिले की क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की उपाध्यक्षा, अहेरी एरिया केएएमएस की अध्यक्षा और अहेरी एरिया पार्टी कमेटी की सदस्या कॉमरेड मीना 16 मार्च 2009 को मस्तिष्क मलेरिया से शहीद हो गईं। कॉमरेड मीना की शहादत अहेरी और गड़चिरोली के क्रांतिकारी महिला आंदोलन के लिए बहुत बड़ा नुकसान है।

कॉमरेड मीना की शहादत से गड़चिरोली की जनता ने अपनी प्रिय कॉमरेड को खो दिया है, क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन के कार्यकर्ताओं ने अपनी नेत्री खो दी, गड़चिरोली के माओवादी आंदोलन ने दृढ़ संकल्प वाली अपनी कार्यकर्ता खो दी। वहीं गड़चिरोली व बस्तर की जनता ने अपनी प्यारी बेटी खो दी।

कॉमरेड मीना ने क्रांति को प्रेम करते हुए खुशी से उस रास्ते को अपनाया। वर्ष 2000 में गड़चिरोली में दमन की आग में भी कॉमरेड मीना हिम्मत के साथ खड़ी रहीं। कॉमरेड मीना का जन्म छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के पार्षवाड़ा गांव में हुआ था। यह गांव पश्चिम बस्तर डिवीजन के अंतर्गत आता है।

कॉमरेड मीना मुरिया सामुदाय से थीं। उनकी पूरी क्रांतिकारी जिंदगी गड़चिरोली के आंदोलन से जुड़ी रही है। संघर्ष में जाने का विचार कर उनके घर से तीन बहनें निकली थीं। दो बहनें पीछे हट गईं जबकि कॉमरेड मीना संघर्ष में कई उतार-चढ़ाव आने के बावजूद आखिर तक डटी रहीं। उन्होंने कभी भी अपनी हिम्मत को कम नहीं होने दिया।

**कॉमरेड मीना का सैनिक जीवन** - 2000 से 2002 के आखिर तक कॉमरेड मीना एटापल्ली दल सदस्य के रूप में काम करती रहीं। 2003 में एलजीएस में तबादला होकर डिप्यूटी

कमांडर की जिम्मेदारी में रहीं। 2003 में आयोजित गड़चिरोली पार्टी पलेनम में शामिल हुईं। उस पलेनम में गड़चिरोली में दुश्मन के दमन पर गहराई से चर्चा हुई जिसमें कॉमरेड मीना ने उत्साह के साथ भाग लिया। दुश्मन के दमनचक्र का माकूल जवाब देने के लिए पलटन की आवश्यकता महसूस की गई। जिसके फलस्वरूप पलटन-7 अस्तित्व में आई। इस पलटन की डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी कॉमरेड मीना को दी गई। 2004 में कॉमरेड मीना पलटन पार्टी कमेटी सदस्य बनीं। 2006 के आखिर तक वे पीएलजीए में काम करती रहीं। और कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया। कोप्पेला से लेकर नारूगुण्डा, कुम्मरिगुडा, कोयंदूड, शेवेरी और मंगडंडी एंबुशों में शामिल रहीं।

2005 में पश्चिम बस्तर में सलवा जुडूम फासीवादी सैनिक सांगठनिक अभियान शुरू होने पर पलटन-7 नेशनल पार्क एरिया में रहकर जनता की हिम्मत बंधाई। उनकी फसलों की रक्षा के लिए पहरेदारी की। गांवों पर हमला करने आने वाले सलवा जुडूम के गुण्डों और पुलिस वालों को मार भागने की भरपूर कोशिश की। इन सभी कोशिशों में कॉमरेड मीना की मुख्य भूमिका रही। महिलाओं के लिए 2004 में आयोजित जोन स्तर के महिला सैनिक प्रशिक्षण शिविर में शामिल हो कॉमरेड मीना ने अपनी सैनिक कुशलता को और निखारा। कसरत, ड्रिल करने और दूसरे कॉमरेडों को सिखाने के लिए वे हमेशा ग्राउंड में मौजूद रहती थीं।

**दृढ़ संकल्प की प्रतीक कॉमरेड मीना** - क्रांति के अड़चन भरे रास्तों, कठिनाइयों और मुश्किलों को झेलते हुए कॉमरेड मीना अपनी अंतिम सांस तक क्रांति मार्ग पर डटी रहीं। यह दृढ़ता सभी के लिए प्रेरणाप्रद है। पीएलजीए में भर्ती होते ही कॉमरेड मीना ने सामंती सोच-संस्कृति का प्रतीक अपने लंबे-लंबे बालों को काट फेंका। कई सीनियर महिला साथियों ने जब इसके लिए उन्हें मना किया तब भी कॉमरेड मीना ने अपना निर्णय नहीं बदला। अपने विकास में बाधक सामंती विचारों का कॉमरेड मीना कड़े रुख से विरोध करती थीं।

अपनी शादी के बारे में कॉमरेड मीना ने कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई। बहुत सोच विचार कर अपने जीवन साथी का चुनाव किया। इस मामले में उनकी परिपक्वता सराहनीय थी।

**क्रांतिकारी महिला आंदोलन के आसमान में चमकती तारा :** नवंबर 2006 महीने से कॉमरेड मीना केएएमएस की जिम्मेदारी में आईं। अहेरी एरिया केएएमएस से डिवीजन कार्यकारिणी में पहुंचीं। उनकी पूरी क्रांतिकारी जिंदगी सैनिक क्षेत्र में बीती थी। फिर भी उन्होंने सांगठनिक कामकाज की जिम्मेदारी लेने में कोई झिझक नहीं दिखाई। बहुत कम समय में ही उन्होंने सांगठनिक पेंचिदगियों को समझा, सीखा और उसमें कुशलता हासिल की।

जनवरी 2008 में आयोजित केएएमएस डिवीजन अधिवेशन में कॉमरेड मीना ने केएएमएस घोषणा-पत्र पेश किया और प्रतिनिधियों को उस पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया। पूरे अधिवेशन के संचालन में कॉमरेड मीना का बड़ा योगदान रहा। अधिवेशन ने कॉमरेड मीना को डिवीजन सचिव के रूप में चुना।

जनवरी 2008 में ही आयोजित केएएमएस जोन अधिवेशन में कॉमरेड मीना ने राजनीतिक प्रस्ताव पेश किया था। जोन अधिवेशन का संचालन करने में अधयक्षमंडल की सदस्या के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी उन्होंने। दमन से ध्वस्त हुए अहेरी एरिया के महिला संगठन को फिर से संगठित किया। उसे मजबूत बनाया। इसमें कॉमरेड मीना का योगदान काबीले तारीफ रहा।

कॉमरेड मीना ने महिलाओं की कई विशेष बैठकों में शिरकत की थी, जिसमें प्रमुख थी जनवरी 2004 में दण्डकारण्य में जोन स्तर पर आयोजित बैठक। उस बैठक में भागीदारी से उन्हें अपनी समझदारी बढ़ाने में मदद मिली। सीखने-सिखाने में कॉमरेड मीना हमेशा आगे रहती थीं। गाना गाने में बहुत उत्साह से भाग लेती थीं। उनका प्रिय गीत 'नारी मुक्ति झंडा हम फहराएंगे, शोषण मुक्ति झंडा हम फहराएंगे' था।

ऐसी कर्मठ प्रिय कॉमरेड मीना को हमारी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजली।

## कॉमरेड रामजी माहका

गड़चिरोली के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में 1 फरवरी 2009 का मर्कानार हमला और उसकी सफलता एक ऐतिहासिक घटना है। गड़चिरोली जिले के आंदोलन को आगे ले जाने में इसका काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पीएलजीए के तीनों बलों का अद्भुत समन्वय, फायर एंड मूवमेंट का उत्कृष्ट प्रदर्शन, दुश्मन पर टूट पड़ने की प्रबल इच्छाशक्ति की जीती जागती मिसाल बन गया है मर्कानार हमला।

मर्कानार में दुश्मन पर की गई शौर्यपूर्ण कार्रवाई में दुश्मन की गोली लगने से कॉमरेड रामजी माहका शहीद हो गए। कॉमरेड रामजी माहका गड़चिरोली जिले के भामरागढ़ एरिया के पारेनार के माहका परिवार में पैदा हुए थे। माता-पिता की तीन संतानों में कॉमरेड रामजी सबसे छोटे थे। शहादत के समय कॉमरेड रामजी की उम्र मात्र 22 वर्ष थी। कॉमरेड रामजी ने 7वीं कक्षा तक पढ़ाई की। आगे की पढ़ाई जारी रखवा पाना उनके गरीब मां-बाप के बस की बात नहीं थी। कॉमरेड रामजी का गरीब आदिवासी किसान परिवार मुश्किल से अपना गुजारा कर पाता था।

पार्टी में भर्ती होकर कॉमरेड रामजी ने अपने पिता के दिए

नाम को ही जारी रखा। उनके मन में हमेशा यही सवाल गूंजता रहता था कि आदिवासी जनता गरीब क्यों है। गरीबी दूर करने का उपाय क्या है। इस सवाल पर नजर दौड़ाने से उन्हें गड़चिरोली में माओवादी आंदोलन का रास्ता ही दिखाई देता था।

भामरागढ़ इलाके में कबीलाई समाज में 'सियानों' (पारंपरिक मुखियाओं) की भूमिका दबाव भरा रहती है। पारेनार में सियान प्रमुखों के आदेश की कोई अनदेखी करने की हिम्मत नहीं कर सकता था। युवक-युवतियां समाज प्रमुखों से बात करने में भी झिझकते थे। दस्ता कभी रामजी के गांव में जाता भी था तो नौजवान छुपते-छुपाते दस्ते से मिलने आते थे। 2004 के आखिर-आखिर में कॉमरेड रामजी ने भी चुपचाप दस्ते के कमांडर से दस्ते में भर्ती होने की इच्छा प्रकट की। उस समय ऐसे ही कई युवा दस्ते में भर्ती हो चुके थे।

गड़चिरोली के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में भामरागढ़ जन संघर्ष का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। लोग पहलकदमी के साथ आगे बढ़कर संगठन व पार्टी का काम करते थे। 1991-94 तक सरकार द्वारा जनता पर बड़ा दमनचक्र चलाया गया था। झूठी मुठभेड़ों में हत्याएं, लोगों को गायब कर देना, झूठे केसों में आजीवन कारावास की सजा, झूठे केसों में फंसाकर कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगवाना और लंबे समय तक जेलों में लटकाए रखने जैसी दमनकारी नीतियों को लागू किया गया। भामरागढ़ एरिया में सहज रूप से काम करना इस तरह से संभव ही नहीं था। अत: घर में रहते हुए लगभग अर्ध खुले तरीके से पार्टी व जन संगठन का कामकाज करने का मौका ही रामजी को मिल पाया।

कॉमरेड रामजी दिसंबर 2004 में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। और पलटन-3 के सदस्य बने। 2005 की गर्मियों में संयुक्त अभियान के लिए पलटन-3 के साथ गोंदिया जाकर कॉमरेड रामजी ने सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया। 2005 जुलाई में जप्पी एंबुश में कॉमरेड रामजी शामिल हुए। कॉमरेड रामजी उस समय नये-नये थे। लेकिन किसी भी सैनिक कार्रवाई में वह आगे-पीछे हुए हों ऐसा नहीं सुना गया। 2006 की गर्मियों के टीसीओसी में पेंदोड़वाया गांव में डेरा डाले कमांडो बैच पर हमारी पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में, उसी साल माईनप्रूफ गाड़ी पर किए गए विस्फोट और दो अन्य एंबुशों, पिपली गांव में कामंडो बैच पर किए गए अपार्चुनिटी एंबुश में कॉमरेड रामजी ने बड़े जोश के साथ भाग लिया था।

2007 में सिरोंचा एरिया में कॉमरेड रामजी टीसीओसी के लिए गए थे। 2007 सितंबर से रोप्पी, जारावाड़ा, सीतागांव, कोरेपल्ली आखिर में मर्कानार हमले में अलग-अलग जिम्मेदारी लेकर कॉमरेड रामजी ने योगदान दिया। पिड़िमिल और दागून में कंपनी के डेरों पर हुए दुश्मन के हमलों में बड़ी हिम्मत के साथ प्रतिरोध करने वालों में वह भी एक थे।

**स्काउट 'रामजी'** - किसी भी हमले को सफल बनाने में स्काउट की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। दुश्मन की मांद में घुसकर अपने कमांडर को दुश्मन की परिस्थिति की जितनी ज्यादा जानकारी एकत्रित कर भेजी जा सकती है, हमले की सफलता की गारंटी उतनी ही बढ़ जाती है। कॉमरेड रामजी स्काउट के काम में माहिर हो गए थे। इसे उन्होंने सिरोंचा एरिया के सिरकोंडा और गट्टा एरिया के जारेवाड़ा एंबुश में सच साबित कर दिखाया। 2007 नवंबर माह में रामजी ने अपनी इस कुशलता को और भी अच्छा करने के लिए कम्युनिकेशन क्लास में भाग लिया था।

एक तरफ दुश्मन के साथ आमने-सामने की लड़ाई का रोमांच तो दूसरी तरफ बिना हथियार के दुश्मन के गढ़ से समाचार भेजने का कठिन कार्य! अगर इनमें से कभी किसी सिपाही को कोई एक काम को चुनने का मौका दिया जाए तो वह निश्चित ही दुश्मन के साथ आमने-सामने की लड़ाई को ही चुनेगा। बिना दुश्मन की ठोस जानकारी के कोई युद्ध नहीं जीता जा सकता। इस सच्चाई को गहराई से कॉमरेड रामजी माहका ने आत्मसाथ किया। उसे समझा। जब भी रामजी को स्काउट की जिम्मेदारी दी गई उन्होंने बड़ी लगन, कुशलता और होशियारी से इसे निभाया। इस मामले में हम कह सकते हैं कि कॉमरेड रामजी का स्काउट कार्य गुरिल्लों के आदर्श रहेगा।

**'गार्ड' की जिम्मेदारी में रामजी** - 2006 के आखिर में कॉमरेड रामजी को एसजेडसी सदस्य के सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी प्रदान की गई। गार्ड की जिम्मेदारी को कॉमरेड रामजी ने बहुत कुशलता के साथ निभाई थी, जैसे वह पहले ही गार्ड की जिम्मेदारियों से वाकिफ हों। हमेशा अपने कमांडर के साये की तरह उनके साथ रहते थे ताकि कमांडर पर आने वाले संभावित खतरों से उन्हें बचाया जा सके। ऊपरी कमेटी के कॉमरेडों के साथ रहते समय कई गुप्त बातों का पता गार्ड को चल ही जाता है। उन बातों का खुलासा होने से नुकसान होने के अलावा कुछ नहीं होता है। कॉमरेड रामजी कभी यहां की बात वहां और वहां की बात यहां करते नहीं पाए गए। गार्ड की जिम्मेदारी कॉमरेड रामजी ने सही-सही निभाई।

**दल सदस्य से सेक्शन कमांडर तक कॉमरेड रामजी का सफर** - 2004 में भर्ती होकर कुछ दिनों तक कॉमरेड रामजी भामरागढ़ एलओएस (स्थानीय सांगठनिक दस्ता) के सदस्य रहे थे। 2005 से 2006 के आखिर तक कॉमरेड रामजी पलटन-3 के सदस्य रहे। उसके बाद गार्ड की जिम्मेदारी में रहे। अगस्त 2007 से कंपनी बनने के बाद वह अपने कामांडर के साथ कंपनी-4 में आ गए। मई 2008 में गार्ड की जिम्मेदारी से रिलीव होने पर कंपनी-4 में द्वितीय पलटन के संतरी इंचार्ज के रूप में काम करने लगे। संतरी इंचार्ज के रूप में इनके ऊपर किसी कॉमरेड ने कभी कोई शिकायत नहीं की। सभी कॉमरेड संतरी की जिम्मेदारी में कॉमरेड रामजी की कार्यशैली से प्रभावित थे। कॉमरेड रामजी के मुंह से कभी किसी ने किसी काम के लिए इनकार नहीं सुना। कॉमरेड रामजी के कामकाज और बढ़ती राजनीतिक चेतना को देखते हुए मर्कानार हमले के बाद कंपनी पार्टी कमेटी ने उन्हें सेक्शन कमांडर बनाने के लिए

प्रस्ताव पास किया था। तथा इन्हें पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में चयनित किया गया था। हमले के दिन सेक्शन कमांडर बीमार हो जाने की वजह से कॉमरेड रामजी ने ही सेक्शन कमांडर की हैसियत से लड़ा था। अपने सेक्शन को एड्वांस कर दुश्मन को खेतुल में घेर लेने में कॉमरेड रामजी की शानदार भूमिका रही। खेतुल के पास ही कॉमरेड रामजी को गोली लगी जिससे उन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

**कॉमरेड रामजी का आदर्श** – 'बातें कम – काम ज्यादा' कॉमरेड रामजी का आदर्श था। अनुशासन के बारे में रामजी को समझाने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी। पार्टी में बड़ों का आदर व छोटों को स्नेह देना उनका व्यवहार था। पीटी, ड्रिल वह हर रोज करते थे व दूसरों को करने के लिए उत्साहित करते थे। हर सैनिक कार्रवाई में नेतृत्व के मुंह से स्वाभाविक रूप से कॉमरेड रामजी का नाम निकलता था। नेतृत्व को कॉमरेड रामजी पर इतना विश्वास था। वह कंपनी-4 के विश्वसनीय और जांबाज योद्धा थे। न जानने वाले विषयों को सीखना और जानने वाले विषय दूसरों को सिखाना कॉमरेड रामजी का प्राकृतिक स्वभाव था। ऐसे प्रिय कॉमरेड रामजी को, उनकी शहादत को कोटि-कोटि अभिनंदन।

## कॉमरेड लोकेश (ताती सोमू)

25 वर्ष के कॉमरेड लोकेश का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) में गंगालूर एरिया के गांव गोडला पूसनार में हुआ था। ताती लखमू और बुच्ची की सात संतानों में कॉमरेड लोकेश चौथी संतान थे। घर पर उनका नाम सोमू था। गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुए कॅमरेड लोकेश बचपन से ही अपने माता-पिता के साथ सभा-सम्मेलनों और प्रदर्शनों में भाग लेने जाते थे। गांव में दस्ता पहुंचने से दौड़ते हुए वहां पर आ जाते थे। वह क्रांतिकारी गीतों को बेहद ध्यानपूर्वक सुनते थे, और मन ही मन गुनगुनाया करते थे।

बचपन में उनके माता-पिता ने उन्हें पदेड़ा गांव के आश्रम स्कूल में भर्ती करवाया था। छात्रावास में रहते हुए, छुट्टियों में गांव में मवेशी चराते समय सब बच्चों के साथ टोली बनाकर क्रांतिकारी गीतों को गाया करते थे। बचपन से ही उन्होंने बड़े होकर पीएलजीए में भर्ती होने की तम्मना अपने मन में पाल ली थी।

पांचवीं की पढ़ाई के बाद गांव में डीएकेएमएस के सदस्य बनकर उन्होंने आंदोलन में भाग लिया। बचपन से ही क्रांतिकारी जज़्बा रखने वाले सोमू गांव में दस्ता के आने से जरूर मिलने आते थे। और हर बार दस्ता में भर्ती होने की इच्छा जाहिर करते थे। 'तुम अभी छोटे हो कॉमरेड, पहले मन लगाकर पढ़ाई करो बाद में दस्ता में भर्ती करेंगे' – ऐसा जब उनसे बोला जाता तो नाराज हो जाते थे। और मायूसी से घर की ओर लौट जाते थे। उनके भर्ती होने की तमन्ना अप्रैल 2003 में पूरी हुई। गंगालूर स्थानीय सीएनएम टीम में विक्रम नाम से कार्य करना शुरू किया। उनके गीत और नाच जनता में जोश पैदा करते थे। वह एक सांस्कृतिक कर्मी के रूप में विकसित हो रहे थे।

**छात्रों के बीच में कॉमरेड ताती सोमू:** कॉमरेड लोकेश को इसके बाद 2004 में मद्देड़ एरिया में आवापल्ली, एलमिडि, मद्देड़ और भोपालपटनम में छात्रों को संगठित करने का काम सौंपा गया था। उन्होंने वहां पर छात्रों को शिक्षा के निजीकरण व व्यापारीकरण के खिलाफ तथा आदिवासी बच्चों को अशिक्षित रखने की सरकारी साजिशों के खिलाफ, आश्रमशालाओं में अधीक्षकों द्वारा मचाए जा रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ छात्रों को जागरूक किया और संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

जून 2005 में पश्चिम बस्तर में सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू हुआ था। तबसे कुटरू, फरसेगढ़, माटवाड़ा, भैरमगढ़ और गंगालूर में जन जीवन पूरी तरह तबाह होना शुरू हो गया था। पुलिस व सलवा जुडूम के गुंडों द्वारा किये जा रहे बर्बर दमन में कॉमरेड विक्रम जनता के साथ जुड़े रहे। दुश्मन के ऊपर हमले करने में हिम्मत के साथ भाग लेते थे। कई स्कूलों व आश्रमों को अर्ध सैनिक बलों ने कैंप में तब्दील कर दिया था। उस कठिन समय में भी उन्होंने छात्रों के बीच काम को जारी रखा।

**मलिंगेर एरिया में छापामार योद्धा कॉमरेड लोकेश:** पार्टी ने उनकी राजनीतिक चेतना को देखते हुए जनवरी 2006 में दरभा डिवीजन में तबादला किया। वहां पर वह मलिंगेर एरिया में कार्यरत स्थानीय छापामार दस्ता के सदस्य बने। 2006 में ही आरनपुर पुलिस कैंप में सीआरपीएफ को तैनात किया गया था। इस कैंप पर हमला कर एक जवान को मार डाला गया था और एक को घायल किया गया था, इस कार्रवाई में कॉमरेड लोकेश शामिल थे।

छापामार दस्ता के अनुशासन का वह दृढ़तापूर्वक पालन करते थे। बाकी कॉमरेडों से, जनता से वह घुलमिलकर रहते थे। घमंडी स्वभाव उनमें कभी नहीं देखा गया। राजनीतिक पत्रिका 'प्रभात', सैनिक पत्रिका 'पडियोरा पोल्लो' और 'अवामी जंग' आदि वह ध्यान से पढ़ने वाले कॉमरेड थे। और साथ में अपने साथियों को भी पढ़कर सुनाते थे। वे अपने साथियों को सैनिक प्रशिक्षण व सैनिक तकनीक सिखाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

सन् 2006 के जुलाई माह में पालनार-आरनपुर रोड पर

एंबुश कर दो पुलिस वालों को खत्म कर सात जन को घायल कर दिया गया था। इस हमले में कॉमरेड लोकेश शामिल थे। मार्च 2007 में जब एलजीएस कमांडर कॉमरेड जग्गू बूबीट्रैप लगाते हुए दुर्घटनवश शहीद हुए थे तब उसमें कॉमरेड लोकेश भी बुरी तरह जख्मी हुए थे। परंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वह शहीदों के सपनों को पूरा करने के लिए सदा अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहते थे। युद्ध कौशल को सीखने के लिए वह हमेशा भरपूर प्रयास करते थे। उनके राजनीतिक-सैनिक विकास को देखते हुए डिवीजनल कमेटी ने उन्हें एरिया कमेटी सदस्य का स्तर प्रदान करते हुए, एलजीएस में डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी प्रदान की। बढ़ते आंदोलन को दबाने के लिए दुश्मन ने चौतरफा हमले तेज किए। जनता पर दमन का कहर टूटा। पर कॉमरेड लोकेश ने माओवादी जनयुद्ध के नियमों को समझते हुए उसका मुकाबला करने का संकल्प लिया। नवंबर 2007 में एक साथी कॉमरेड के साथ उनकी शादी हुई। दोनों ने भी पार्टी के हितों को ऊंचा उठाए रखते हुए गुरिल्ला जीवन में आदर्श स्थापित किया।

**एरिया कमांडर-इन-चीफ कॉमरेड लोकेश:** आंदोलन की आवश्यकता और कॉमरेड लोकेश की राजनीतिक चेतना को देखते हुए पार्टी ने मार्च 2008 में उन्हें स्थानीय छापामार दस्ता के कमाण्डर का दायित्व सौंपा। मार्च 2008 से लेकर माड़ोकी एंबुश में अपनी शहादत तक कॉमरेड लोकेश ने अपना दायित्व बखूबी निभाया। एक आदर्श छापामार योद्धा और ईमानदार कम्युनिस्ट कार्यकर्ता के रूप में अपनी छवि बनाने वाले कॉमरेड लोकेश ने जनता की मुक्ति के खातिर मुस्कराते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर किया। कॉमरेड लोकेश ने एरिया कमांडर-इन-चीफ पद पर रहते हुए मलिंगेर एरिया के जन मिलिशिया को संगठित करने में और उन्हें हथियारबंद करने में, प्रशिक्षित कर उन्हें जनयुद्ध में सक्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आरनपुर, पालनार और किरंदुल से लगातार आने वाली पुलिस पार्टियों पर हमले करने के लिए जन मिलिशिया को प्रेरित करते रहते थे। पार्टी द्वारा चलाए गए टीसीओसी को सफल बनाने के लिए जन मिलिशिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कई कार्रवाइयों में भाग लेते थे। अप्रैल 2008 में जन पीतुरी (लड़ाई) सप्ताह के दौरान सैकड़ों जन मिलिशया, कोया भूमकाल मिलिशया और जनता को संगठित कर दलाल पूंजीपति कम्पनी एस्सार की 71 गाड़ियों को ध्वस्त करने में उन्होंने शानदार भूमिका निभाते हुए नेतृत्व किया। यह वही कम्पनी है जिसकी पाइपलाइन के लिए शबरी नदी को सुखाया जा रहा है और जिसके द्वारा फैलाए जा रहे प्रदूषण से बस्तर की कई नदियां प्रदूषित हैं। इससे एस्सार को लगभग 10 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ था।

पीएलजीए के भर्ती अभियान को सफल बनाने के लिए कॉमरेड लोकेश ने कई जन मिलिशिया सदस्यों को पूर्ण रूप से पीएलजीए में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया। रंगरूटों को उन्होंने खुद राजनीतिक और सैनिक प्रशिक्षण दिया। शहीद स्मृति सप्ताह, पीएलजीए स्थापना दिवस, 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि के उपलक्ष्य में होने वाले तमाम कार्यक्रमों और रैलियों को सफल बनाने के लिए कॉमरेड लोकेश सुरक्षा का इंतजाम अपने कंधों पर उठाते थे।

मई 2008 में भूसरास और बडेचेट्टी मे सीआरपीएफ और पुलिस को तैनात कर लुटेरे शासक वर्गों ने मलिंगेर की जनता पर दमन में इजाफ़ा किया। कई गिरफ्तारियां कीं और फर्जी मुकदमे दर्ज कर लोगों को जेलों में डाला। बढ़ते दमन के बीच डीएकेएमएस, केएएमएस, पार्टी संगठन और मिलिशिया को संगठित करने के लिए एरिया कमेटी में वे बहुत शिद्दत के साथ चर्चा करते थे। जन संगठनों व पार्टी में मौजूद गैर-सर्वहारा रुझानों को दूर करने पर जोर देते थे। मिलिशिया को राजनीतिक रूप से विकसित करते हुए, उन्हें मजबूत करने की कोशिश करते थे।

पार्टी ने अप्रैल-मई 2009 में आयोजित 15वीं लोकसभा के फर्जी चुनावों के बहिष्कार का आह्वान किया। इस अभियान को सफल बनाने के लिए कॉमरेड लोकेश ने जनता में जोरदार प्रचार किया। दूसरी ओर चुनाव के दौरान मतदान दलों की सुरक्षा में आने वाले दुश्मनों पर हमले किये। 16 अप्रैल को माड़ोकी गांव के पास किए गए एंबुश में कॉमरेड लोकेश ने दुश्मन के साथ बहादुरी से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया। इस हमले में सीआरपीएफ के दो भाड़े के जवान मारे गए और छह अन्य गंभीर रूप से घायल हुए थे। इस हमले में पीएलजीए बलों ने दुश्मन की एक एसएलआर भी छीन ली। इस घटना से दुश्मन के बलों में काफी खौफ पैदा हुआ। कॉमरेड लोकेश के शव को पीएलजीए बल अपने साथ लेकर आए और अगले दिन (17 अप्रैल 2009)को एक हजार जनता के समक्ष क्रांतिकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

सैकड़ों स्वरों से निकले 'कॉमरेड लोकेश अमर रहें', 'शहीदों के सपनों को पूरा करेंगे', 'पीएलजीए जिंदाबाद' आदि नारों से आकाश गूंज उठा। कॉमरेड लोकेश एक सच्चे कम्युनिस्ट कार्यकर्ता थे। एक सैनिक कमांडर के रूप में हमारे सामने कई मिसालें व आदर्श स्थापित कर गए हैं। कॉमरेड लोकेश के सपनों का नया समाज बनाने और दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लिए, आइए, जनयुद्ध को तेज करें।

## कॉमरेड एमला कुम्मा

कॉमरेड एमला कुम्मा (35) को 26 अगस्त 2009 को गांव के जन विरोधी शक्तियों ने द्वारा कुल्हाड़ी से काट-काटकर, डंडों से पीट-पीटकर निमर्म तरीके से हत्या की।

कॉमरेड एमला कुम्मा दंतेवाड़ा ब्लॉक के कुआकोंडा गांव के निवासी थे। वह डीएकेएमएस गांव कमेटी सदस्य के साथ-साथ पार्टी सदस्य भी थे। गांव में सामंतवादी शक्तियों के खिलाफ संघर्ष में वह पहली पंक्ति में रहते थे। गांव की जनता को उन्होंने संगठित किया। सरकार ने आरनपुर में पुलिस कैंप

लगाकर दरभा डिवीजन के मलिंगेर एरिया में दमन अभियान तेज किया हुआ है। दमन के बीचोबीच भी पार्टी के हर आह्वान को, चाहे वह 28 जुलाई शहीदी दिवस हो या पीएलजीए दिवस हो, सफल बनाने के लिए जनता को गोलबंद करने में कॉमरेड कुम्मा सदा आगे थे। गांव की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के सामने कॉमरेड एमला कुम्मा ने बड़ी चुनौती पेश की। इसके चलते वे घबरा उठे थे। इसी कारण से कॉमरेड कुम्मा की उन्होंने हत्या कर दी। कॉमरेड कुम्मा ने जनता के लिए अपने अनमोल प्राण अर्पित किए हैं। उनके त्याग और बलिदान नई पीढ़ी को हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।

## कॉमरेड माड़वी नंदा

भाजपा की रमन सिंह सरकार ने नवंबर 2008 में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में जीतकर दुबारा सत्ता पर काबिज होने के बाद बेगुनाह ग्रामीणों को मुठभेड़ के नाम से हत्या करने का सिलसिला तेज कर दिया। दंतेवाड़ा जिले के सिंगारम नरसंहार को कौन भूल सकेगा? इस नरसंहार के दूसरे ही दिन, यानी 9 जनवरी 2009 को पोटाली गांव के लोग पालनार हाट जाकर वापस घर लौट रहे थे। रास्ते में आरनपुर के सीआरपीएफ कैंप के जवानों ने समेली गांव के पास उन्हें दौड़ा-दौड़ाकर 11 ग्रामीणों को गिरफ्तार किया। और कैंप में ले जाकर उन्हें खूब यातनाएं दीं। अर्ध सैनिक बलों की यातनाओं से कॉमरेड माड़वी नंदा की मृत्यु कैंप में ही हो गई। इसके बाद पुलिस ने झूठा बयान दिया कि नंदा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। और समाचार माध्यमों में यही प्रचारित किया। बेवजह गिरफ्तार किये गए ग्रामीणों की रिहाई मांग करते हुए सैकड़ों ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं ने आरनपुर थाने का घेराव किया। जनता के इस विरोध के कारण न केवल ग्रामीणों को रिहा करवा पाए, बल्कि पुलिस वालों को कॉमरेड नंदा की लाश भी परिजनों के सपूर्द करने पर मजबूर किया गया।

28 साल के युवा कॉमरेड नंदा का जन्म गांव पोटाली (दरभा डिवीजन, जिला दंतेवाड़ा, कुआकोंडा तहसील) के माडवी परिवार में हुआ था। गांव में 2005 में जब पार्टी आई थी, तब से उन्होंने जन संगठन में रहकर जनता की समस्याओं को लेकर किए गए संघर्षों में भागीदारी ली। अपने गांव में तेंदुपत्ता मजदूरी रेट बढ़ाने आदि संघर्षों में उन्होंने भाग लिया। राजकीय हिंसा का शिकार हुए कॉमरेड नंदा सदा अमर रहेंगे। उनका खून व्यर्थ नहीं जाएगा। कॉमरेड नंदा को पीट-पीट कर कत्ल करने वाले हत्यारों से जनता जरूर कीमत वसूलेगी।

## कॉमरेड येशू कुमरे ( गूगे )

गड़चिरोली के कसनसूर एरिया के गडेर गांव में पैदा हुए कॉमरेड येशू कुमरे का खून मानवजाति की मुक्ति के पुनीत कर्तव्य में अर्पित हो गया। पार्टी के साथ कॉमरेड येशू कुमरे के परिवार का संबंध गहरा था। एक अर्थ में येशू का परिवार पार्टी का परिवार है। कॉमरेड येशू कुमरे के बड़े भाई 1989 से 1994 तक, जब तक वह बीमारी से शहीद न हो गए थे, डीएकेएमएस के सदस्य के रूप में काम करते रहे। बड़े भाई के शहीद हो जाने के बाद विरासत में कॉमरेड येशू कुमरे ने भी उसी रास्ते को अपनाया। कसनसूर एरिया की जनता और पूरे एरिया से उनका भलीभांति परिचय था। 1997 के अकाल के समय कॉमरेड येशू ने जमींदारों, दुकानदारों और साहुकारों से अनाज वसूल कर आम आदिवासी जनता के बीच बांटा। आम जनता ने अपने द्वारा बनाये गोदाम का अध्यक्ष कॉमरेड येशू को ही बनाया। और प्यार से जनता ने ही उन्हें 'गूगे' (हिंदी में तितली) नाम दिया। तभी से गूगे नाम जनता के बीच इतना लोकप्रिय हुआ कि दुश्मन को इनका असली नाम पता ही नहीं चला। वह नाम इनके गूगे नाम में बह गया। कॉमरेड गूगे 2002 में बनी पंचायत स्तर की जनताना सरकार के अध्यक्ष के रूप में चुने गए। वह घर का काम करते हुए जनताना सरकार का कामकाज बड़ी कुशलता से करते थे। जनता की समस्याओं का न्याय कमेटी के जरिए निराकरण करने में इनका कोई सानी नहीं था। जनता से घूस खाने वाले पटवारी, कोतवाल, ग्राम सेवक द्वारा घरशुल्क, बोरिंग शुल्क, बिजली शुल्क आदि वसूलने की जानकारी मिलने पर वह उन्हें जनता की सहायता से अपनी जनताना सरकार एरिया की सीमा से ही भागा देते थे। ट्रैक्टर मालिकों व किसान जनता को एक मंच में लाकर उचित भाड़ा तय करवाया करते थे। कॉमरेड गूगे दुश्मन की आंख की किरकरी बन गए थे। उन्हें पकड़ने के लिए उसने कितनी ही योजनाएं बनाईं, कुटिल चालें चलीं लेकिन जनता की मदद से गूगे ने उन सभी को असफल किया। 13 नवंबर 2008 की शाम को सी-60 कमांडो बल 50-50 की संख्या में कई बैचों में आकर खेतों में, गांवों में, सड़क के किनारे, जंगल में गश्त करने लगे। उस समय कोटिमी गांव से कॉमरेड गूगे सायकिल से आ रहे थे। अचानक सड़क के बगल से सी-60 के कमांडो निकल आए और उन्हें घेरकर पकड़ लिया। यह कहते हुए कि 'तू पुलिस की आंख में बहुत दिनों से धूल झोंकता रहा है, आज तेरी खैर नहीं', वे उनको अमानवीय यातनाएं देते रहे। पहले कॉमरेड गूगे के पैरों में गोली मारकर उन्हें तोड़ दिया। उसके बाद में हाथों तथा फिर पूरे शरीर को गोलियों से छलनी कर उनकी हत्या कर दी। लेकिन कॉमरेड

गूगे ने दुश्मन की यातनाओं को धता बताते हुए कुछ भी पार्टी का राज नहीं खोला और न ही ऊ तक की। दुश्मन ने हमेशा की भांति 'मुठभेड़ में खतरनाक नक्सली गूगे मारा गया' का समाचार प्रकाशित करवाया। यह समाचार सुनते ही कसनसूर एरिया की जनता कसनसूर थाने में उमड़ पड़ी। और कॉमरेड गूगे की लाश देने की मांग करने लगी। थानेदार लाश देने में आनाकानी करने लगा। जनता का गुस्सा बढ़ने लगा। कुछ भी होने की आशंका के तहत थानेदार को आखिरकार कॉमरेड गूगे का शव जनता को सौंपना ही पड़ा। जनता ने अपने प्रिय नेता कॉमरेड गूगे की लाश को क्रांतिकारी सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया। और उनके अधूरे सपनों को पूरा करने की शपथ ली।

## कॉमरेड मोडियम मंगली (सुनीता)

कॉमरेड सुनीता का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर इलाके के ग्राम पेद्दा कोरमा में हुआ था। मोडियम बुच्चाल और लखमी की पांच संतानों में वह तीसरी बेटी थीं। माता-पिता ने उनका नाम मंगली रखा था। जब वह छोटी थीं तब उनकी दीदी गांव में महिला संगठन की गतिविधियों में भाग लेती थीं। उन्हें देखकर सुनीता को अच्छा लगता था। गांव की प्राथमिक शाला में पांचवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने बगल के रेगड़गट्टा कन्या आश्रम में छठवीं में दाखिला लिया था। स्कूल में पढ़ते समय भी जब भी छुट्टी मिलती थी तो वह गाय चराने या महुआ बीनने जाती थीं। अपने सह उम्र के बच्चों के साथ मिलकर वह क्रांतिकारी गीत गाया करती थीं। जब वह छठवीं कक्षा में थीं तब उनकी दीदी कॉमरेड सुमन पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती हो गई थीं। उनकी भी यही तमन्ना रही कि मैं भी अपनी दीदी की तरह पार्टी में शामिल हो जाऊं और जनयुद्ध में भाग लूं। लेकिन दीदी उन्हें समझाया करती थीं कि वह गांव में संगठन में काम करते हुए अनुभव हासिल कर ले और पार्टी की राजनीति के बारे में समझ लेना और बाद में आना।

छठवीं के बाद उनकी पढ़ाई रुक गई और 2004 में वह सीएनएम की सदस्या बनकर गांव में सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने लगी थीं। वह खुद गीत लिखती भी थीं। समाज में व्याप्त पितृसत्ता का अंत करना है तो क्रांतिकारी संघर्ष ही एक मात्र रास्ता है, यह सोचकर वह पार्टी के लक्ष्यों के प्रति समर्पित हो गईं। बाद में वह गांव में केएएमएस कमेटी की सचिव बनी थीं। पश्चिम बस्तर में 2005 में पाशविक सलवा जुडूम अभियान शुरू हुआ था। सितम्बर 2005 में 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' के नाम से शत्रु बलों ने अत्यंत दमनकारी अभियान व हत्याओं का सिलसिला शुरू किया था। सैकड़ों गांव जला दिए गए। सैकड़ों बेगुनाह लोगों की हत्याएं की गईं। खुद कॉमरेड सुनीता के गांव की केएएमएस की कार्यकर्ता कॉमरेड मोडियम सुक्की और कॉमरेड कुरसम लक्के की पुलिस ने सामूहिक बलात्कार कर हत्या की थी। यह सब देख-सुनकर कॉमरेड सुनीता ने बड़ी हिम्मत दिखाते हुए गांव की युवतियों को इकट्ठा कर मिलिशिया के साथ मिलकर सलवा जुडूम के गुण्डों पर किए गए कई हमलों में भाग लिया। जनवरी 2006 में गंगलूर 'राहत' शिविर पर जब पीएलजीए ने हमला किया था उसमें कॉमरेड सुनीता ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया था जिसमें बड़ी संख्या में गुण्डों का सफाया किया गया था। फरवरी 2006 में बैलाडीला खदान पर किए गए हमले में जिसमें 19 टन बारूद जब्त किया गया था, कॉमरेड सुनीता ने मिलिशिया सदस्य के रूप में भाग लिया।

सितम्बर 2006 में कॉमरेड सनीता को पार्टी में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में भर्ती किया गया था। कुछ दिनों तक गंगलूर एरिया में काम करने के बाद उन्हें नेशनल पार्क इलाके में तबादला किया गया था। उसी समय से उनका नाम मंगली से सुनीता बदला गया। वह पार्टी में भर्ती होने के बाद से 'प्रभात', 'झंकार', 'वियुक्का' आदि पत्रिकाओं को बड़ी लगन से पढ़ने लगी थीं। और अनपढ़ साथियों को पढ़कर सुनाती थीं। इस तरह उन्होंने अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ाने की लगातार कोशिश की। हंसमुख स्वभाव वाली कॉमरेड सुनीता पीएलजीए के अनुशासन का पालन करने में अव्वल रहती थीं।

बाद में उन्हें तकनीकी विभाग का काम दिया गया। उसमें शामिल होने के बाद उन्होंने काफी मेहनत की। रात-दिन या ठण्ड-धूप की परवाह किए बिना बोझा ढोने और अन्य काम करने में वह हमेशा आगे रहती थीं। उनके विकासक्रम को देखते हुए पार्टी ने उन्हें सेक्शन उप-कमाण्डर बनाया। इस तरह पार्टी में एक ईमानदार व अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में तेजी से उभर रही कॉमरेड सुनीता को अगस्त 2008 में घटी एक दुर्घटना ने हमसे छीन लिया। उस दिन तेज बारिश हो रही थी। उस रात वह एक घर में दीवार से सटकर सोई हुई थीं। रात की जोरदार बारिश से अचानक दीवार ढह गई और कॉमरेड सुनीता की मौके पर ही मृत्यु हुई। इस युवा व अदम्य क्रांतिकारी की आकस्मिक मृत्यु से उनके सभी साथी शोक में डूब गए। उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लेते हुए उन्होंने उनका अंतिम संस्कार किया। गौरतलब बात यह है मृत्यु के समय वह मात्र 19 साल की थीं। एक मामूली आदिवासी परिवार में जन्मी इस किशोरी को दरअसल प्रतिक्रांतिकारी सलवा जुडूम ने ही लड़ने पर मजबूर किया और एक जबर्दस्त योद्धा बना दिया। और पार्टी ने उन्हें एक अच्छी कम्युनिस्ट व जनता की सच्ची सेवक बनाया। आइए, इस युवा क्रांतिकारी के अधुरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें और वर्तमान जनयुद्ध को तेज करने की शपथ लें।

## कॉमरेड सोयम एंकी

कॉमरेड सोयम एंकी कंपनी-2 में सेक्शन उप कमांडर थीं। 29 जनवरी 2006 को पश्चिम बस्तर डिवीजन में गंगालूर 'राहत' शिविर पर जब पीएलजीए ने हमला किया तो उसमें वह शामिल थीं। इस हमले में 8 एसपीओ और तीन जुडूम के गुंडा नेताओं को मार डाला गया था। इस घटना में दुश्मन ने जब मोर्टार का शेल (गोला) दागा तो कॉमरेड सोयम एंकी उसके चपेट में

आकर शहीद हो गई थीं।

कॉमरेड सोयम एंकी ने दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा एरिया के गांव गोमपाड़ के एक आदिवासी दोरला परिवार में 1986 में जन्म लिया था। पिता सोयम लच्छा और मां कन्नी की सात संतानों में से वह तीसरी संतान थीं। गरीब परिवार होने के कारण उनको कभी स्कूल जाने का मौका नहीं मिला। जब थोड़ी बड़ी हुई तो वह हल जोतना व घर के कामकाज में अपने परिवार का हाथ बंटाने लगीं।

गोमपाड़ गांव दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआती समय से ही सक्रिय है। इनका गांव चारों तरफ पहाड़ों से घिरा हुआ है और कल-कल कर बहते नाले के किनारे बसा हुआ है। सोयम एंकी के जन्म से पहले ही उनके चाचा और बुआएं जन संगठनों में काम करते रही थीं। उनके जन्म से पहले उनके पिता जेल में थे। सितंबर 1985 में पार्टी के नेतृत्व में एर्राबोर हाट बाजार पर किये गए हमले के केस में उनको सजा हुई थी। तब मध्यप्रदेश व आंध्रप्रदेश की पुलिस ने कितनी ही बार उनके गांव और घर पर हमला किया। इस तरह की कठिन परिस्थितियों में कॉमरेड एंकी का जन्म हुआ था।

उन्होंने 8-9 साल की होने के बाद बाल संगठन में काम किया और 2002 में वह केएएमएस की सदस्या बनी थीं। अक्टूबर 2003 में वह पीएलजीए की सैनिक बनीं। कोंटा दस्ते में चार-पांच महीने काम करने के बाद उन्होंने लगभग डेढ़ साल तक पामेड़ एलजीएस की गुरिल्ला सैनिक रहीं। अक्टूबर 2005 में कंपनी-2 के गठन के बाद उनका तबादला उसमें हुआ। कंपनी-2 में उनको 5 जनवरी 2006 को सेक्शन उप कमांडर की जिम्मेदारी दी गई।

कॉमरेड एंकी का बचपन पार्टी, दस्ते व जन संगठनों के साथ ही बीता था। उनके गांव से कई कॉमरेड भर्ती हुए हैं, गांव के जन संगठन के युवक-युवतियां दस्ते के गांव में प्रवेश करते ही खाना-पानी लेकर व सुरक्षा के लिए हमेशा तैयार रहते थे। गीतों से वह बहुत खुश होती थीं। सीएनएम के गीतों व नाटकों से वह काफी प्रभावित ही नहीं, बल्कि खुद उसमें भागीदारी भी लेती थीं। 28 जुलाई, 8 मार्च जैसे राजनीतिक कार्यक्रमों के अवसर पर होने वाली सभाओं में वह कई किलोमीटर पैदल चलकर भी जरूर भाग लेती थीं। पृथक बस्तर की मांग को लेकर 30 हजार लोगों की विशाल रैली कोंटा शहर में हुई थी, उसमें भी वह भाग लेने गई थीं। गांव की मीटिंग में तो वह भागी चली आती थीं।

कॉमरेड एंकी ने अपनी ढाई साल की क्रांतिकारी जिंदगी में 2 साल तक फौजी मोर्चे पर काम किया। 3 महीने से ज्यादा तक कंपनी-2 में सेक्शन उप कमांडर की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाई। इस दौरान गोल्लापल्ली और पामेड़ इलाकों में दुश्मन पर किये कई हमलों में उन्होंने प्रत्यक्ष भाग लिया। दुश्मन पर कोण्डापल्ली में किये हमले में वह शामिल रहीं। कोरापुट हमले के बाद हथियारों को लाने के लिए भेजी गई सहायक टुकड़ी में वह बहुत खुशी व जोश के साथ गई थीं।

बासागुड़ा-आवापल्ली के बीच सीआरपीएफ पर किये गए एंबुश में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। सैनिक अभ्यास में वह सदा आगे रहती थीं। समय को बिना बर्बाद किये वह खाली समय में प्राथमिक अक्षर ज्ञान के लिए ध्यान लगाती थीं। वह पार्टी द्वारा छापी जाने वाली पुस्तक, पत्रिकाओं, पर्चों को पढ़ने लायक हो गई थीं।

उन्होंने अपने काम के बल पर एलजीएस और कंपनी के सदस्यों व नेतृत्वकारी कॉमरेडों का विश्वास जीता। उनको सौंपी जाने वाली हर जिम्मेदारी को उन्होंने पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ पूरा करने की कोशिश की। उनकी राजनीतिक चेतना, अनुशासन, दुश्मन के साथ लड़ने की हिम्मत को देखते हुए कंपनी-2 की पार्टी कमेटी और पलटन पार्टी कमेटी ने उन्हें सेक्शन उप कमांडर का दायित्व सौंपा। इस जिम्मेदारी को उठाने के बाद उन्होंने और भी ज्यादा सजग व गंभीर होकर काम करना शुरू किया।

गांवों में आतंक का तांडव मचा रहे जुडूमी गुंडों और एसपीओं को सबक सिखाने के लिए 29 जनवरी 2006 की रात में पीएलजीए, जन मिलिशिया और 250 के करीब क्रांतिकारी जनता ने मिलकर गंगलूर के ‘राहत’ शिविर पर हमला किया था जिसका नाम ‘ऑपरेशन गंगोल’ रखा था। इस हमले में दुश्मन के शेल (गोला) दागने से वे शहीद हो गईं। इनके साथ एक अन्य जन मिलिशिया सैनिक भी शहीद हुए।

इस हमले ने शोषक-शसक वर्ग के गुंडों के दिलों में हड़कंप मचा दी। सलवा जुडूम के गुण्डों को और उनके द्वारा संचालित तथाकथित राहत शिविरों को सुरक्षा नहीं होने का रोना रोते हुए रायपुर से लेकर दिल्ली तक हाय तौबा मचाई गई। वहीं पहली बार सलवा जुडूमी गुण्डों के दिल में यह खौफ बैठ गया कि वे सैकड़ों सशस्त्र बलों के पहरे में रहकर भी सुरक्षित नहीं है। जनता व जन सैनिक कभी उनके ‘मजबूत’ अड्डों में भी हल्ला बोल सकते हैं। इस हमले में साहस के साथ आगे बढ़ने वाली कॉमरेड एंकी की शहादत से पीएजीए को, खासकर महिला नेतृत्व की दृष्टि से बड़ा नुकसान हुआ है। उनकी क्रांतिकारी जिंदगी से प्रेरणा पाकर उनके आदर्शों व अधूरे लक्ष्यों को आगे ले जाएंगे। दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाएंगे।

## कॉमरेड कुंजाम मंगू

दक्षिण बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के भूपालपटनम तहसील के ऊसूर ब्लॉक का गांव उकूड़ (सुगनपल्ली) में कॉमरेड कुजाम मंगू का जन्म हुआ था। यह गांव कई सालों से क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत केंद्रों में से एक रहा। गरीब किसान वर्ग से आने वाले 30 वर्षीय कॉमरेड मंगू की घर पर ही शादी हुई थी और उनके दो बच्चे भी थे। उनके माता-पिता का पहले ही निधन हो चुका था। मंगू घर पर रहते हुए ही पार्टी जो भी काम सौंप देती है तो उसे पूरा किया करते थे। जन संगठन

में रहते हुए उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया। वह एक निस्वार्थ कॉमरेड थे जो जन संगठन या पार्टी की खातिर घर के किसी भी काम को छोड़कर जाते थे।

28 जुलाई, भूमकाल दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि राजनीतिक कार्यक्रमों व सभा-रैलियों में जनता को बड़ी संख्या में गोलबंद करने में कॉमरेड मंगू की सक्रिय भूमिका रहती थी। कई अर्थिक संघर्षों में भी उन्होंने जनता का नेतृत्व किया। फरवरी 2006 में सलवा जुडूम का विस्तार बासागुड़ा इलाके में हुआ था। गांवों में जो भी मिलता है तो उसे पकड़कर मार डालना, गांवों को जलाना, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार आदि जघन्य अत्याचारों का सिलसिला शुरू हो गया। ऐसे माहौल में कॉमरेड मंगू ने जनता और भूमकाल मिलिशिया के सदस्यों को लेकर पुलिस व एसपीओं पर हमला करने और गांव की सुरक्षा के लिए चौबीसों घण्टे पहरेदारी आदि में सक्रिय भूमिका अदा की। दुश्मन के हमलों से जनता को बचाने के लिए सुरक्षा के कदम उठाते थे।

7 अक्टूबर 2008 को बासागूड़ा और गंगलूर के पुलिस बलों ने मिलकर सैकड़ों की संख्या में ऊकूड़ गांव पर हमला बोला। दो घरों में आग लगा दी। कॉमरेड कुंजाम मंगू को पुलिस ने गोली मार दी। और उसकी लाश भी उनके परिवार वालों को न देते हुए बासागूड़ा शिविर में ले गए। दरअसल कॉमरेड मंगू पुलिस के आने की खबर पाकर यह पता लगा रहे थे वो किस दिशा से जा रहे हैं। वह चाह रहे थे कि तीर-धनुषों से उनका मुकाबला किया जाए और गांव से खदेड़ दिया जाए। इतने में पुलिस ने पीछे से आकर उन्हें घेर लिया और नजदीक से गोली मार दी। अत्याधुनिक हथियारों से बड़ी संख्या में गांवों में हमले करने वाले सरकारी बलों का अपने परम्परागत हथियारों से ही मुकाबला करने का बुलंद हौसला रखते थे कॉमरेड मंगू। दरअसल दक्षिण व पश्चिम बस्तर की जनता का यह हौसला ही था जिसके दम पर सलवा जुडूम को करारा जवाब दिया गया। आइए, कॉमरेड मंगू को तहेदिल से लाल जोहार पेश करें।

## कॉमरेड वंजाम हिड़मा

दक्षिण बस्तर डिवीजन के किष्टारम एरिया के टेट्टेमड़गू गांव में कामरेड वंजाम हिड़मा का जन्म हुआ था। वह 28 साल के युवा थे। हिड़माल की मां बचपन में ही बीमारी के कारण गुजर गई थीं। उनके पिता सभी बच्चों को पाल-पोस रहे थे लेकिन गरीबी के कारण बच्चों की परवरिश में बहुत सारी समस्याएं आ रहीं थी। वहीं उनके रिश्तेदारों के यहां कोई बच्चा न होने के कारण करिगुंडम गांव के उनके रिश्तेदार 1988 में हिड़माल को ले आए थे। तब से लेकर कामरेड वंजाम हिड़मा करिगुंडम गांव के सोढ़ी परिवार में पले-बढ़े और वहीं उनकी शादी हुई।

करिगुंडम और टेट्टेमड़गू गांव 1980 से ही क्रांतिकारी आंदोलन के साथ हैं। पार्टी ने दण्डकारण्य में जब कदम रखा तब से इन गांवों में पार्टी के नेतृत्व में जाने कितने ही संघर्ष हो चुके हैं। यह इलाका तब आरक्षित वनक्षेत्र था और आज भी है। जंगल विभाग वाले जंगल में से लकड़ी लेने पर, वनोपज इकट्ठा करने पर केस लगाकर जेल भेज देते थे। जनता पर जुल्म, अत्याचार जोरों पर था और वन विभाग वाले भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी में आकंठ डूबे हुए थे। किष्टारम, गोल्लापल्ली इलाके के जंगल विभाग वालों से जनता बहुत भय खाती थी। नई जगह गांव बसाने, जंगल काटकर खेती बनाने पर हजारों रुपये का जुर्माना वे डकार जाते थे। सैकड़ों किलोमीटर की सड़क को बेगारी में बनवाने के लिए दबाव डालते थे। हजारों हेक्टेयर सागौन के जंगल को बेगारी में कटवाकर अपना घर भरते थे। बांस कटाई, जलावन कटाई आदि के लिए सैकड़ों मजदूरों को बेगारी में काटने पर मजबूर करते थे। एक फूटी कौड़ी भी मजदूरी नहीं देते थे। सरकार से आने वाले सारे पैसे को डीएफओ सहित ऊपर के अधिकारी खा जाते थे। जंगल की वनोपजों को किष्टारम, चिन्ना नलाबेल्ली और गोल्लापल्ली बाजारों में आदिवासी जनता बेचने के लिए जाती थी, जहां पर उनकी बेतहाशा लूट होती थी। इन सभी समस्याओं के खिलाफ इस इलाके की जनता ने पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष का बिगुल फूंका। इन संघर्षों में करिगुंडम और टेट्टेमड़गू की जनता अगुवा भूमिका में थी। इसी तरह परम्परागत आदिवासी मुखियाओं के खिलाफ भी संघर्ष में जनता मजबूती के साथ खड़ी हुई।

वजांम हिड़मा इन सभी संघर्षों को बचपन से ही देखते-देखते बड़े हुए थे। जैसे-जैसे जनयुद्ध बढ़ा वैसे-वैसे बढ़ती उम्र में वह जन मिलिशिया में भर्ती हो गए। जन मिलिशिया में आकर वह जन विरोधी तत्वों, मुखबिरों को सजा देने में शामिल हुए। उनकी चेतना और बढ़ी तो वह 2004 में पीएलजीए में भर्ती हो गए। उन्हें पार्टी ने स्थानीय जन मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी। उसके बाद पलटन-8 में जरूरत पड़ी तो उन्हें वहां तबादला कर सेक्शन उप कमांडर की जिम्मेदारी दी गई। पार्टी के चौथे डिवीजन अधिवेशन में उन्होंने प्रतिनिधि के तौर पर भागदारी की। वहां जन मिलिशिया के बारे में चर्चा की। किष्टारम इलाका आंध्र के खम्मम जिले से सटा हुआ है। इसलिए वहां हमेशा आतंकी ग्रेहाउंड पुलिस बलों का आना-जाना लगा रहता है। 26 नवंबर 2006 को करिगुंडम, टेट्टेमड़गू, निम्मलागूडेम, पुटेपाड़ और डोकपाड़ गांवों पर हमला करने आ रहे हैं, ऐसा सुनकर पलटन के साथ जनता की रक्षा के लिए वह दुश्मनों से टक्कर लेने के लिए जा रहे थे कि बीच रास्ते में ही दुश्मन से झड़प हो गई। इस झड़प में कॉमरेड हिड़माल शहीद हो गए।

आने वाली पीढ़ियों के लिए समाज को शोषण मुक्त किया जाए, ऐसी उच्च सोच के साथ कॉमरेड हिड़मा क्रांतिकारी आंदोलन मे कूद पड़े थे। खुद ही नहीं उन्होंने अपनी छोटी बहन को भी क्रांतिकारी आंदोलन में जोड़ा था। कामरेड हिड़माल के आदर्शों का हमें ग्रहण करना है। नए जनवादी समाज के निर्माण के लिए हमें उनकी राह पर चलना है। कामरेड हिड़मल सदा ही हमारे दिलों में जिंदा रहेंगे। ★

( ...अंतिम पृष्ठ का शेष )

कक्षाओं में कॉमरेड सुधाकर ने भी भाग लिया था। उस समय उत्तर तेलंगाना में गुरिल्ला जोन का स्तर पूरा करने और दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य से आंदोलन के निर्माण सिलसिला शुरू हुआ। इस कार्यभार को पूरा करने के लिहाज से कॉमरेड सुधाकर को एटूरनागारम जंगली इलाके में (जो उस समय दण्डकारण्य का हिस्सा था) दस्ता कमाण्डर बनाकर भेजने का फैसला उस समय की राज्य कमेटी ने लिया था। 1985 में उन्होंने यह जिम्मेदारी स्वीकार कर 1986 तक काम किया। तब तक वहां पर स्थिति यह थी कि एक तरफ दुश्मन के साथ लड़ना पड़ता था और दूसरी तरफ दक्षिणपंथी जनशक्ति ग्रुप के अवसरवाद का पर्दाफाश करते हुए जनता में जड़ें बनानी थीं। उस समय के मुख्यमंत्री एनटीआर की फासीवादी सरकार ने क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ अघोषित युद्ध छेड़ दिया था। झूठी मुठभेड़ों में क्रांतिकारियों की हत्याओं का सिलसिला चल पड़ा। ऐसे हालात में एक तरफ सरकारी दमन का मुकाबला करते हुए और जनशक्ति ग्रुप के दिवालिएपन के खिलाफ सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्ष तेज करते हुए ही क्रांतिकारी आंदोलन के लिए मजबूत जनाधार बनाने का प्रयास किया कॉमरेड सुधाकर ने।

घटनास्थल पर कॉमरेड पटेल सुधाकर और प्रसन्न के मृत शरीर

आंध्रप्रदेश के आंदोलन में आए विकास के मद्देनजर एनटी का आंदोलन एक रीजनल कमेटी के रूप में संगठित हुआ। उस समय एटूरनागारम और महदेवपुर के जंगली इलाकों को एनटी में शामिल किया गया था। उस समय पार्टी ने कॉमरेड सुधाकर को गढ़चिरोली स्थानांतरित किया था। वहां उन्होंने कॉमरेड रामन्ना के नाम से एटापल्ली इलाके में आंदोलन की बागडोर संभाल ली। तब तक वहां क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार नहीं हो सका था। कॉमरेड रामन्ना ने आदिवासियों की माड़िया भाषा बड़े लगन के साथ सीखकर जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाने की भरसक कोशिश की। आदिवासी गांवों में मुखिया लोग क्रांतिकारी संगठनों के निर्माण को हतोत्साहित करते थे। ऐसे लोगों को तटस्थ करने के लिए धैर्य के साथ काम करते हुए उन्होंने नौजवानों को बड़े पैमाने पर गोलबंद किया। कसनसूर इलाके में मजबूत क्रांतिकारी आंदोलन की नींव कॉमरेड रामन्ना ने ही डाली थी। कोयंदूर, ओट्टेगट्टा, कोंदावाही, गड्डेर, कुदिरी, कोटिमी, गोडसूर, कोत्ताकोण्डा, जप्पी, बोरिया आदि गांवों की जनता आज भी उनके कार्य को याद करती है। आदिवासी किसानों को ही नहीं, बल्कि छात्रों व कर्मचारियों को भी क्रांतिकारी आंदोलन में भागीदार बनाने का उन्होंने पूरा प्रयास किया। गढ़चिरोली में शुरू से ही दस्तों पर पुलिसिया दमन ज्यादा था। कई बार दस्तों पर पुलिस ने हमले किए थे। ऐसे एक वाकिए में 1988 में कुरुमवाड़ा के पास जब पुलिस ने दस्ते पर धावा बोला तब कॉमरेड रामन्ना के नेतृत्व में गुरिल्ला दस्ते ने जवाबी हमला किया। उस प्रतिरोध में एक थानेदार मारा गया था जबकि दूसरा घायल हुआ। इस तरह वह फौजी मोर्चे पर एक जुझारू कमाण्डर के रूप में उभरे थे।

## गुरिल्लों के हाथों में सधी हुई रायफल

एनटी और डीके के आंदोलनों को उन्नत स्तर पर विकसित करने की योजना के तहत युद्ध को तेज करना और बढ़ती सेना के लिए नए-नए हथियार जुटाना महत्वपूर्ण काम बन चुका था। ऐसी स्थिति में सुव्यवस्थित रूप से हथियारों की खरीद का काम केन्द्रीय कमेटी ने कॉमरेड सुधाकर को सौम्प दिया। 1989 में उन्होंने यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर उसमें अच्छा-खासा योगदान दिया। बंगलूरू शहर को अपना केन्द्र बनाकर एक बड़ा नेटवर्क तैयार कर कॉमरेड सुधाकर ने दुश्मन के नाक के नीचे ही सैकड़ों हथियारों की खरीद की। उस समय एनटी और डीके आंदोलनों की जरूरतों को पूरा करने में कॉमरेड सुधाकर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हथियारों की आपूर्ति का काम सुचारू रूप से करने के लिए उन्होंने कई भाषाएं सीखीं। दुश्मन के बारे में उन्होंने काफी अध्ययन किया। अप्रैल 1992 में एक हथियार व्यापारी की गद्दारी से उनकी आंध एसआइबी ने गिरफ्तारी की थी। उन्हें काफी यातनाएं दी गईं। फिर भी उन्होंने दृढ़ संकल्प दिखाते हुए पार्टी नेतृत्व को बचाया। उनकी गिरफ्तारी के समय पकड़े गए हथियारों की नुमाइश कर तत्कालीन जनार्धनरेड्डी सरकार ने तत्कालीन पीपुल्सवार पार्टी पर प्रतिबंध लगाया और आंदोलन का दमन तेज किया।

## शत्रु शिविर में भी लहराया संघर्ष का परचम

1992-97 के बीच उन्होंने मुख्यत: सिकन्दराबाद जेल में बंदी जीवन बिताया। उस समय की कांग्रेस सरकार ने आंदोलन के इलाकों में बड़ी संख्या में क्रांतिकारियों की हत्या करते हुए दूसरी तरफ जेलों में कैद राजनीतिक बंदियों का भी दमन किया। इसके खिलाफ आंध्रप्रदेश के सारे जेल संघर्ष के केन्द्र बने थे। माओवादी बंदियों ने राज्य के सभी जेलों में बंद कॉमरेडों के साथ

तालमेल कायम किया। जन संगठनों के समर्थन से राज्य भर के जेलों में चला उस ऐतिहासिक संघर्ष ने राज्य की राजनीति को खासा प्रभावित किया था। क्रांतिकारी आंदोलन के कई मित्र मिलने के अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी मान्यता मिली थी। 1994 के आखिर से 1995 के मध्य तक चले राजनीतिक बंदियों के ऐतिहासिक संघर्ष में कॉमरेड सुधाकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संघर्ष के फलस्वरूप साधारण और राजनीतिक बंदियों ने कई मांगें हासिल कीं। 14 साल की सजा पूरी करने वाले सैकड़ों कैदियों को जेलों से रिहा किया गया। पूरे आंदोलन और जनता पर इस संघर्ष की जीत से जबर्दस्त प्रभाव पड़ा था। जेलों में कैद कॉमरेडों को राजनीतिक रूप से प्रशिक्षित करने और दमन के बीचोबीच उन्हें दृढ़तापूर्वक खड़े रखने में कॉमरेड सुधाकर का खासा योगदान रहा। जेल में रहने के दौरान उन्होंने दुश्मन का गहरा अध्ययन किया। पार्टी को बचाने के लिए पार्टी के लिए विशेष रूप से खुफिया विभाग का होना जरूरी है, ऐसा उन्होंने पार्टी के सामने अपना विचार रखा। ऐसे ही विचारों से काफी समय बाद पार्टी में खुफिया विभाग की स्थापना करने में मदद मिली।

## आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन का नेता

1997 में जेल से रिहा होने के बाद कॉमरेड सुधाकर ने आंध्रप्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलन में रीजनल कमेटी सदस्य के रूप में जिम्मेदारी ली। उस समय लुटेरे शासक वर्ग एलआईसी रणनीति के तहत आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन का उन्मूलन करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे। मुखबिरों, कोवर्टों और सुधार कार्यक्रमों के साथ चौतरफा हमले कर ग्रेहाउण्ड्स बलों के जरिए दस्तों और नेतृत्व का सफाया करवा रहे थे। ऐसी स्थिति में कॉमरेड सुधाकर ने दक्षिण तेलंगाना की जिम्मेदारी ले ली। उन्होंने वहां के हालात को तेजी से समझते हुए नलगोण्डा और महबूबनगर जिलों के आंदोलनों का मार्गदर्शन किया। 1999 से 2001 तक दक्षिण तेलंगाना रीजनल कमेटी के सचिव के रूप में उन्होंने आंदोलन का बचाव करते हुए दुश्मन का मुकाबला किया। सभी जिलों में रणनीतिक लिहाज से अनुकूल इलाकों को चुनकर वहां पर सुनियोजित तरीके से काम को आगे बढ़ाया। दुश्मन के तीखे हमले के बीच मेदक जिले से संगठन को पीछे लेकर नेतृत्व व बलों को सुरक्षित इलाकों में भेजा। कोवर्टों के खिलाफ अपनाई गई कार्यनीति, विभिन्न मुद्दों को लेकर जनता को संघर्ष में उतारने आदि मामलों में कॉमरेड सुधाकर का योगदान काफी महत्वपूर्ण था। उनके योगदान से उस दौर में पार्टी का जनाधार बढ़ाने व संगठन का विस्तार करने में काफी मदद मिली थी।

पार्टी कमेटियों की बैठकों में उनकी भूमिका सराहनीय रहती थी। समस्याओं पर गहराई से चर्चा करते हुए कमेटी के कामकाज में उत्पन्न समस्याओं के हल पर वह जोर देते थे। महबूबनगर, गुंटूर व रायलसीमा में पार्टी कमेटियों की समस्याओं का अध्ययन कर उन्हें हल करने में कॉमरेड सुधाकर ने उल्लेखनीय काम किया। पुरानी पीपुल्सवार की कांग्रेस से पहले 1999 में और बाद में 2002 में एपी में चलाए गए भूल सुधार अभियान के तहत पार्टी कमेटियों में मौजूद गलतियों को सुधारने में उनका योगदान रहा। वर्ष 2000 में सम्पन्न दक्षिण तेलंगाना अधिवेशन, दिसम्बर 2000 में सम्पन्न आंध्रप्रदेश राज्य अधिवेशन और 2003 की शुरूआत में सम्पन्न आंध्रप्रदेश राज्य प्लीनम के अंदर कमेटियों की समस्याओं पर चर्चा कर राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षाओं को समृद्ध बनाने में अपने हिस्से की भूमिका निभाई। दक्षिण तेलंगाना आंदोलन को गुरिल्ला जोन स्तर में विकसित कर उसे अनुमोदित करवाने और 2003 प्लीनम में सामने आए गलत रुझानों पर संघर्ष करने में उनका बड़ा योगदान रहा।

शहरी आंदोलन में उनके प्रयास और अनुभव खासे महत्व के थे। 1998 तक दुश्मन के हमले में, खासकर खून के प्यासे एपी एसआईबी द्वारा रचे गए जघन्य हत्याकाण्डों के कारण हैदराबाद शहर की पार्टी कमेटी बुरी तरह मार खाई थी। ऐसी स्थिति में शहर कमेटी की जिम्मेदारी लेकर गोपनीय तरीके से शहरी आंदोलन के पुनरनिर्माण करने में उनका मार्गदर्शन रहा। उस दौरान उन्होंने वहां के काडरों और जन संगठनों का स्नेह जीत लिया। खुले और गैर-कानूनी तरीकों से संगठनों और संघर्षों का संचालन करने में उन्होंने कमेटियों का मार्गदर्शन किया। 2002 में शहरी काम के परस्पेक्टिव को बनाने के लिए गठित ड्रैफ्टिंग कमेटी में वह भी शामिल थे। शहरी आंदोलन के अनुभवों और अन्य आंदोलनों के अनुभवों से प्राप्त शिक्षा के आधार पर उन्होंने शहरी परस्पेक्टिव बनाने में कई अनमोल सुझाव दिए।

## स्टेट मिलिटरी कमिशन का प्रभारी

2001 में आंध्रप्रदेश में पहली बार गठित स्टेट मिलिटरी कमिशन (एसएमसी) के प्रभारी का जिम्मा लेकर कॉमरेड सुधाकर मार्च 2003 तक उस पर बने रहे। दिसम्बर 2000 में पीएलजीए की स्थापना के बाद उसके अनुरूप आंध्र में फौजी फ्रंट को मजबूत करने का कार्यभार कॉमरेड सुधाकर ने अपने कंधों पर लेकर उसमें अथक प्रयास किया। क्रांतिकारी जिंदगी के अपार अनुभव के साथ राजनीतिक, फौजी और सैद्धांतिक पहलुओं को जोड़कर एसएमसी और एससी (राज्य कमेटी) की काफी मदद की। खासकर फौजी मामलों में कई फैसले लेने में राज्य कमेटी को उनके सुझाव व प्रस्ताव खासा काम आए। दो सालों के अंदर कमाण्ड, प्लटून, दस्तों के संचालन में आ रही समस्याओं को हल करने में तथा खुफिया काम और कम्युनिकेशन्स के सम्बन्ध में मार्गदर्शन देने में, फौजी कार्रवाइयों में हो रही गलतियों को सुधारने में उन्होंने महत्वपूर्ण सुझाव रखे। दुश्मन से सम्बन्धित जानकारियां जुटाने और एक्शन टीम के संचालन आदि मामलों में उन्होंने मार्गदर्शन दिया। पीएलजीए के सामने मौजूद फौजी समस्याओं को हल करने में और सुचारू मार्गदर्शन देने में कम से कम दस पत्र या सरकुलर तैयार करने में कॉमरेड सुध

ाकर का बड़ा योगदान रहा। इससे पीएलजीए में बेहतर कामकाज, अनुशासन और समझदारी बढ़ाने में काफी मदद मिली। इसके लिए आवश्यक सैन्य साहित्य का जुगाड़कर कमेटियों और फौजी इकाइयों तक पहुंचाने में कॉमरेड सुधाकर का बड़ा योगदान रहा। सैन्य सिद्धांत के अध्ययन के महत्व को पहचान कर कॉमरेड सुधाकर ने गुरिल्ला एअर डिफेन्स जैसा साहित्य का अनुवाद करवाकर काडर तक पहुंचाया।

शहीद कॉमरेड सत्यम (राममोहन) के साथ मिलकर कॉमरेड सुधाकर ने कई सैन्य प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया। इससे प्लटूनों और अन्य पीएलजीए बलों का रण कौशल बढ़ाने में काफी मदद मिली। 2002 में शहीद कॉमरेड्स सत्यम और रमणारेड्डी के साथ मिलकर उन्होंने एक शहरी गुरिल्ला प्रशिक्षण शिविर चलाया था जो बड़ा महत्वपूर्ण शिविर था। जंगलों और मैदानी ग्रामीण इलाकों के अलावा शहरी इलाकों में लड़ाई का प्रशिक्षण देने की जरूरत को उन्होंने शिद्दत के साथ महसूस किया। कैम्प में आए छात्रों में उत्साह पैदा करने में कॉमरेड सुधाकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन मिलिटरी कैम्पों के जरिए सभी जिलों में स्पेशल एक्शन टीमों का गठन कर दुश्मन पर लगातार गुरिल्ला कार्रवाइयों के संचालन की योजना बनाई गई।

उस समय तक दक्षिण तेलंगाना, नल्लामला, गुंटूर और रायलसीमा इलाकों में आंदोलन अलग-अलग स्तर पर जारी था। दुश्मन के हमले बढ़ने लगे थे और हमारी गुरिल्ला कार्रवाइयों और जन संघर्षों में भी बढ़ोत्तरी थी। ग्रेहाउण्ड्स आदि विशेष बलों के द्वारा किए गए हमलों में हमारे आंदोलन को कई नुकसान हुए थे। गुरिल्ला बलों के बहादुराना प्रतिरोध के बावजूद भी चूंकि उनका प्रशिक्षण प्राथमिक स्तर का था, इसलिए कई दिक्कतें थीं। गुरिल्ला बलों की फौजी क्षमताओं को बढ़ाने में उन्होंने अथक प्रयास किया।

नल्लामला की भौगोलिकता और कृष्णा नदी के तटवर्ती इलाके की धरातल पर गुरिल्ला युद्ध का संचालन कैसा हो और वहां की विशिष्ट परिस्थिति में दावपेंच कैसे हों, इस पर उन्होंने कई सुझाव दिए। राज्य में हथियारों की तैयारी की जिम्मेदारी भी लेकर उन्होंने उसके अंदर आ रही खराबियों को सुधारने पर जोर दिया। नए-नए हथियारों की बनावट में उनका योगदान था। आंध्र के मैदानी इलाकों में हुए नुकसानों को ध्यान में रखते हुए 'मैदानी इलाकों के कामकाज' पर एक सरकुलर तैयार करने में कॉमरेड सुधाकर का खासा योगदान रहा। उस सरकुलर में कामकाज के पुराने तरीकों को त्यागकर नए-नए तरीकों में जनता को गोलबंद करने के दावपेंच सुझाए गए।

राज्य में खुफिया विभाग बनाने का सुझाव रखते हुए उसके लिए आवश्यक मार्गदर्शक नियम भी तैयार किए। उस पर अमल की बात पर उन्होंने जोर दिया। बेहद प्राथमिक स्तर पर ही सही इस विभाग को शुरू करने में कामरेड सुधाकर के योगदान, प्रयास व प्रेरणा काफी महत्वपूर्ण थे। उनके मार्गदर्शन में यादगिरिगुट्टा, श्रीशैलम और सुन्निपेंटा रेड कार्रवाइयां सफल हुईं। इन कार्रवाइयों से तब पीएलजीए बलों में काफी आत्मविश्वास बढ़ा था।

एसएमसी प्रभारी के रूप में उन्होंने बहुत कम समय में ही राजनीतिक व सैन्य मामलों में पार्टी कमेटियों और पीएलजीए बलों की समझदारी बढ़ाने में विशेष योगदान दिया। फौजी सिद्धांत के अध्ययन और गुरिल्ला दावपेंच पर दृढ़तापूर्वक अमल, पार्टी कतारों को आत्मविश्वास देना कि छोटी गुरिल्ला यूनिटें भी मजबूत दुश्मन का मुकाबला कर सकती हैं, गलत रुझानों के खिलाफ सक्रियता से लड़ने में, पराजय या उतार-चढ़ावों में दृढ़ता व विश्वास के साथ खड़ा होना आदि कॉमरेड सुधाकर के सहज गुणों से हम सभी को सीख लेनी चाहिए। दुश्मन की यातनाओं के चलते उनके पैरों में काफी दर्द होता था। ऐसी स्थिति में भी उन्होंने राज्य मिलिटरी कमिशन की जिम्मेदारी लेकर जिस प्रकार राजनीतिक व फौजी रूप से नेतृत्व किया, वह काफी प्रेरणादायक है।

## महत्वपूर्ण कार्रवाइयों को अंजाम देने वाली एक्शन टीम का मार्गदर्शक

हमारे क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में जालिम राजनेताओं और खूंखार पुलिस अधिकारियों को दण्डित करने के लिए एक्शन टीमों का निर्माण कर उन्हें बेहतर तरीके से काम करवाकर अच्छे नतीजे हासिल करने में कॉमरेड सुधाकर के प्रयास और अनुभव पार्टी के लिए काफी महत्वपूर्ण है। 1998 में गठित एक्शन टीम का उन्होंने राजनीतिक रूप से मार्गदर्शन किया। उस टीम को राजनीतिक व फौजी रूप से विकसित कर एक आदर्श टीम के रूप में उभारने में उन्होंने खासा योगदान दिया। कोई भी कार्रवाई करनी है तो उसके बारे में गहरा अध्ययन, उसके बाद उचित व्यवस्था, प्रशिक्षण... यह सब सुनियोजित तरीके से करने में वह माहिर थे। इस प्रकार की बेहतरीन योजनाओं के चलते ही उमेशचंद्र, माधवरेड्डी जैसे खूंखार दुश्मनों को मार गिराने में सफलता मिली थी। और अत्यंत कड़ी सुरक्षा के बावजूद जालिम हत्यारे चन्द्रबाबू पर हमला करने में भी यही निपुणता काम आई। इन कार्रवाइयों ने उस समय राजनीतिक रूप से खासा प्रभाव डाला था और जनता व काडरों में फौजी तौर पर अत्मविश्वास बढ़ा था। एक्शन टीम में कुछ कॉमरेड शहीद हुए थे, फिर भी कई कॉमरेड उनका स्थान लेकर आगे बढ़ सकें और लुटेरे शासक वर्गों का खात्मा कर सकें, ऐसा एक उत्साहपूर्ण वातावरण बनाया था कॉमरेड सुधाकर ने।

## जन खुफिया विभाग का निर्माता

जब क्रांतिकारी आंदोलन का विकास होने लगा, तब दुश्मन के दावपेंचों को समझना और उसके खिलाफ माकूल दावपेंच तैयार करना खासा महत्व का विषय हो जाता है। इसके लिए पार्टी में जन खुफिया विभाग का गठन जरूरी है। इस तरह भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में पहली बार हमारी पार्टी जन खुफिया विभाग का गठन करने का फैसला लिया। इस क्षेत्र

में कार्य कर उसे एक संगठित रूप देने के लिए कॉमरेड सुधाकर को सक्षम कॉमरेड मानते हुए पार्टी ने 2003 में उन्हें यह जिम्मेदारी दी। उस समय वह आंध्र के आंदोलन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहे थे। उन्हें वहां से स्थानांतरित करने से आंदोलन पर काफी प्रभाव पड़ सकता था। फिर भी इस नए विभाग के महत्व को देखते हुए केन्द्रीय कमेटी ने उन्हें स्थानांतरित किया।

राजनीतिक व फौजी सिद्धांत को गहराई से अध्ययन करने में रुचि रखने वाले कॉमरेड सुधाकर ने खुफिया विभाग को शुरू करने की जिम्मेदारी सहर्ष स्वीकार की। इसके लिए आवश्यक साहित्य और समाचार इकट्ठा किया। जहां तक उपलब्ध हुआ, सभी देशों के खुफिया विभागों के बारे में अध्ययन किया। इसके सम्बन्ध में ढेर सारा साहित्य का अध्ययन किया। खासकर उन्होंने भारत की खुफिया व्यवस्थाओं पर पैनी नजर रखी। विभिन्न देशों की खुफिया व्यवस्थाओं के बारे में पार्टी में सभी कॉमरेड आसानी से समझ सकें, इसके लिए उन्होंने सरल ढंग से 'छठी इंद्रिय' की रचना की। परस्पेक्टिव पेपर को तैयार कर पार्टी के समक्ष रखा। कुछ भी नहीं रहने की स्थिति से, किसी भी प्रकार के खुफिया विभाग या किसी देश के सहयोग के बिना ही, सीसी के मार्गदर्शक नियमों को ध्यान में रखते हुए, पार्टी के लम्बे अनुभवों से मिले विषयों के आधार पर, हमारे देश की ठोस परिस्थिति और पार्टी की मौजूदा युद्ध-स्थिति और जरूरतों के हिसाब से उन्होंने परस्पेक्टिव तैयार किया। इस विभाग को शुरू करने में उनका योगदान खासा महत्वपूर्ण है। बेहद कठिनाइयों, कई प्रतिकूल परिस्थितियों, गंभीर अस्वस्थता और एपी एसआईबी की लगातार खोजी कार्रवाइयों के बीच उन्होंने पार्टी की इस जिम्मेदारी को पूरा किया।

खुफिया काम से सम्बन्धित ढेर सारा साहित्य उन्होंने इकट्ठा किया। पार्टी में विभिन्न कमेटियों के अध्ययन के हिसाब से अलग-अलग बहुत सारा साहित्य उपलब्ध करवाया। खुफिया विभाग के सम्बन्ध में उन्होंने कई बार कॉमरेडों की कक्षाएं लेकर उनकी समझदारी बढ़ाई। वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर और अन्य मुद्दों पर उन्होंने पार्टी को जो रिपोर्टें दीं वे काफी उपयोगी थीं।

मिलिटरी इंटेलिजेन्स के लिए उन्होंने जो मार्गदर्शन दिया, साहित्य उपलब्ध कराए, जो कक्षाएं लीं और समझदारी दी वो अनमोल हैं। इस तरह छह सालों तक उन्होंने इस क्षेत्र में अथक परिश्रम कर हमें काफी अनुभव दिए।

## आदर्श नमूना - अद्भुत प्रेरणा

ईमानदारी, समर्पण की उच्च भावना, उत्पीड़ित जनता के हितों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, रचनात्मकता, हर किस्म के कार्यभार को पूरा कर सकने की दृढ़ निश्चयता, लड़ाकू जुझारूपन आदि आदर्शपूर्ण गुणों से लैस थे कॉमरेड सुधाकर। कठिन परिस्थितियों और संकट के दौर में भी उनमें ढुलमुलपन या तनाव नहीं देख सकते थे। 2003 में नल्लामला जंगलों में जब वह काम कर रहे थे तब एक वाकिए में अचानक पुलिस ने कैम्प पर धावा बोला था। कैम्प में मौजूद सभी कॉमरेडों में तनाव का वातावरण निर्मित हुआ था। लेकिन कॉमरेड सुधाकर ने उसे बिना किसी तनाव के संयम के साथ लिया और उन्हें देखकर बाकी सभी कॉमरेडों में भी आत्मविश्वास बढ़ गया। उन्होंने सुरक्षा टुकड़ी के कॉमरेडों को आदेश दिया कि वे दुश्मन पर तब तक गोलीबारी जारी रखें जब तक कि बाकी सभी कॉमरेड सुरक्षित न निकल जाते। उनका साथ रहना ही अपने आप में कॉमरेडों के लिए दुगुना मनोबल हुआ करता था।

जिला कमेटी की बैठकों से लेकर राज्य कमेटी और केन्द्रीय कमेटी तक सभी बैठकों में कॉमरेड सुधाकर की भूमिका बेहद सक्रिय और निर्णायक रहती थी। परिस्थिति पर उनकी अच्छी-खासी पकड़ रहती थी। बैठकों के पहले वह अच्छा होमवर्क किया करते थे। कठमुल्लावाद कभी नहीं रहता था उनके अंदर। इसलिए पार्टी और आंदोलन के सामने मौजूद समस्याओं के लिए वह हमेशा रचनात्मक और व्यवहारयोग्य हल ढूंढ़ सकते थे। कमेटी की बैठकों में उनकी उपस्थिति जटिल समस्याओं के हल में उपयोगी साबित होती थी। कॉमरेड सुधाकर के कई ऐसे क्रांतिकारी गुण थे जिनका हम सभी को अनुसरण करना चाहिए। उनकी हास्यप्रियता, पार्टी लाइन और नीतियों पर आलोचना पेश करने का ढंग, अपनी और अपने साथियों की गलतियों पर सटीक व सधी हुई आलोचना करना, पहलकदमी, रचनात्मकता, अन्य कमेटियों और आंदोलनों का अध्ययन करने में आगे रहना, देश-दुनिया में घटने वाली हर घटना पर पैनी नजर रखना, पार्टी द्वारा सौम्पे गए हर कार्यभार को गंभीरता से लेकर पूरा करना आदि गुण उनके 27 सालों के पार्टी जीवन में हमेशा उनके साथ रहे। इसलिए उन्हें कोई भी काम सौम्पकर उच्च कमेटियां निश्चिंतता के साथ रहती थीं।

2001 में सम्पन्न पुरानी पीपुल्सवार पार्टी की कांग्रेस में उन्होंने प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया था। उसमें कर्नाटक के कॉमरेडों की तरफ से सामने लाई गई गलत लाइन पर उन्होंने बेबाक आलोचना पेश की थी। 2007 में सम्पन्न हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस में आंध्रप्रदेश के आंदोलन के पीछे हट के कारणों और खासकर सरकार द्वारा लागू एलआईसी रणनीति का मुकाबला करने में हम कहां पिछड़ गए थे तथा क्या हमें करना चाहिए था, आदि बातों पर उन्होंने विश्लेषणात्मक टिप्पणी की थी। इस कांग्रेस में केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुने जाने के बाद उन्होंने इंटेलिजेन्स प्रमुख की जिम्मेदारी फिर से संभाली।

## कलम का सेनानी

कॉमरेड सुधाकर का योगदान राजनीतिक, फौजी, सांगठनिक व सैद्धांतिक क्षेत्रों के अलावा क्रांतिकारी साहित्य के क्षेत्र में भी रहा। जब वह दण्डकारण्य में थे उन शुरूआती दिनों में 'वनवासी' के नाम से और उसके बाद 'रवींद्र' के नाम से और जब वह जेल में थे तब 'समुद्रम' (जो राजनीतिक कैदियों का सामूहिक नाम था) के नाम से भी और 'करागारवासी' के नाम

से भी कई रचनाएं की थीं। कुछ अन्य नामों से भी उन्होंने कविता, कहानी, आलोचना आदि लिखा था। उनकी हर साहित्यिक कृति क्रांति का संदेश देती थी। दुश्मन के प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का अध्ययन करने के दौरान उन्होंने कई फौजी रचनाएं भी कीं। कई अन्य लेखों का उन्होंने अनुवाद किया। 'अवामी जंग' पत्रिका के लिए वह नियमित रूप से लिखा करते थे।

**व्यक्तिगत जीवनः** जब वह एटूरनागारम में काम करते थे तभी एक कॉमरेड से उनकी शादी हुई थी। उनका एक बेटा भी हुआ। लेकिन 1998 में उनकी पत्नी राजनीतिक रूप से कमजोर पड़ गई थी और उसने आंदोलन से वापस जाकर पुलिस के सामने घुटने टेक दिए। उस मुश्किल स्थिति का कॉमरेड सुधाकर ने बड़े धैर्य के साथ सामना किया। 2000 के आखिर में उन्होंने एक और क्रांतिकारी को जीवनसाथी चुनकर उनसे विवाह किया।

## आंसुओं से विदाई

देश की मुक्ति के खातिर अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर करने वाले कॉमरेड पटेल सुधाकर की अंतिमयात्रा में हजारों जनता ने भाग लिया। उनके पार्थिव शरीर को वाहन में गद्वाल से पेद्दापल्ली, अमराबाई, मलदाकल, शेषमपल्ली, ताटिकुण्टा से होते हुए कुर्तिरावुलाचेरवू तक जुलूस की शक्ल में ले जाया गया। 26 मई की शाम के 4 बजे शुरू हुई उनकी अंतिमयात्रा क्रांतिकारी नारों और आंसुओं से एक घण्टे तक चलती रही। गांव के पास उनके खेत में कॉमरेड पटेल सुधाकर की अंत्येष्टि की गई।

लगभग तीन दशकों के लम्बे क्रांतिकारी सफर में छात्र नेता, किसान नेता, आदिवासी जनता का कमाण्डर, आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन का नेता, केन्द्रीय कमेटी का सदस्य और खुफिया विभाग के निदेशक आदि भूमिकाओं में कॉमरेड सुधाकर अरुणिम रास्ते बनाते चल दिए। जो भी क्षेत्र उन्होंने अपनाया था उसे सुचारू रूप से आगे बढ़ाते हुए पार्टी के लिए काफी अनुभव प्रदान किए। इस तरह वह एक व्यक्ति से शक्ति के रूप में विकसित हो गए।

खासकर ऐसे समय में जबकि देश के कई हिस्सों में क्रांतिकारी आंदोलन तेजी से आगे बढ़ रहा है और क्रांतिकारी युद्ध प्रति-क्रांतिकारी युद्ध से लोहा लेते हुए एक जबर्दस्त चुनौती पेश कर रहा है, ऐसे समय में कॉमरेड सुधाकर की असमय मृत्यु भारतीय क्रांति के लिए जबर्दस्त नुकसान है। फिर भी माओवादी जनयुद्ध के द्वंद्वात्मक नियम ही यह है कि यह जनता में से अपने नेता खुद-ब-खुद तैयार करते हुए आगे बढ़ता रहेगा। कॉमरेड सुधाकर समेत हजारों वीर शहीदों के खून से लाल हुए मुक्ति संग्राम के रास्ते में लाखों करोड़ों वारिस आगे बढ़ते जाएंगे... उनके अधूरे सपनों को अंजाम तक पहुंचाकर रहेंगे। ✶

## दमनजोड़ी ( नाल्को ) रेड - देश के शासक वर्गों में मची हड़कम्प

*जब देश के लुटेरे शासक गिरोह लोकसभा चुनावों में ज्यादा सीटें पाने की होड़ में एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हुए मतदाताओं को भरमाने के लिए नाना प्रकार के हथकण्डे अपनाकर 'लोकतंत्र' की आड़ में नोटतंत्र के गंदे खेल में मशगूल थे, पीएलजीए के लाल सैनिक लगातार एक के बाद एक सैनिक कार्रवाइयों को अंजाम देने लगे थे। जनता में आतंक का तांडव कर रहे पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों का सफाया करना और चुनाव बहिष्कार के लिए अनुकूल माहौल बनाना इन हमलों का लक्ष्य था। इसी लक्ष्य के अंतर्गत ओड़िशा के दामनजोड़ी में 12 अप्रैल 2009 की रात में पीएलजीए ने एक जबर्दस्त हमला किया। दामनजोड़ी में मौजूद नाल्को (नेशनल अल्यूमिनियम कम्पनी) का बाक्साइट खदान पूरे एशिया में ही सबसे बड़ा खदान है। इस खदान पर हमला कर बारूद और सीआईसीएफ वालों के हथियार छीनना इस हमले का लक्ष्य था। हमले में पीएलजीए के विभिन्न बलों ने, मुख्य रूप से बड़ी संख्या में जन मिलिशिया ने भाग लिया। हमला शुरू करते ही पीएलजीए की विभिन्न टुकड़ियों ने मोबाइल टॉवरों को उड़ाकर संचार संपर्क को तोड़ दिया। चूंकि खदान व बारूद डिपो एक पहाड़ के ऊपर है इसलिए ऊपर की ओर आने वाले सभी रास्तों पर अलग-अलग टुकड़ियों ने एम्बुश लगाया ताकि अतिरिक्त बलों को आने से रोका जा सके। हमला रात के करीब 10 बजे शुरू हुआ था जो सबेरे 5 बजे तक चलता रहा। इसमें सीआइएसएफ के 11 जवान मारे गए और 15 अन्य घायल हो गए। उनसे कुल 10 इंसास रायफलें, एक एलएमजी, एक दंगा नियंत्रक गन और बड़ी मात्रा में गोलाबारूद पीएलजीए ने जब्त किए। दूसरे दल ने बारूद डिपो पर हमला कर कई टन बारूद जब्त कर लिया। इस शानदार हमले को सफल बनाने के दौरान हमारे चार कॉमरेड्स कीर्ति (एसीएम), राजू (एसीएम), रघु और सुखराम शहीद हो गए। इन कॉमरेडों ने अत्यंत शूरता से लड़ते हुए दुश्मन के कैम्प में घुसने के दौरान कैम्प के ऊपर छिपे संतरियों की गोलीबारी में अपनी जानें गंवाईं।*

तबाह किया गया सीआईएसएफ का बैरक

*खास बात यह है कि इस हमले की खबर मिलते ही केन्द्रीय गृह मंत्रालय और ओड़िशा सरकार ने सैकड़ों की संख्या में अतिरिक्त बल भेजे। कोबरा, सीआरपीएफ, ग्रेहाउण्ड्स, एसओजी आदि बलों के साथ-साथ वायुसेना के हेलिकॉप्टरों को भी खोजबीन अभियान में लगाया। लेकिन जनता की सक्रिय मदद से पीएलजीए बलों ने इस ऑपरेशन को विफल कर दिया। ऐन चुनावों के समय किए गए इस हमले ने न सिर्फ ओड़िशा में, बल्कि पूरे देश में जनता को काफी उत्साहित किया।* ✶

# शहरी गुरिल्ला व खुफिया काम का कुशल कार्यकर्ता कॉमरेड प्रसन्न अमर रहें!

क्रांतिकारी आंदोलन के खुफिया प्रमुख कॉमरेड पटेल सुधाकर के साथ एपी एसआईबी ने कॉमरेड प्रसन्न की भी हत्या की। युवा कॉमरेड प्रसन्न ने भी इस विभाग में रहकर पार्टी और जनता की महत्वपूर्ण सेवा की। 30 वर्षीय कॉमरेड प्रसन्न का नाम वेंकटैया था। उत्तर तेलंगाना के वरंगल जिले के चेरियाल मंडल के ग्राम आइनापुरम में उनका जन्म हुआ था। बचपन से ही कॉमरेड प्रसन्न पर क्रांतिकारी संघर्षों का काफी प्रभाव रहा। हाई स्कूल में पढ़ाई करते समय ही उन्होंने रैडिकल छात्र संगठन का सक्रिय कार्यकर्ता बनकर 1996 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का फैसला लिया। मध्यम किसान परिवार में जन्मे कॉमरेड प्रसन्न ने अपना सब कुछ देश की मुक्ति के खतिर कुरबान करने का निश्चय किया। पार्टी के आदेश पर उन्होंने मेदक जिले के सिद्दिपेट में इंटरमीडिएट में दाखिला लिया था। वहां पर छात्रों को सक्रिय रूप से संगठित करना शुरू किया। उस दौरान उन पर पुलिस की नजर बढ़ी। इससे पार्टी ने उन्हें गुरिल्ला दस्ते में रहकर काम करने की हिदायत दी। उसके बाद उन्होंने दस्ते में रहते हुए ही ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रों में छात्रों को गोलबंद करने का सिलसिला जारी रखा। इस तरह वह जिले में एक जुझारू छात्र नेता के रूप में स्थापित हो गए। इस दौरान दुश्मन भी उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गया था। उनके साथ काम करने वाले दो कॉमरेडों को पकड़कर पुलिस ने मुठभेड़ के नाम से हत्या कर दी।

इस पृष्ठभूमि में पार्टी ने उनकी सुरक्षा के बारे में सोचकर वर्ष 2000 में नलगोण्डा जिले में स्थानांतरित किया। नलगोण्डा जिले में कई कस्बों और गांवों में स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों को बड़ी संख्या में गोलबंद किया। अपने सक्रिय काम की बदौलत वह राज्य स्तर के नेता बन गए। छात्र संगठन के राज्य स्तर के नेता कॉमरेड बुजंगरेड्डी के शहीद हो जाने के बाद उन्होंने यह जिम्मेदारी उठाई। बाद में एआईआरएसएफ की कार्यकारिणी में भी उनका चुनाव हुआ था।

उनकी क्षमताओं और सक्रियता को देखकर पार्टी ने उन्हें हैदराबाद शहर में आंदोलन की जिम्मेदारी दी। वहां उन्होंने भीषण शत्रु दमन के बीचोबीच छात्रों को गोलबंद करने का साहस किया। शहीद कॉमरेड नोमुला रमणारेड्डी के नेतृत्व में काम करते हुए उन्होंने शहरी आंदोलन के निर्माण में महारत हासिल किया। कॉमरेड नोमुला की शहादत के बाद कॉमरेड प्रसन्न पर दुश्मन की नजर बढ़ गई। 2003 के मध्य में उन्हें पार्टी ने हैदराबाद से हटाया।

उस समय आंध्रप्रदेश पार्टी ने खुफिया विभाग की शुरूआत करने का फैसला लिया। पहली बार इस काम के लिए विशेष रूप से किसी को चुनना था। तब राज्य कमेटी ने कॉमरेड प्रसन्न को इस काम के लिए उचित कॉमरेड मानते हुए उनके सामने यह प्रस्ताव रखा। उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया। उन्हें डीसी का दर्जा देकर इस काम में लगा दिया गया। तब तक इस काम में अलग-अलग व्यक्ति ही कार्यरत थे, लेकिन कॉमरेड प्रसन्न के प्रयासों से इसे एक राज्य स्तर के विभाग के रूप में विकसित करने में सफलता मिली। उन्होंने व्यापक व गहरे सम्बन्ध बनाकर पार्टी के लिए जरूरी बहुत सारी सूचनाएं इकट्ठी कीं। दुश्मन के नजदीक तक जाकर भी उन्होंने यह काम किया। शुरू में आंध्र एसएमसी के मार्गदर्शन में काम करने वाले कॉमरेड प्रसन्न को बाद में सीएमसी के प्रत्यक्ष निर्देशन में काम पर रखा गया। शहीद कॉमरेड्स नवीन (बीके) और मुरली (प्रसाद) की देखरेख में उनका काम चलता था। आखिर तक आंध्र राज्य के दायरे में ही उनका काम चलता रहा।

इस क्षेत्र में उनके काम की प्रगति को देखते हुए पार्टी ने 2007 की शुरूआत में उन्हें कॉमरेड पटेल सुधाकर के प्रत्यक्ष नेतृत्व में केन्द्रीय खुफिया विभाग के काम में भेजा। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी के तहत पार्टी के लिए उपयोगी काफी जानकारियां और रिपोर्टें दीं। कुल मिलाकर देखा जाए तो उन्होंने इस क्षेत्र पर अपनी छाप छोड़ दी। छात्र आंदोलन का काम हो या खुफिया काम, पार्टी ने उन्हें जो भी जिम्मेदारी दी उसे उन्होंने निष्ठापूर्वक पूरा किया। उनका क्रांतिकारी जीवन पूरा दुश्मन के साथ लुकाछुपी का खेल जैसा ही रहा। दुश्मन उनकी तस्वीरों से बड़े-बड़े पोस्टर छपवाकर उनके बारे में काफी प्रचार किया। दुश्मन की खोजी मुहिमों के बीचोबीच ही कॉमरेड प्रसन्न ने कई सावधानियां बरतते हुए काम किया। नेतृत्वकारी कॉमरेडों की सुरक्षा के प्रति भी वह काफी सजग रहा करते थे।

कॉमरेड प्रसन्न ने राजनीतिक अध्ययन पर काफी जोर दिया। आंदोलन की जरूरतों के अनुसार खुद को विकसित करने के प्रति वह सचेत हुआ करते थे। कॉमरेड प्रसन्न शुरू से सर्वहारा गुणों से लैस थे। दस्तों में काम करने के दौरान सामूहिक कामों में हमेशा शामिल होते थे। अपनी जिम्मेदारियों के तहत बड़े-बड़े शहरों में रहने के बावजूद उन्होंने खुद को कभी साम्राज्यवादी उपभोक्तावादी संस्कृति का शिकार होने नहीं दिया। कठोर अनुशासन का वह हमेशा पालन करते थे। कॉमरेड प्रसन्न काफी स्नेहिल इंसान थे। छोटे-बड़े, महिला-पुरुष, पढे-लिखे या अनपढ़ सभी से आसानी से घुलमिल जाया करते थे। साथी कॉमरेडों के दुख-तकलीफों के प्रति वह हमदर्दी रखते थे।

कम उम्र में ही पार्टी में एक विश्वसनीय कार्यकर्ता के रूप में उभरे इस युवा कॉमरेड की मृत्यु हमारी पार्टी और खासकर जन खुफिया विभाग के लिए बड़ा नुकसान है। कॉमरेड प्रसन्न के आदर्शों को आत्मसाथ कर लेंगे। उनके अधूरे मकसद को कामयाबी की मंजिल में पहुंचाने तक आराम न करने का संकल्प लेंगे। यही इस युवा साथी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ★

# भारतीय क्रांति के अग्रणी नेता और उत्पीड़ित जनता का प्यारा साथी केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड पटेल सुधाकर (विकास) और जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड वेंकटैया (प्रसन्न) को लाल-लाल सलाम!

24 मई 2008 को हमारी पार्टी और भारतीय क्रांति को एक और बड़ा व अपूरणीय नुकसान हुआ। उस दिन आंध्र के खून के प्यासे एसआईबी गुण्डों ने महाराष्ट्र के नासिक शहर से पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड पटेल सुधाकर और जिला स्तर के नेता कॉमरेड वेंकटैया का अपहरण किया। ये दोनों कॉमरेड पार्टी में खुफिया विभाग का काम संभाल रहे थे। अगले दिन उनकी लाशें आंध्र के वरंगल जिले के लव्वाला जंगलों में फेंककर हमेशा की तरह मुठभेड़ की कहानी प्रसारित की गई। उस समय दिल्ली दौरे पर गए हुए मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी ने पुलिस की इस झूठी कहानी को बिना किसी शर्मोहया के दोहरा दिया। अपने झूठ को सच साबित करने के लिए पुलिस ने दावा किया कि मुठभेड़ के स्थल से एक एके-47 रायफल और एक 9 एमएम पिस्तौल बरामद किया गया। आंध्र पुलिस ने यहां तक कि पार्टी के प्रवक्ता कॉमरेड आजाद के नाम से एक झूठा प्रेस बयान भी जारी कियाजिसमें यह कहा गया कि कॉमरेड विकास पार्टी के किसी काम से वरंगल जिले के जंगलों में गए हुए थे। बाद में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने पुलिस की इस दरिंदगी की निंदा करते हुए हत्या के विरोध में 12 जून को 'भारत बंद' का आह्वान किया। देश के सभी तबकों की जनता ने इस हत्याकाण्ड पर अपना विरोध जताया।

कॉमरेड पटेल सुधाकर

दरअसल महाराष्ट्र के नासिक शहर में 23 मई को इन दोनों कॉमरेडों को एपी एसआईबी के हत्यारे पकड़कर हवाई रास्ते उन्हें वरंगल के जंगलों में ले गए थे। रात भर उन्हें क्रूर यातनाएं देकर अगले दिन 24 मई की सुबह गोली मार दी। इन दोनों कॉमरेडों ने पार्टी की गोपनीयता की रक्षा करते हुए बोल्शेविक दृढ़ता के साथ दुश्मन की तमाम यातनाओं का सामना किया। क्रांतिकारी आंदोलन के लिए छठी इंद्रिय समझे जाने वाले खुफिया विभाग में कार्यरत इन दोनों कॉमरेडों की मृत्यु हमारे लिए बहुत बड़ा नुकसान है। आइए, इन शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें और उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय लें।

## कॉमरेड पटेल सुधाकर - पालामूर संघर्ष का प्यारा सपूत

लगभग तीन दशकों तक क्रांतिकारी आंदोलन में विभिन्न स्तरों पर अविश्रांत काम करते हुए अपने साथियों पर अमिट छाप छोड़ जाने वाले कॉमरेड पटेल सुधाकर को पार्टी कतारों और क्रांतिकारी जनता में रामन्ना, श्रीकांत, सूर्यम्, विकास आदि नामों से जाना जाता था। दक्षिण तेलंगाना के महबूबनगर जिले (जिसे पालामूर भी कहा जाता है) के कुर्तिरावुलाचेरवू गांव में 1950 के दशक के आखिर में उनका जन्म हुआ था। धनी किसान परिवार में जन्मे कॉमरेड सुधाकर बचपन से ही आदर्श विचारों से लैस थे। 1978 में आयोजित ऐतिहासिक 'जगित्याल जैत्रयात्रा' के बाद उठ खड़े हुए करीमनगर व आदिलाबाद जिलों के किसान संघर्षों का उन पर खासा प्रभाव था। इस प्रभाव से पालामूर इलाके में भी संघर्ष का शंखनाद हुआ जिसमें कॉमरेड सुधाकर कूद पड़े थे। दशकों से शासकों की लूट व उपेक्षा का साक्षी रहे पालामूर में 1980 के दशक में क्रांति के बीज बोने वाले नेताओं में कॉमरेड सुधाकर भी एक थे। हालांकि उनमें से कुछ लोग शुरू में ही पीछे हटे थे और कुछ लोगों का पतन हुआ था, पर कॉमरेड सुधाकर दृढ़ता से अपने आदर्शों और आशय के प्रति समर्पित होकर आखिरी दम तक डटे रहे।

1980 के दशक में करीमनगर-आदिलाबाद जिलों के किसान संघर्षों की प्रेरणा से पूरे आंध्रप्रदेश में छात्रों के अंदर जबर्दस्त हलचल मची हुई थी। उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में कदम रखा। क्रांतिकारी छात्र आंदोलन के मजबूत गढ़ों में उस समय गद्वाल कस्बा भी एक था। 1980 में गद्वाल की कॉलेज में स्नातक की पढ़ाई करते हुए कॉमरेड सुधाकर रैडिकल छात्र संगठन का सदस्य बन गए। हैदराबाद में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी होने के बाद उन्होंने 1983 में पेशेवर क्रांतिकारी बनने का फैसला लिया। पालामूर के क्रांतिकारी आंदोलन में शहीद कॉमरेड सुदर्शन (किरण) के साथ मिलकर उन्होंने छात्रों, नौजवानों और शहरी श्रमिक जनता में काम किया। उनके प्रयासों से गद्वाल कस्बा क्रांतिकारी आंदोलन का मजबूत गढ़ बना था जहां हर मुद्दे पर लोग आंदोलन में उतर पड़ते थे। बंद आदि कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी जबर्दस्त रहती थी।

1984 के आखिर में राज्य स्तर पर आयोजित राजनीतिक

(शेष पेज 48 में...)